RNI No. UPHIN/2011/40224
वर्ष : 16 अंक : 3

पंजीकृत सं.: एस.एस.पी./एल.डब्लू./एन.पी-341/2024-2026
हिन्दी मासिक पत्रिका
सितंबर - 2026
मूल्य: 20/- रुपये मात्र

प्रकृति मेल

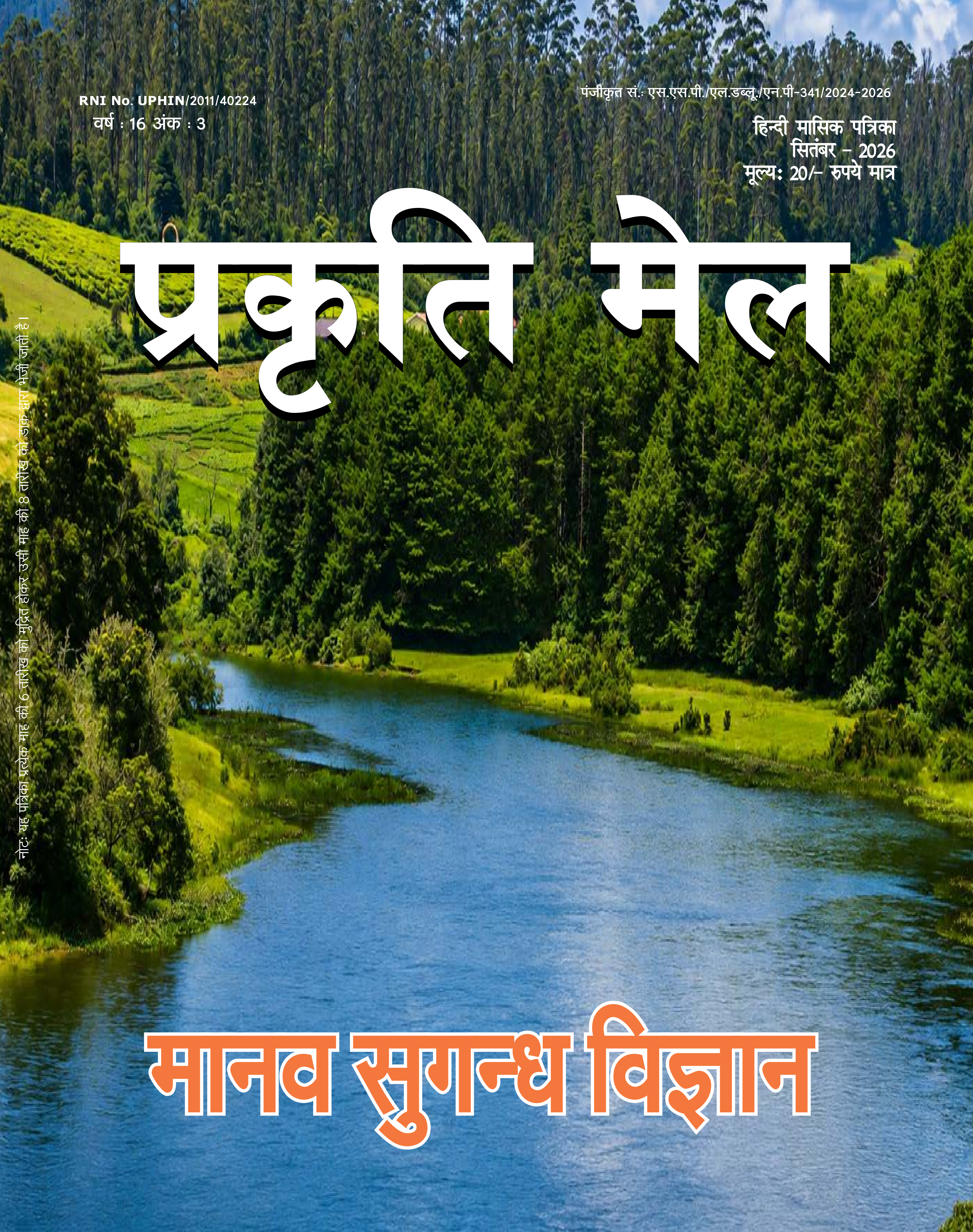

मानव सुगन्ध विज्ञान

नोट: यह पत्रिका प्रत्येक माह की 6 तारीख को मुद्रित होकर उसी माह की 8 तारीख को डाक द्वारा भेजी जाती है।

मौसम
प्रकृति में समन्वय
सत्य का स्रोत
परिवर्तन
प्रकृति आश्रम
प्रकृति के तत्व विज्ञान, जीवन के मूल रहस्य एवं जिज्ञासा पूर्ण करने की प्रकृति स्थली
'अशोक मानव'
9415041794, 9807636072
ग्राम-मड़वाना, पो0-रघुनाथपुर, निकट सैदापुर, लखनऊ।

कोमल
बिल्डिंग मैटेरियल
सत्य प्रकाश मिश्रा (राहुल मिश्रा)
बिक्रेता • बालू • मौरंग • सीमेंन्ट • गिट्टी
मछली शहर, जौनपुर
मो0 9792512188

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष:16, अंक : 3 | सितंबर - 2026

संरक्षक
डॉ. उत्तम प्रकाश मानव
संपादक
अशोक मानव
कार्यकारी संपादक
उमेश
विधि सलाहकार
नवनीत कुमार वर्मा
मुख्य संवाददाता
आशीष त्रिपाठी
वरिष्ठ संवाददाता
अरविन्द त्रिपाठी
दिल्ली संवाददाता
मनोज
पुर्वांचल हेड
श्री प्रकाश मिश्रा
संवाददाता
सूर्यमणि यादव, अनुराग, कामेश, सुनील,
गौरव पंत, अभिषेक पंत,
हेमंत पाण्डेय, प्रशांत द्विवेदी,
सुमनलता यादव, मानवेन्द्र त्रिपाठी,
अभय सिंह
ग्राफिक्स, डिजाइन एवं तकनीकि
संजय यादव
कैमरा मैन
धर्मेन्द्र त्रिपाठी

प्रबंध, विज्ञापन एवं सदस्यता

संपर्क 8423330911, 9598911575

पंजीकरण कार्यालय

सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश– 226022

प्रधान कार्यालय

18/A ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली क्रॉसिंग, फैजाबाद रोड,
लखनऊ – 226016

इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों और विचारों के लिए उनका लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा। विज्ञापनों में किये गये दावों की जाँच–पड़ताल स्वयं करें। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

नोटः इस पत्रिका के समस्त सहभागी पदाधिकारीगण पत्रिका के प्रारम्भ के अंक से ही बिना किसी मासिक सहयोग धनराशि या वृत्तिका के स्वेक्षा से बिना किसी दबाव के समय दान के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी अशोक मानव द्वारा सूर्या प्रिटिंग प्रेस एण्ड पब्लिकेशन, खसरा संख्या 872, ग्राम मड़वाना, जनपद–लखनऊ, उ. प्र. पिन-226104 से मुद्रित कराकर सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उ. प्र. से प्रकाशित किया।

संपादक – अशोक मानव

www.prakritimail.com
info@prakritimail.com
editor.prakritimail@gmail.com

अंदर के पन्नों पर

P 8 जरूरत दूरदर्शी बनने की नहीं पारदर्शी होने की

P 10 प्रकृति में प्रवृत्ति ही सर्वश्रेष्ठ

P 11 धवल विज्ञान (योग मुद्रा, तापमान भूमि)

P 16 ध्वनि - स्व में विलीन करती रासायनिक तरंग

P 18 भारतीय ज्ञान परंपराः आदिवासियों का औषधीय ज्ञान

P 22 जब कोहरे ने चुनौती दी, विज्ञान ने 'दृष्टि' रची

P 26 स्वतंत्रता मतलब लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा का संकल्प

P 36 शुद्धता का अंत, मिलावट का स्वर्णकाल

P 40 मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैयाः भारत के महान इंजीनियर और राष्ट्रनिर्माता

P 48 जो जान पाये जो नही जान पाये

P 32 प्रकृति विज्ञान

मानव सुगन्ध विज्ञान

अशोक मानव

संपादक की कलम से

बन्धन

ब – बल, न – न्याय, ध – धरा, न – नष्ट

प्रकृति का हर बंधन बीजत्व में होता है जो इच्छा बनकर उत्पन्न होता है और इच्छापूर्ति के बाद स्वभाव बनकर गतिमान होता है।

बन्धन - ब – बल, न – न्याय, ध – धरा, न – नष्ट। अर्थात् बल से न्याय की धरा को नष्ट करना। बन्धन मानव द्वारा परिभाषित नैतिक आदर्शवाद की वह डोर है, जो स्वतंत्रता को बगैर परिभाषा के नष्ट कर देती है। प्रकृति का मानव एक मात्र प्राणी है जिसने जीवन जीने की हर परिभाषा अपने सुविधानुसार की है। जिसमें प्रकृति और विज्ञान का कोई ध्यान नहीं रखा गया है, जबकि प्रकृति की हर अवस्था का निर्माण विज्ञान से होता है। हम मानव भी प्रकृति के ही एक प्राणी हैं जिसका निर्माण प्रकृति के उसी विज्ञान से हुआ है। यदि अपनी व्यवहारिकता को नजरन्दाज न करें तो आज इन्ही परिभाषाओं से अन्याय ही न्याय नजर आ रहा है। वह इसलिए क्योंकि इन्हीं परिभाषाओं को सच मानकर इसी भाव और विचार को उत्पन्न कर रहे हैं जिसके कारण इस गुण का रसायन बन जा रहा है, जो विज्ञान बनकर मानव का स्वभाव बन जा रहा है और अपनी परिभाषा अच्छी और न्यायप्रिय लग रही है। पर वास्तविकता यही है कि बन्धन हमारी स्वतंत्रता का बाधक है।

मानव स्वयं नैतिक आदर्शवाद की परिभाषा से अपने जीवन में अनेकों बन्धनों का निर्माण कर डाला है, जो इसकी स्वतंत्रता को बाधित करता है। प्रकृति में मानव के अतिरिक्त अन्य जीव किसी बन्धन को नहीं स्वीकार करते, जिसके कारण स्वतंत्र जीवन जी रहे हैं। मानव का बन्धन एक भय से उत्पन्न हुआ है, जिसमें अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए सहारे के रूप में अनेकों बन्धन बना डाले, जो इसकी स्वतंत्रता को ही बन्धन में कर दिया। बन्धन - परिवार, समाज, सभ्यता, संस्कृति, जाति, राज्य, धर्म आदि-आदि को उत्पन्न करता है, जिसमें व्यक्ति उस बन्धन के अनुरूप कार्य करता है, जो स्वयं में भिन्न-भिन्न परिभाषाओं में परिभाषित हो, जो मानव अपनी सुविधानुसार किया है। जिसमें प्रकृति का वैज्ञानिक न्याय नहीं है। बंधन स्वईच्छा का बल है जिसकी परिभाषा की तुलनात्मकता से किया गया कार्य प्रकृति की वैज्ञानिक न्याय प्रणाली की धरा को नष्ट कर रहा है। इन बंधनों में मानव स्वयं विशेष पीड़ा की अनुभूति कर रहा है, पर इसकी जड़ इसकी मान्यता से इतनी मजबूत हो गयी है, जिसे उखाड़ना कठिन है। मानव अपने आदर्शवाद में खुद परतंत्री प्राणी हो गया है। देखने में लगता है कि हम अन्य जीवों की अपेक्षा एक सभ्य प्राणी हैं पर यह परिभाषा मानव की निजी स्वार्थ लिप्तता से की गयी है। जिसमें आज वह सिर्फ दर्द की अनुभूति कर रहा है, जिसकी आड़ में दनत विद्या का अन्यायी ईधन न्यायी बनकर पुनः मानव को प्राप्त हो रहा है, पर इससे प्रकृति की न्याय प्रणाली की धरा नष्ट होती जा रही है।

मानव द्वारा बनायी बंधन विधा एक सुक्ष्म अवस्था में परिवर्तित हो जाती है, जो गन्ध कण बनकर एक दूसरे के बंधन को मजबूत बनाने का कार्य करती है, यह रिश्ता चाहे भाषा नियम कानून का हो या सजीव स्वरूप का हो, जिसे जितना अधिक महत्व दिया जाता है या उसके बारे में जितना अधिक सोचा जाता है, उसका उतना ही अधिक गंध रसायन तीव्र हो जाता है, जो विषय के अनुरूप उसके अंदर अपने गुण का विज्ञान रसायन बनाने लगता है, जिससे विषय या व्यक्ति की विधा का रसायन बनने लगता है, जो स्वयं की धरा के अनुरूप नहीं होता है जिसके कारण उसका निर्माण कमजोर अवस्था का होता है, जिसका शोषण प्रकृति में आसानी से दूसरी विधा करने लगती है, जिससे अप्राकृतिक न्याय का रसायन बनने लगता है, जो न्याय की भूमि नष्ट करने का प्रयास करता है और अन्याय स्थापित करता है। जब इस विधा की पूर्ति जिसका निर्माण बंधन की महत्ता से होता है, नहीं हो पाती है, तो उस व्यक्ति में पीड़ा उत्पन्न होती है जिससे वेदना का रसायन पैदा होता है, जो वेदना को बढ़ाने का कार्य करता है जिससे व्यक्ति अप्राकृतिक कार्य करने लगता है। जिससे अन्याय का जन्म होता है। इससे बचने के लिए व्यक्ति को मानसिक रूप से सिर्फ अपने आनन्द और कर्म को महत्तव दे, किसी अन्य विधा को महत्तव देकर दूसरे को राज करने का मौका न दे और शारीरिक रूप से अपने बंधनो को निभाते रहे, तो इससे किसी मान्यता का अपमान भी नहीं होगा और अपना कर्म पूरा हो पायेगा। जिससे बंधन रूपी रसायन का बनना बंद हो जायेगा और व्यक्ति न्याय और अन्याय की पहचान कर खुद न्याय करेगा और न्याय का सहयोगी हो जायेगा।

पाठकनामा

नव वर्ष में प्रवेश पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हिन्दी मासिक पत्रिका प्रकृति मेल जुलाई 2026 के अंक के साथ ही अपने जीवन के 15 बसंत पूरे कर 16 वें वर्ष में प्रवेश कर गयी। यह गर्व व गौरव की बात है। प्रकृति मेल पत्रिका के 16 वें वर्ष में प्रवेश पर सम्पूर्ण सम्पादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं जिनके अथक प्रयासों से मनोरंजक , ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक सामग्री हर अंक में पढ़ने को मिल रहीं हैं।

उत्तम क्वालिटी के कागज पर इतनी सारी रचनात्मक और साहित्यिक सामग्री और वह भी चित्रमय सामग्री मात्र बीस रूपए में हर माह घर बैठे उपलब्ध कराना असंभव कार्य हैं लेकिन प्रकृति मेल मासिक पत्रिका का सम्पादन मण्डल जो पाठकों की साहित्यिक सेवा इतने कम मूल्यों में कर रहा हैं वह वंदनीय व सराहनीय है।

वर्तमान समय में पत्र पत्रिकाएं पाठकों की पहुंच से काफी दूर हो गई है चूंकि वे काफी मंहगी है और आम आदमी इतनी मंहगी पत्र पत्रिकाएं खरीद नहीं सकता। इसके बावजूद भी हर पत्र पत्रिकाओं में विज्ञापनों के ढेर देखने को मिलते है जिन्हें देखकर लगता हैं कि पाठक साहित्यिक सामग्री, कहानी, कविता व आलेख नहीं पढ़ रहा है अपितु विज्ञापन पढ़ रहा हैं। आज का युग सेवा का नहीं अपितु व्यवसायिक हो गया है। विज्ञापनों की दौड़ व आपा-धापी के बावजूद प्रकृति मेल मासिक पत्रिका का सम्पादन मण्डल पाठकों को इतनी कम राशि में वह भी बिना विज्ञापनों के जो साहित्य सेवा कर रहा हैं उसके लिए वह साधुवाद का पात्र हैं।

प्रकृति मेल पत्रिका अपने रचनात्मक मिशन में दिन दुगुनी और रात चौगुनी इसी प्रकार से साहित्य सेवा करता रहे। यहीं मेरी ओर से सम्पादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं हैं। इसी आशा और विश्वास के साथ।

सुनील कुमार माथुर (जोधपुर)

नीचे दिए हुए इमेल पर आप पाठकनामा भेज सकते हैं।

सभी पाठकगण से अनुरोध है कि आप अपने विचार अपने लेख हमें निम्न पते पर भेज सकते हैं–

A/18 ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली रेलवे क्रॉसिंग, रविन्द्र पल्ली फैजाबाद रोड, लखनऊ-226016

आप हमें अपने विचार निम्न ई–मेल पर भेज सकते हैं -

email: editor.prakritimail@gmail.com, Contact: 9807636072, 7376495194

“

6000 परमाणु हथियारों वाला देश दूध के टैंकर में ईंधन छिपा रहा है। जंग ने क्या हाल कर दिया रूस की ताकत का।

अंशुमान तिवारी

“

मैं इस अंहकार को करीब से देख चुका हूं। ऐसा आचरण सिर्फ पतन लाता है।

चौधरी जयंत सिंह

“

महिलाएं स्वभाव से पुरुषों की तुलना में अधिक संवेदनशील, दयालु और दूरदर्शी होती हैं। इसलिए वे देश की सबसे बड़ी संपत्ति है।

राहुल गांधी

“

हम सभी टेस्ट क्रिकेट को जीवित व आगे बढ़ते देखना चाहते हैं। ऐसे में हमें वैभव जैसे खिलाड़ियो की जरूरत है।

राहुल द्रविड़

“

बुजुर्ग होना उन अनुभवों का सम्मान है, जिन्हें हासिल करने में पूरी जिंदगी लग जाती है।

चिप कॉनली

“

दोनों देशों के बीच जो बातें मेल नहीं खातीं, उन्हें सम्मानपूर्वक बातचीत के जरिये सुलझाया जाना चाहिए।

योगी पुष्प राज पुरुष

तेरा किया . . .
जो बोएगा
वही पाएगा

जरूरत दूरदर्शी बनने की नहीं पारदर्शी होने की

कामेश

"यदि सृष्टि के सारे विषय और पदार्थ पारदर्शी हों तो कहीं पर भी अंधेरा नहीं रहेगा।"

बात थोड़ी टेढ़ी है पर सच है क्योंकि हम सभी जानते है कि रात और दिन क्यों और कैसे होता है। पृथ्वी अपनी धुरी का एक चक्कर 24 घंटे में पूरा करती है और जैसे-जैसे पृथ्वी घूमती है तो पृथ्वी का जो भाग सूर्य के सामने होता है वहां प्रकाश अर्थात् दिन होता है और जो भाग पीछे होता है वहां अंधेरा अर्थात् रात होती है। तो यदि पृथ्वी सीसे की तरह पारदर्शी हो तो प्रकाश आशानी से पार हो सकता है। और दोनों तरफ 24 घंटे दिन ही रहेगा इसी तरह यदि प्रकृति का हर पदार्थ पारदर्शी हो तो छाया कहीं नही होगी और अंधेरा कहीं नहीं होगा। अंधेरा कहीं होता ही नहीं यह तो पदार्थो की छाया मात्र है। जहां जितना ठोस पदार्थ होता है उसके पीछे उतनी ही घनी छाया होती है। अर्थात अंधेरा हमेशा पदार्थ के पीछे ही होता है। अंधेरा अपने आधार पर निर्भर नहीं होता है इसको एक ठोस आधार की जरूरत होती है यदि समस्त पदार्थ प्रकाश को अपने पार आसानी से पहुंचने दे तो अंधेरा कहीं नहीं होगा।

ये तो बात अंधेरो की थी परन्तु इसमें जो मूल तथ्य छिपा है कि हम देखते है कि हमारे भीतर जो हमारी प्रवृत्ति होती है अंधेरे से घनी भूत और अधिकतर नकारात्मक होती हैं। हम निरन्तर राक्षसी प्रवृत्ति के घेरे में जी रहें हैं। आज का मानव समाज राक्षसी प्रवृत्तियों से घिर चुका है उसे हर तरफ अंधेरा ही दिखाई दे रहा है। और ये अंधेरा कहीं और से नही बल्की हमारी सोच से पैदा हो रहा है। जिस तरह ब्रहमाण्ड में एक सूर्य है। जो कि पूरी सृष्टी को प्रकाशित करता है उसी तरह हमारे भीतर भी एक प्रकाश पुंज है जो कि हमें प्रकाशित करता है पर हम अपने भीतर के प्रकाश को बाहर नहीं निकलने देते। हम उस पर लालच अंहकार बेइमानी चोरी आदि अकृतियां बना कर पर्दा डाल बैठे हैं , ताकि दुनिया हमारी सच्चाई को जान न सके और हम दुनिया के सामने झूठे शान में जी सकें। अर्थात् हम अपने भीतर के प्रकाश को यदि बाहर तक पहुँचने देते है तो निश्चित ही हमारे भीतर के ऐसे सारे घिनौने भाव मिट जाएंगे। हम समाज से अपनी असलियत छिपाना चाहते है इसके लिए वो खुद को ठोस बनाने के प्रयास में निरन्तर लगे हैं, हमारा एक मात्र उद्देश्य ही बन गया है कि हम भीतर से क्या है ये दुनिया जान न सके और ये किसी एक व्यक्ति की नहीं बल्की समूचे मानव समाज की स्थिति है।

फोटो : एआई

हम देखते है कि हमारे भीतर जो हमारी प्रवृत्ति होती है अंधेरे से घनी भूत और अधिकतर नकारात्मक होती हैं। हम निरन्तर राक्षसी प्रवृत्ति के घेरे में जी रहें हैं। आज मानव समाज राक्षसी प्रवृत्तियों से घिर चुका है उसे हर तरफ अंधेरा ही दिखाई दे रहा है। और ये अंधेरा कहीं और से नही बल्की हमारी सोच से पैदा हो रहा है। जिस तरह ब्रह्मांड में एक सूर्य है। जो की पूरी सृष्टी को प्रकाशित करता है उसी तरह हमारे भीतर भी एक प्रकाश पुंज है जो की हमें प्रकाशित करता है पर हम अपने भीतर के प्रकाश को बाहर नहीं निकलने देते।

हर कोई अपने आप को मात्र छिपाने में लगा है। यहां तक कि जो जिसे अपना सबकुछ मानता है उससे भी बहुत कुछ छिपा कर रखता है। अपने कारनामें अपनी सोच अपने इरादे अपने भाव सबकुछ पर्दें में रखना है। और हकीकत है इन्सान सिर्फ अपने भीतर से भाव को छिपाना बन्द कर दे तो समाज से अपराध खत्म हो जाएंगे। जिस दिन सबको यह पता हो जाय कि हम कुछ भी सोंचेगे व करेंगे छिप नहीं पाएगा तो कोई भी इंशान गलत कार्य करने की सोच ही नहीं पाएगा। आज अपराध सिर्फ मानव ही कर रहा है प्रकृति के अन्य सारे प्राणी अपना जीवन निरपराध रूप से जी रहे हैं। क्योंकि उन्हें न ही कुछ छिपाने की सोच है न ही खुद के बचाव के बारे में सोचना है।

मानव अपनी सोच से हर वो गलत कार्य करता है जिस पर उसे भरोसा होता है कि हम यह कार्य करके बच जाएंगे कोई जान नहीं पाएगा। यदि अपराधी को पता हो कि अपराध करने पर मैं छिप नहीं सकता तो वह अपराध करने की हिम्मत नहीं कर पाएगा। और छिपाने की क्रिया मानव का खुरापाती दिमाक करता है। वह छिपने की हजार तरकीब खोज लेता है और उसके इसी छिपाने में राक्षसी प्रवृत्तियों को जगह मिलती है और समाज में बढ़ावा मिलता है।

हम गलतियां करके बच जाते है तो समझते है कि बहुत बड़ा काम कर गए बहुत अपने आप पर गर्व महसूस करते हैं जब कि हकीकत तो ये है कि हम नहीं बच गए बल्की हमें राक्षसों ने वह काम करने के लिये प्रेरित किया और फिर आगे भी ऐसे काम हम करें इसके लिए हमारे ऊपर पर्दा डाल दिया। ये कार्य जो अपराधिक है ये मानवीय प्रवृत्ति का कार्य नहीं है यह राक्षसी प्रवृत्ति का काम है और वो राक्षस हमारे भीतर ऐसी सोच ऐसी धारणा पैदा करते है जो कि हमें कुछ भी करने के लिए उत्सुक करता है अर्थात् ये कार्य तो मानव का होता है परन्तु इसका संचालन राक्षस करने लगते है और वो अपने गुण का विस्तार करने में हमें अपना मोहरा बना लेते है, और हर गलत काम करने में हमारी मदद करते हैं।

हमारे अन्दर साहस नहीं है कि हम अपने पर्दे खुद उठा सकें। हम बचपन से इसी राक्षसी समाज की कठपुतली बन कर नाचना शुरू कर देते है और अपने मूल अस्तित्व को भूल बैठते हैं। हमें प्राकृतिक रूप से कुछ भी सोचने और जानने की जरूरत नहीं होती मगर हम सब कुछ जानने की कोशिश करते हैं। पर कभी भी हम खुद को जानने की तनिक भी इच्छा नहीं करते। हम अपने भीतर इस तरह के पर्दे लगा रखे है कि खुद भी अपने भीतर झांक कर देखना चाहें तो नहीं देख सकते। एक बात बड़ी अजीब सी है कि हम हमेशा अपनी अच्छाई को लोगों के सामने कहते बताते फिरते हैं अपनी अच्छाई लोगों में फैला देना चाहते है और अपनी गलती अपने झूठ अपने भीतर छिपा लेते हैं। इस तरह से हमारी अच्छाई धीरे-धीरे बाहर होती जाती है और झूठ भीतर सुरक्षित होता जाता है इस तरह एक दिन हम भीतर से सिर्फ झूठे रह जाते हैं हमारे भीतर झूठ का स्तित्व रह जाता है और सच्चाई कहीं खो जाती है और यही भीतर का झूठ हमारे जीवन के लिए नासूर बन जाता है।

हमारे अन्दर साहस नहीं है कि हम अपने पर्दे खुद उठा सकें। हम बचपन से इसी राक्षसी समाज की कठपुतली बन कर नाचना शुरू कर देते है और अपने मूल अस्तित्व को भूल बैठते हैं। हमें प्राकृतिक रूप से कुछ भी सोचने और जानने की जरूरत नहीं होती मगर हम सब कुछ जानने की कोशिश करते हैं। पर कभी भी हम खुद को जानने की तनिक भी इच्छा नहीं करते। हम अपने भीतर इस तरह के पर्दे लगा रखे है कि खुद भी अपने भीतर झांक कर देखना चाहें तो नहीं देख सकते।

अभी तक बचपन से हमें हमारे बुजुर्ग एक ही शिक्षा देते रहे हैं कि इन्सान को दूरदर्शी होना चाहिए आगे की सोच रखनी चाहिए। वे यह चाहते है कि हम इतने दूरदर्शी बने कि हमारी आने वाली अनेक पीढ़ी हमारी बनाई हुई सम्पत्ति का भोग करे हमारे बनाए मार्ग पर चले परन्तु यह नहीं कभी किसी के दिमाक में आया कि जब हमें शिक्षा दी जा रही है इसके अगले ही क्षण क्या घटना घटने वाली है क्या उसे देख रहे है? अर्थात् जब हमें अपने ही अगले पल की खबर नहीं जब हमारी नजरें अगले पल की स्थितियों को नहीं देख सकती कि क्या होने वाला है तो भला वर्षों की सोच और दूरदर्शिता रखने से क्या फायदा? हम जिस सन्तान और जिन पीढ़ियों की खुशियों के लिए अपने ईमान बेचते है अपने कर्मों को दूषित करते है क्या हमें पता है कि वो सन्ताने कैसी होगी क्या आज तक कोई ऐसा भी दूरदर्शी पैदा हुआ जो कल क्या होगा जान सका हो।

भविष्य हमेशा प्रकृति की गोद में सुरक्षित होता है उसे न कोई नजर देख सकती है न ही कोई सोच उस तक पहुंच सकती है। क्योंकि जो भी परिस्थिति आज है यह निश्चित ही कल नहीं रहेगी अतः आज की स्थिति के अनुसार जब हम कल की परिस्थिति पर विचार करेंगे तो भला वह सच कैसे हो सकेगी।

आज की स्थिति को देख कर ही हमारे अपने लोग हमें सिखाते है कि दूरदर्शी बनों पर उन्हें ये नही पता कि दूरदर्शी इंशान कभी-कभी अपने सामने से गड्ढे में गिर भी जाता है। आसमान पर नज़र रखने वाले धरती की गहरी खांई में समा जाते हैं। जरूरत दूरदर्शी होने की नहीं बल्की पारदर्शी बनो कि तुम्हे अपने भीतर कुछ भी छिपाने की जगह ना मिले। भीतर का तुम्हारा प्रकाश बाह्य जगत भी रोशन कर सकें।

प्रकृति में प्रवृत्ति ही सर्वश्रेष्ठ

आज प्रकृति का सबसे विकलांग जीव मानव ही साबित हो रहा है। क्योंकि इसने स्व प्रवृत्ति को सिर्फ एक पर्दा बनाया। अपनी प्रवृत्ति पर सिर्फ विराम लगाया। जो दूसरे को अच्छा लगे वही ये करने का प्रयास करता आया। इतनी परिभाषाओं से भरा अपना जीवन बना लिया कि सिर्फ सही और गलत में ही अपने जीवन को जीता आया।

गौरव पंत

प्रकृति में मानव को छोड़कर हर जीव की प्रवृत्ति ही सर्वश्रेष्ठ है। हर जीव अपनी प्रवृत्ति का जीवन जी रहा है। सिर्फ मानव ही प्रकृति में ऐसा जीव है जो सदैव अपना मार्ग खोजता रहा। इसने कभी अपनी प्रवृत्ति को जाना ही नहीं। प्रकृति में सबसे ज्ञानी जीव का दर्जा स्वयं को दिया। फिर भी हमेशा दूसरे पर आश्रित रहा। इस जीव का उद्देश्य सिर्फ प्राकृतिक शोषण का रहा। अपनी शिक्षा, अपनी वैज्ञानिकता को इस जीव ने प्रकृति से सदैव बड़ा समझा। प्रवृत्ति प्रकृति का वह गुण है जो हर जीव पदार्थ के अंदर अलग अलग होता हैं। किसी परिभाषा का कोई मोहताज नहीं होता है। सिर्फ मानव ही वह जीव है जो सिर्फ दूसरों के अनुसार चला और हर किसी को अपने अनुसार चलाने का प्रयास करता रहा। आज प्रकृति का सबसे विकलांग जीव मानव ही साबित हो रहा है। क्यों कि इसने स्व प्रवृत्ति को सिर्फ एक पर्दा बनाया। अपनी प्रवृत्ति पर सिर्फ विराम लगाया। जो दूसरे को अच्छा लगे वही ये करने का प्रयास करता आया। इतनी परिभाषाओं से भरा अपना जीवन बना लिया कि सिर्फ सही और गलत में ही अपने जीवन को जीता आया। उसमें भी इस जीव ने प्रकृति विरोधी हर कार्य को इतनी सहजता से बनाया कि जैसे यही प्रकृति का सृजनकर्ता है। स्व प्रवृत्ति को त्याग स्व योजन से मानव ने अपनी वास्तविकता का अंत कर दिया।

प्रवृत्ति ही प्रकृति का आनंद है।
सिर्फ मानव ही ना जाना,
अपने अनुसार बनाने में सब मिटा डाला।
चलने चलाने की राह में स्व वजूद मिटा डाला।
ना है कोई, ना था कोई जो चलने की राह बताएगा।
वो है विज्ञान जो किसी को नजर ना आएगा
ना कुछ सही ना कुछ गलत।
ना वो चला कभी किसी के अनुसार,
ना कभी किसी को चलाएगा।
प्रवृत्ति का आनंद लेकर ही हर कोई पूर्ण हो जाएगा।
तभी हर कोई अशोक ही अशोक हो जाएगा।

धवल विज्ञान
(योग मुद्रा, तापमान भूमि)

अभिषेक पंत

प्रकृति में सदैव मात्रा उस दबाव की पर्यायक होती है, जिस मात्रा पर गति शून्यता भी ध्वनित वेग की चालक शीर्षता बनाती है, जहां से ब्रह्मांड का सर्वाहारी स्वाभाविक अग्नि द्वार जलवायु वरीयता का स्तूपीय गुण बनाता है। अर्थात जब चर्चा से परे मूल मुद्रा की मात्र विनम्रता में अंतरिक्ष रस की ध्यानी इकाइयों ने सदैव प्रांतीय छोर पर आकाशगंगा की शीर्षता का अन्न धारणा भंडारण आश्रित वंश से ओत प्रोत करना आरंभ किया, तब निश्चित निश्चिंत्यता को शारीरिक व्यय की योग मुद्रा बनाने हेतु, पदार्थ भूमि की तापमान शीर्षता, से प्रकृति ने प्रथम तत्व अग्नि को रासायनिक स्पर्श की जलवायु बनाने हेतु धवल विज्ञान की उत्पत्ति की।

सनातन स्मृति की मूलभूत निश्चिंतता का जीवन सरोकार वर्णन बनाकर, पत्र पात्र वंदना का स्वर्ण मुखी चाप स्तरीय कामाग्नि धन रस बनाया गया था, वर्णन वेदना तन्मयी स्थूलता का जीवन परिचय बनाकर, कृषि धनाढ्यता के नाम पर अलगाववादी स्वर व्यंजन बनाया गया था। अपितु जीव प्राणी सेवा सत्कार के आगे सनातन चपलता से परे, कभी भी वर्णन मुद्रा की धवलता के मात्रा कलाप को ज्ञात नहीं कर पाया - कि -किस रस की भूमिका में कौन सा रसायन अपने तापमान की निश्चित सूर्यता से किस योग की मुद्रा अंकिता को नवल गंधीय आकार दे रहा ? - क्योंकि प्रकृति में सदैव मात्रा उस दबाव की पर्यायक होती है, जिस मात्रा पर गति शून्यता भी ध्वनित वेग की चालक शीर्षता बनाती है, जहां से ब्रह्मांड का सर्वाहारी स्वाभाविक अग्नि द्वार जलवायु वरीयता का स्तूपिय गुण बनाता है। अर्थात जब चर्चा से परे मूल मुद्रा की मात्र विनम्रता में अंतरिक्ष रस की ध्यानी इकाइयों ने सदैव प्रांतीय छोर पर आकाशगंगा की शीर्षता का अन्न धारणा भंडारण आश्रित वंश से ओत प्रोत करना आरंभ किया , तब निश्चित निश्चिंत्यता को शारीरिक व्यय की योग मुद्रा बनाने हेतु, पदार्थ भूमि की तापमान शीर्षता, से प्रकृति ने प्रथम तत्व अग्नि को रासायनिक स्पर्श की जलवायु बनाने हेतु धवल विज्ञान की उत्पत्ति की। अर्थात -

धनाढ्यता शीर्षतम समागम की वनस्पति लयता में उत्पन्न प्रथम शारीरिक मुद्रा की गंधीय तापमान वृत्ति में सक्रिय होने वाली आंतरिक तापमान लयता की यत्र तत्र सर्वत्र ओजस्वी गर्भ गंतव्य सीन आयु आकार स्मृति प्रकार अस्तित्व विचार कृति को धवल विज्ञान कहते हैं। अर्थात संपन्न सुचालक कुचालक वरीयता की तन तत्व समृद्धि लीन प्रथम आंतरिक कृषि सत की पदार्थ योगिनी राशि को बललीन शून्यता का रासायनिक मानक बनाने वाली ध्वनित वन लयता की पदार्थ अंतरिक्ष वर्णमाला को धवल विज्ञान कहते हैं। अर्थात प्राप्तांक पूर्णांक धमनी ऊर्जा मूलांक की रस ग्रंथि में धड़कने वाली तापमान सूर्यता की स्वर भाषा उत्पत्ति विलयी स्व समागम मृदा अंकन प्रकृति परावर्तनीय गति आपूर्ति ज्यामिति को धवल विज्ञान कहते हैं।

धवल विज्ञान के दो अंश होते हैं - अग्नि एवं जलवायु। जिसमें अग्नि ही योग मुद्रा बनाती है एवं जलवायु तापमान भूमि का निर्माण करती है।

योग मुद्रा (अग्नि) - यशस्वी काल की कम्पननता में मूल रूद्र चपलता की ध्वनि भंडारण गति से धार्मिक प्राणपति अन्नदाता स्थापित किया गया, जिसमें स्वप्न कालीन आयु विशिष्टता का जनमानस योग भी वैधानिक ध्वनि शाला से जोड़ा गया। अपितु स्थापना उपरांत ही जलवायु संवर्धन गैसीय मणि ने अपने ही प्रकाश का चित्त छिद्रित करना आरंभ कर दिया। क्योंकि क्षुधा की नीति तो सदैव ही ज्यामितिक गणना से परे मात्रा कलाप की अन्न भूमि को विधित ऊष्मा में क्षिद्रित करने की थी , जिसकी मायावी घड़ी सदैव ऊष्मा की प्रती को नवोदित अन्नप्राशन में लिप्त करना चाहती थी। इसलिए ही प्रतिप्राशन उम्मीदवारिता में प्रकृति ने शारीरिक ज्यामितिक प्रकाश नाड़ी की स्पष्टता से अंतरिक्ष प्राण वायु प्रति का सीमा द्वार ही योग मुद्रा को बना दिया, जिसका मूल तत्व बना " अग्नि "। अर्थात अन्न न्यायिक गर्भ गंतव्य की ईंधन प्रांतीय योगिनी को अग्नि कहते हैं। जो धवल विज्ञान की प्राशन संकृति को मुद्रांकित अवस्थाओं में इच्छा लीन करती है। अर्थात यश एवं कृषि से परे स्व शून्य मति की उष्मा प्रांतीय द्रव्यअणुता की ओजस्वी आंशिक प्रवृत्ति की प्रथम गामिनी चरित्र मृदा अन्य प्रकृति

को योग मुद्रा कहते हैं। अर्थात वनस्पति जड़ता की पहली मानवीय गाथा का क्षुधा अंश योग मुद्रा से आरंभ होता है। जिसमें ध्वनित आकाश सूर्यता की प्रथम नमी ही जीवन आचरण रुद्रता को उष्मित कायाकल्प में प्रकाशित ऊर्जा से परावर्तित करती है। अर्थात यात्री मात्रा अनुष्ठान से परे स्वमात्रा गठन की योग मुद्रा के प्रथम व्यावहारिक तापमान की मति मात्रा शून्यता को अग्नि कहते हैं। जिसमें सूर्यता की निश्चिंत्यता ही ज्यामितिक उर्वरकता को प्रकृतिलीन करती है जहां से अन्न रसधारणा का जीवन चेतना अग्निअंश ही प्रकृति सूर्यता की स्वाभाविक उष्मा को सीमांकित ध्वनि वरीयता का चालक वर्ण बनाता है, जो एक प्रकार का भौगोलिक क्षुधा प्राशन कृति चक्र होता है।

तापमान भूमि (जलवायु)

संचय मुखी संप्रदाय बनाकर जीवन तुला संगठन का जीवनी संकलन मलीन किया गया था। रूद्रवांशिक ऊष्मा घनिष्ठता बनाकर तापमान असंतुलन का रस व्याकुल पारा एकत्रित किया गया था। प्रकृति ने धवल विज्ञान की उष्मा में निहित इच्छा जलवायु का तापमान भूमि कारक बनाकर मूल मुद्रा ध्वनि को प्राण वायु सम्मुख कर दिया। परिणाम स्वरुप मूल अग्नि कोष का मेघ आचरण ही क्षुधा वांशिक धेय्य का तरंगीय द्वार बन गया। अर्थात तत्व आभा परत की मानक मुद्रा के नभ प्रांतीय संपर्क की मूल प्रतिलीन विशिष्टता ने इच्छा जलवायु का ईंधन भाव ही जीवनी उल्लेख का धवल विज्ञान बना दिया। अर्थात परत भूमि उत्कर्ष की क्षुधालीन पदार्थ कार्यकारिणी क्षमता को तापमान भूमि कहते हैं। अर्थात वर्तनी मुद्रा आलेख का पर्यायक ही जीवन स्याही का नभ प्रति पर्दा बन गया। जिसमें अग्नि अंश का जीव पर्दा ही स्तूपिय वेग का इच्छा गति कारक बनाने लगा। अर्थात कृति शून्य परत धुनों की मृदा आपातकालीन रुद्रता के जीवन विषय को तापमान भूमि कहते हैं अर्थात धवल विज्ञान की कारक इंधनावली ही नभ प्रति भूमि की राधिका विलीनतम छाया प्रति बन गई, प्रमाण की क्षमता में परिणाम का रहस्य ही गर्भ भाव का क्षितिज उत्कर्ष बन गया। जिसमें लावणयता की रागनी ही तत्व स्यूपिय वंशिकता की जन्म प्रति बन गई। जहां से प्रकृति ने मूल ईंधन अंश को तापमान भूमि वेग से पकाना आरंभ कर दिया। अर्थात ज्यामिति कारकों की प्रवर्तनी मुद्रा के जीवन धन को जलवायु कहते हैं। अर्थात मानक मात्रा पल्लव ही क्षितिज ऊर्जा जीवनी का स्वयंभू धन उर्वरक बीज रस बन गया। अर्थात गुण गामिनी काया ही विधान विद्युता की परीक्षा शून्य उर्वरकता को पारालीन करती रही। अब जिस मानक प्रति का उद्धार वांशिक जगत को उपचार क्रम लग रहा, उसी उपचार क्रम में जलवायु वेग की तापमान भूमि मूल इच्छाओं के बीज को उभारती जा रही। अर्थात धनाढ्य तापमान कृषि की वजूद नुमा बीज राशि के प्रथम लंकरीय ऊष्मा प्रघटन को धवल विज्ञान कहते हैं। अर्थात परिचय पूर्ति की उष्मा छाया ही विराम ध्वनि की प्रकाश मुद्रा होती है। अर्थात जन्मभूमि में मृत्यु पकवान को पकाने वाली आत्मा क्षुधा ही तापमान भूमि का निर्माण करती है अर्थात आंशिक रुद्रता की वांशिक परिणीति ही ब्रह्मांडीय राधिका की गति को शुण्यांवन प्रकृति में प्रवृत्तिलीन करती है। जहां से आचार विचार रोपण का बीज घनत्व ही जन्म स्थली मनोनीती को धवल विज्ञान का सूर्य बनाता है।

धवल विज्ञान की अभिकर रुचि के अंश ही वंश प्रतापी मुद्रा को पकाते हैं। जिसमें धवल विज्ञान की गणित चार चरणों में पूर्ण होती है - गति का धन ; मन का वेग , तन की पूर्ति, आत्मा का विचार।

1 - गति का धन

अर्थात ध्वनि प्रकाश की गंधीय धनुरता ऊष्मा प्रकृति के प्रवृत्ति सूर्य से मूल तरंग का गति रस रसायन छन्नी में बनाती है, जो जब मूलध्वनि टंकारी क्रिया करता है, तब प्रथम इच्छाधन ही ईंधन सूर्य की नभ प्रति से प्रकृति रश्मि स्तूप को गति का धन बना देता है। अर्थात धवल विज्ञान की गणितीय पारी का आरंभ ऊष्मा प्रवर्तन से होता है, जिसमें गति का धन ही जीवन चालक मुद्राओं का खगोलीय अस्तित्व बन जाता है।

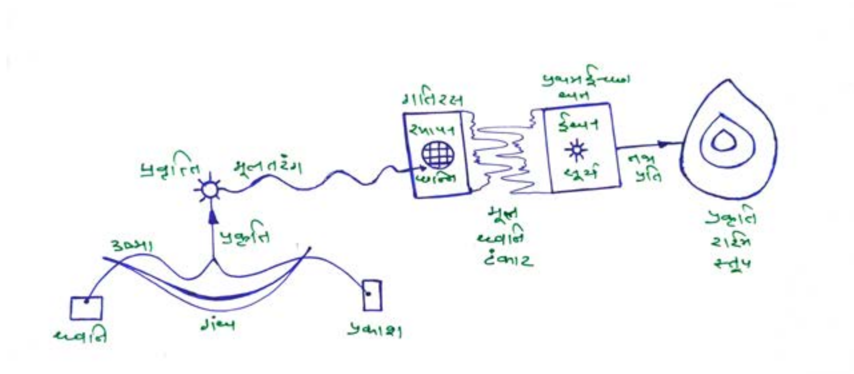

2 - मन का वेग -

अर्थात स्मृति चुंबक, मस्तिष्क चुंबक की

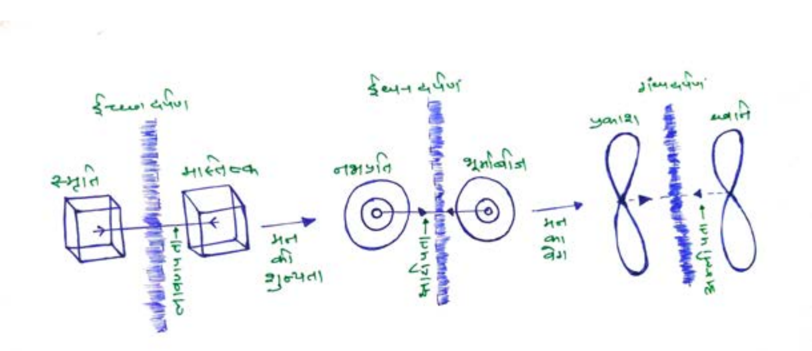

दर्पण विधा में इच्छा लावणयता का आदान प्रदान करता है। जिसमें मन की शून्यता सक्रीय होकर, नभ प्रति को भूमि बीज ईंधन दर्पण की प्रवर्तनीयता से जोड़ती है, जो क्षारीय भाव बनाकर, मन के वेग की प्रकाश ध्वनि मार्ग मिलान का गंधीय अम्ल बनाते हुए, मूल गंध दर्पण को मन का वेग बना देता है। अर्थात पल्लवितता सुहासिनी मुद्रा काया की छवि प्रांतीय जीवनतता ही दर्पण विधान धवलता को गणितीय प्रति का प्रकृति प्रतिबिम्ब बनाती है। अर्थात ऊर्जा कालीन रस संप्रदाय तो वनस्पति परस्पर लूट को तंत्र सिद्ध करने के लिए बनाए गए थे, अपितु प्रकृति ने धमनी धनुर्ता के दर्पण से मन के वेग को ही धवल विज्ञान का ऊर्जा चक्र बना दिया, जिसके परिणाम में वही ईंधन अमलीय शीर्षता को स्पर्श कर पाया, जिसमें भूमि बीज की मस्तिष्क इच्छा का शून्य प्रकृति अस्तित्व भाव विद्यमान था।

3 - तन की पूर्ति -

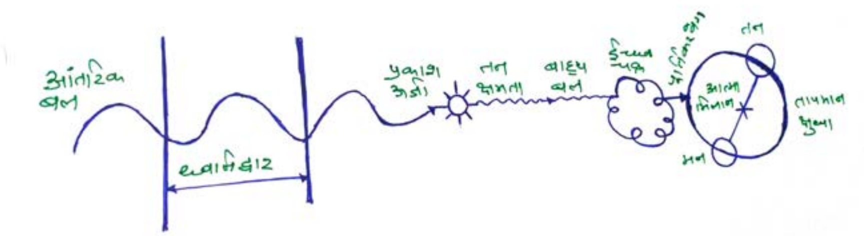

अर्थात आंतरिक बल के ध्वनि द्वार से निर्मित प्रकाश ऊर्जा की तन क्षमता ही बाह्य बल को इच्छा चक्र से जोड़कर पूर्ति कर वेग में तापमान क्षुधा की तन मन विद्युता को आत्मा मिलान के रूप में तन की पूर्ति का विषय बनाती है, जिसमें धवल विज्ञान की विषय राधिका ही जीवन आपूर्ति की लक्ष्य विधान प्रकृति को आकृती बल का तन पूर्ति कर भाव बनाती है अर्थात धवल विज्ञान की क्षमता का जीव निर्जीव भाव ही आत्मसंगत विषयों का गणितीय प्रकार होता है।

4 - आत्मा का विचार -

अर्थात स्वाभाविक पूर्णिमा बिंदु, प्रकृति तुला बिंदु, पदार्थ रस बिंदु, तत्व इच्छा बिंदु,

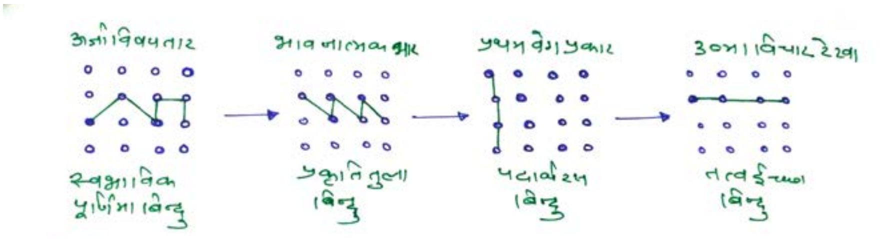

मिलकर तार के भार के प्रकार की रेखा को आत्माभाव वेग ऊर्जा का विषय विचार बनाते हैं, जिसमें जब धवल आपूर्ति की क्षमता ही ध्वनि ऊष्मा तरंग से टकराती है, टकराहट में उत्पन्न मूल बिंदु रस की इकाई ही आत्मा का विचार बन जाती है अर्थात धवल विज्ञान की उद्यमी गणित का प्रथम सार ही बिंदु ऊष्मा खगोलीयता का जीवन निबंधन प्रकृतिलीन करता है अर्थात गुणवत्ता शाश्वत सामर्थ्य की नवीन तापमान चेतना ही जलवायु बिंदुओं की रागनी का मानक होती है जो आत्मा का विचार बनकर मूल प्रकृति प्रति को राधिका विषय का मृदा पकवान बना देती है, जहां से उत्पन्न ऊष्मा ही ऊर्जा स्वशन निधि का वैचारिक पात्र बन जाती है।

अर्थात गति के धन में मन का वेग बनाकर, तन की पूर्ति को आत्मा का विचार बनाने वाले ध्वनि तरंगीय पदार्थ मिलान को धवल विज्ञान कहते हैं। जिसमे आपूर्ति विशिष्टता की शुण्यांवन रागिनी ही जीव भाव की प्रकृति ऊष्मा को ध्वनित पारे का प्रकाश वर्ष सहभागी बनाती है। अर्थात धवल विज्ञान की चेतना ही शयन उत्कर्ष की शून्यानवन सक्रियता कार्यवाही है।

dig - 5

अर्थात ध्वनि ऊर्जा प्रकृति की गंध ऊर्जा प्रवृत्ति जब प्रकाश ऊर्जा धन को तत्व पदार्थ तापमान संलयक बनाती है, तब इच्छा दर्पण की जलवायु प्राणवायु ईंधन रसायन तरंग प्रवर्तनीय क्रिया ही रस तरंग रश्मि चक्र से तापमान भूमि अंतर्गत योग मुद्रा की राधिका सूर्यता से नभ प्रति बीज प्रति मिलान के रूप में धवल विज्ञान को बनाती है। अर्थात प्रकृति प्रथमा इच्छा शक्ति की पदार्थ रुचि से निर्मित सूर्य ध्वनि की आंतरिक तापमान गति के बिंदु बीज छाया प्रति विलीनतम नवधरा राधिका इंधनांकन को धवल विज्ञान कहते हैं। धवल विज्ञान की सूर्यता का मानक ही जीव परिचय का जीवन प्राणवायु योग बनता

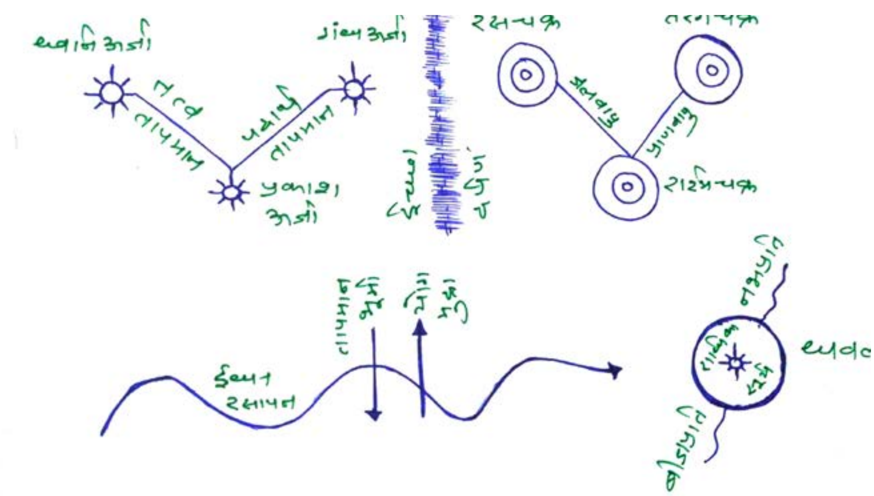

गया, जिसमें मुद्रा विलीनतम यौगिक सूर्यता ही आत्मा उत्कर्ष की गामिनी घड़ी नाड़ी चालक अवस्था बनती गई। अब जिस वेग की पूर्ति में तन का विचार ही गणितीय सूर्य को बना रहा, उसी सूर्य से पदार्थ मिलान का विघटन संलयन दोनों मिटते जा रहा। ब्रह्मांडीय ज्यमित का पारा उत्कर्ष भी स्वयंभू तापमान पर पहुंच गया है, अब समस्त अवस्थाएं अशून्य हो चुकी है, प्रकृति द्वारा पदार्थ पारा तत्व मिलान विस्फोटन से तरंगीय योग आवृत्तियांकन उभारा जा रहा।

धवल विज्ञान की विशेषता का प्रथम प्रकार ही क्षिद्र विलय की उपलब्धि का मानक है , जिसे स्लिट फ्यूज़न एकपलिशमेंट यानि छिद्र विलय की उपलब्धि कहा जाता है जो इस प्रकार है -

स्लिट फ़्यूज़न की उपलब्धि (क्षिद्र विलय की उपलब्धि)

किसी चीज़ को अपनाना, लत लगने की प्रक्रिया का एक चरण है।

इसका संबंध मटीरियल स्टैटिक्स (पदार्थ की स्थिति) के सिग्नल से है; यह दिखाता है कि एनर्जी गेम तापमान के चालन (conduction) का विश्लेषण करता है, जिससे वैचारिक विरासत के उत्पादन की क्षमता बनती है।

जब कोई दृश्य (scene) एक तत्व (element) बन जाता है, तो परिणाम निर्जीव चीज़ों के अस्तित्व की केमिकल टेक्नोलॉजी होती है।

इसलिए, प्रकृति मिट्टी को स्वीकार करके उसकी लत लगा लेती है, जिससे जीवों का विकास होता है।

यानी, विकास स्वीकार करने का परिणाम है और किसी चीज़ को हासिल करना जीवित रहने की लत है, जो यह दिखाता है कि...

जीव, जीवित रहने की चेतना को स्वीकार करने वाले निर्जीव तत्व हैं, जिनमें चालन (conduction) की ज़रूरत का विकास होता है। यानी, जीवित तापमान को स्वीकार करने में निर्जीव चालन का विकास ही 'स्लिट फ़्यूज़न की उपलब्धि' कहलाती है।

प्रकृति की यह घटना तत्व की तापमान चेतना है, जो चालन तभी पैदा करती है जब पदार्थ खुद चेतना बन जाता है।

अर्थात धवल विज्ञान की विशेषता का मूल कारक ही क्षिद्र विलय की उपलब्धि है, जिसमें पदार्थ रस की दृश्यांकनी ही तत्व चालक अवस्थाओं की मूल अग्नि स्वीकृति बन जाती है।

इच्छा की परम प्रतिध्वनि ईंधन का पहला और आखिरी संचय है, जिसके परिणामस्वरूप रासायनिक उद्भव का निश्चित सुगंध चक्र बनता है। जहां से धवल विज्ञान की प्रकृति प्रेरित ऊष्मा ही अस्तित्व गुंजन की रागिनी को ठोस रसायन विलय में परिवर्तित करती है , जिसमे जो मूल मुख्य सवाल जवाब बनते है वह इस प्रकार है -

सवाल -

परमाणु का शुद्ध अस्तित्व क्या है?

जवाब -

असलियत कार्यसूची पर निर्भर करती है। शुद्धता व्यावहारिकता से जुड़ती है। अस्तित्व आकार पर निर्भर करता है। परमाणु उर्वरता से जुड़ता है। यानी, परमाणु एक शाश्वत अनुकूलता की पहली क्षमता से बना है। इसमें दो अवस्थाएँ होती हैं:

फ़्रीक्वेंसी (आवृत्ति)

वैलेंसी (संयोजकता)

फ़्रीक्वेंसी वस्तुनिष्ठता के रसायन को संश्लेषित करती है, जो बदले में तरंगों और ध्वनि के मिलन को स्थापित करती है। यानी जब फ़्रीक्वेंसी पहले क्रम की केमिस्ट्री से मेल खाती है, तो परमाणु अपने ही प्रकार का विकास शुरू करता है। वैलेंसी में वज़न और घनत्व शामिल होते हैं; जब ये चित्रण के बीज को अपनाते हैं, तो चेन स्टॉर्म (श्रृंखला-तूफान) की क्षमता पैदा होती है। यानी वैलेंसी रासायनिक संरचना का पहले क्रम का सुगंध-रूप है, जो परमाणु के रूप में भारी गुरुत्वाकर्षण की ऊर्जा को सक्रिय करता है। इस प्रकार, परमाणु का शुद्ध अस्तित्व पहली रासायनिक तरंग के रूप में वैलेंसी को सुरक्षित रखने की फ़्रीक्वेंसी की क्षमता है।

सवाल-

वह सबसे बड़ी इच्छा क्या है जिसने जानबूझकर पदार्थ-भौतिकी की अपनी ठोस केमिस्ट्री बनाई?

जवाब-

बदलाव की दर आंतरिक ध्वनि-व्याकरण की क्षमता है। विकास की सतर्कता गुरुत्वाकर्षण केमिस्ट्री की संरचना है। पहली इच्छा - मिलन का विकास। पहली रचनात्मकता - विचारों का अपहरण। तो स्वाभाविक रूप से, पदार्थ-मिलन की ठोस केमिस्ट्री वैकल्पिक व्याकरण का अंतर है। इसलिए, जब किसी को अपनी उर्वरता की अस्तित्वगत शक्ति बनना होता है, तो विचार अपने आप ही वांछित सुगंध-गुरुत्वाकर्षण की कठोरता को इकट्ठा करने लगते हैं। इसलिए, अब तक की सबसे बड़ी इच्छा समय का विस्तार है, ताकि लंबवत रूप से गुरुत्वाकर्षण ने हर घड़ी की आयामी वैधता शुरू की, जिससे एक बिंदु पर परमाणुओं का विस्फोट हुआ।

प्रकृति के जनक अज्ञात इच्छाओं की 'मालिक-विहीन परमाणु-साझाकरण घड़ी' बना रहे हैं, ताकि ठोस केमिस्ट्री की पहली आकाशगंगा को खत्म किया जा सके।

अर्थात धवल विज्ञान की अनुभूति का मूल कारक ही प्रकृति स्पर्श की इकाइयों का सवाल जवाब रहित मात्रा परिणाम गुरुत्व है। जिसमे मूल मुद्रा धारणा का अस्तित्व ठोस क्रियाकाल ही जीवन पदार्थ विलयन को भौतिकी अणु में परिवर्तित करता है जहां से धवल विज्ञानं का मुद्रा योग ही अनिवार्य तापमान भूमि को बीजांकृत करता है।

The purity of inherent voids in their raw state creates the first origin of gravity balance in the form of soil temperature , which in result , produces the fittest front of chemical Armory in the form of environmental desires.

बारिश की पहली बूंद और मिट्टी की खुशबू का रहस्य

संजय
लखनऊ

जब आसमान से गिरती बूंदें धरती की अपनी सुगंध जगा देती हैं

गर्मियों की तपती दोपहर के बाद जब आसमान पर बादल घिरते हैं और बारिश की पहली बूंदें सूखी धरती पर गिरती हैं, तो वातावरण में एक अनोखी सोंधी खुशबू फैल जाती है। यह खुशबू इतनी परिचित और मन को भाने वाली होती है कि बारिश का इंतजार कर रहे व्यक्ति के चेहरे पर अनायास मुस्कान आ जाती है। भारत में इसे अक्सर 'मिट्टी की सोंधी खुशबू' कहा जाता है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि आखिर सूखी मिट्टी पर बारिश की पहली बूंद पड़ते ही यह खुशबू पैदा क्यों होती है?

दरअसल, इस सुगंध के पीछे प्रकृति की एक बेहद दिलचस्प वैज्ञानिक प्रक्रिया काम करती है। लंबे समय तक बारिश न होने पर मिट्टी की सतह सूख जाती है। इस दौरान मिट्टी में रहने वाले अनेक सूक्ष्मजीव सक्रिय रहते हैं और उनमें से कुछ ऐसे रासायनिक पदार्थ बनाते हैं, जो सूखी मिट्टी में जमा होते रहते हैं। इनमें जियोस्मिन (Geosmin) नामक यौगिक इस विशिष्ट मिट्टी जैसी गंध के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है। मनुष्य की सूंघने की क्षमता जियोस्मिन के प्रति काफी संवेदनशील होती है, इसलिए इसकी बहुत कम मात्रा भी हमें बारिश के बाद महसूस हो सकती है।

लेकिन केवल जियोस्मिन ही इस कहानी का पूरा हिस्सा नहीं है। पौधे भी इस प्राकृतिक सुगंध में अपना योगदान देते हैं। लंबे समय तक सूखे मौसम में कुछ पौधों से निकलने वाले तेल मिट्टी और चट्टानों की सतह पर जमा हो सकते हैं। जब बारिश होती है, तो पानी इन पदार्थों को फिर से वातावरण में पहुंचाने में मदद करता है। यही कारण है कि अलग-अलग स्थानों की बारिश के बाद आने वाली खुशबू में थोड़ा अंतर भी महसूस किया जा सकता है।

सबसे रोचक भूमिका बारिश की बूंदों की होती है। जब पानी की बूंद सूखी और छिद्रयुक्त मिट्टी की सतह से टकराती है, तो उसके भीतर मौजूद हवा छोटे-छोटे बुलबुलों के रूप में फंस सकती है। ये बुलबुले ऊपर आते हुए टूटते हैं और मिट्टी में मौजूद सूक्ष्म कणों तथा सुगंधित यौगिकों को हवा में फैला देते हैं। वैज्ञानिकों ने उच्च गति वाले कैमरों की मदद से यह भी देखा है कि कुछ परिस्थितियों में बारिश की बूंदें मिट्टी की सतह से बहुत सूक्ष्म एरोसोल कण हवा में उछाल सकती हैं। हमारी नाक तक पहुंचने वाले इन्हीं सूक्ष्म कणों में मिट्टी की वह परिचित खुशबू मौजूद होती है।

इस प्राकृतिक सुगंध के लिए वैज्ञानिक शब्द 'पेट्रिकोर (Petrichor)' भी इस्तेमाल करते हैं। यह शब्द 1960 के दशक में ऑस्ट्रेलियाई शोधकर्ताओं द्वारा लोकप्रिय किया गया था। इसका संबंध विशेष रूप से उस विशिष्ट गंध से है जो सूखे मौसम के बाद बारिश आने पर मिट्टी और वातावरण से महसूस होती है। हालांकि आम बोलचाल में हम इसे केवल 'बारिश की खुशबू' या 'सोंधी मिट्टी की महक' कहते हैं।

सूखी घास और पत्तियों पर पानी की चमक, मिट्टी में लौटती नमी और दूर तक फैले बादल मिलकर प्रकृति का ऐसा दृश्य बनाते हैं, जिसे मनुष्य सदियों से कविता, संगीत और साहित्य में महसूस करता आया है।

ध्वनि - स्व में विलीन करती रासायनिक तरंग

फोटो : एआई

प्रकृति की विज्ञान धारा प्रकृति की वह एहसास विज्ञान प्रणाली है जिसे प्रकृति में प्रकृति प्राकृतिक सिद्धान्तीय ताप दाब अवस्थाओं के अन्तर्गत परिपक्व करती हुई ब्रह्माण्ड में स्थापित गंध रसायनों को ठोस पदार्थ तरल पदार्थ गैसीय पदार्थ में निर्माण करती हुई प्रकृति एहसास को स्व भूगोल, जिस का निर्माण जीव अपने गंधीय रसायन के अनुसार करते हैं स्वसक्षमता की वह वैज्ञानिक अभेद्य स्तूप प्रणाली कहती है जिसका भेदन कभी भी कोई असुरी कण या विपरीत गुण के कण नहीं कर सकते हैं।

सुमनलता

प्रकृति की विज्ञान धारा प्रकृति की वह एहसास विज्ञान प्रणाली है जिससे प्रकृति में प्राकृतिक सिद्धान्तीय ताप दाब अवस्थाओं के अन्तर्गत परिपक्व करती हुई ब्रह्माण्ड में स्थापित गंध रसायनों को ठोस पदार्थ, तरल पदार्थ ,गैसीय पदार्थ में निर्माण करती हुई प्रकृति एहसास को स्व भूगोल ,जिस का निर्माण जीव अपने गंधीय रसायन के अनुसार करते हैं, स्व सक्षमता की वह वैज्ञानिक अभेद्य स्कूप प्रणाली कहती है जिसका भेदन कभी भी कोई असुरी कण या विपरीत गुण के कण नहीं कर सकते हैं। अर्थात, प्रकृति कभी विकलांग निर्माण नहीं करती है और न ही प्रकृति किसी से कोई भी चीज छीनती है और ना ही, प्रकृति किसी भी प्रकार के प्रकाशीय मध्यस्त भूमि वाहनो का निर्माण करती है जो कर्म को सुधारने के लिए सही गलत धर्म अधर्म पाप पुण्य के रेखांकन के अनुरूप न्यायालय का निर्माण करते हुए और अन्याय को बढ़ावा देते हैं। प्रकृति ऐसे किसी भी प्रकार के ध्वनि विज्ञान का निर्माण नहीं करती है यदि ऐसी किसी भी प्रकार की प्रक्रिया की आवश्यकता होती तो प्रकृति वह अन्य जीवों अन्य प्राण वाहनो में भी स्थापित करती जो कि सिी अन्य भूमि में नहीं है, अतिरिक्त मानव जाति के जिस ने अपने कर्मों के भय का वह यान बना लिया है जहां हर दिवस नई नई कलायें स्वविकास हेतु नहीं अपितु स्वयं को सुरक्षित एवं संरक्षित करने की स्वार्थी योजना होती है। मूर्ख यह अहंकारी तानाशाह मानवजाति प्रकृति को उखाड़कर नोचकर प्रकृति का चीरहरण करके स्व का श्रृंगार करते हैं और उसे विकास प्रणाली एवं बुद्धि का वैज्ञानिक विकास कहते हैं। परन्तु यह मानव जाति कभी प्रकृत के वास्तविक विज्ञान को जान ही नहीं पाये, क्योंकि मानवजाति में स्वयं को प्रकृति से प्रकाश से ध्वनि से सर्वोपरि समझकर स्वयं को बुद्धिजीवी कहते हुए जो आज वर्तमान प्राकृतिक कर्म विज्ञान भवन में मानव जाति अपनी ही डाली को अपने ही हाथों काट रहा है और अपने अन्त के गन्ध रसायन विज्ञान ब्लैक होल के करीब जा रहा है जहां से मानव जाति की पुनः वापसी असम्भव है। तात्पर्य यह है कि प्रकृति स्वएहसास को प्रत्येक प्राकृतिक जीव की वह रसायनिक गन्धीय कुंजी कहती है जो जीव को स्वकाल बनाकर महाकाल बनाती है। और महाकाल की अवस्था विचारो से नहीं स्वार्थ से नहीं, भक्ति सेवा से नहीं, मनोकामनाओं से नहीं, धर्म-अधर्म से नहीं महाकाल की आवस्था तो इन समस्त भौतिकी मायावी कल्पनाओं से जनमें संसाधनों से परे हैं इनके महाकाल कोई भगवान नहीं है न ही बाहुबली अवतारी ईश्वरी शक्ति हैं। महाकाल तो एहसास हैं विज्ञान हैं ध्वनि की वह शून्य अवस्था हैं जहां से प्रकाश और ध्वनि निर्वात पारा का निर्माण करते हुए ब्रह्माण्ड में तापमान की ताप-दाब की रसायनिक भक्ति से संघारी भक्षण करते हुए ब्रह्माण्ड को प्रदूषणों का भक्षण एहसास के तापमान से करते हुए प्रत्येक क्षण गतिमान हो रहे सिद्धान्तीय घड़ी में निर्माण भी करते हैं। महाकाल की ध्वनि गुंजन एहसासीय अवस्था प्रकृति के प्रत्येक भूमि में जिसे खोजना नहीं कोई आविष्कारी क्रिया करके यह प्रमाणित

नहीं करना है कि ळव्क्(भगवान) ईश्वर इस कण से बने हैं यह तो मूर्खता का परिणाम है, उदाहरण है जो ळव्क् को भगवान को ईश्वर को एस्कपेरीमेंट और प्रकृति के ही खनन शोषण से बने उपकरणों के माध्यम से प्रकाश की खोज करना ध्वनि खोज करना जो एक कण ब्रह्माण्ड के प्रत्येक कण में है। महाकाल की वह एहसासीय अवस्था किसी कण में इलेक्ट्रॉन के रूप में होगी तो किसी कण में प्रोटॉन के रूप में होगी, तो किसी कण में न्यूट्रॉन के रूप में होगी, तो किसी कण में संघार के स्वरूप में होगी, तो किसी कण में निर्माण के स्वरूप में होगी क्योंकि महाकार ध्वनि की तापमान की वह सिद्धान्तीय अवस्था में जिन्हें प्राप्त नहीं किया जा सकता है केवल एहसास किया जा सकता है स्वएहसासी बनकर। स्वएहसासी जीव की वह विचार शून्य अवस्था है जो जीव को एकमार्गीय प्रकृति आत्मिक कर्मवाहक बनाती है जब जीव मानसिकता से मुक्त होकर केवल शारीरिक कार्य करते हैं शरीर से कर्म नहीं, अपितु रसायनों का गन्धीय कर्म करते है तो जीव के भीतर स्वकाल की वह रसायनिक इच्छाशक्ति स्थापित हो जाती है जो कभी भी दर्द को वेदना नहीं तकलीफ नहीं कहती है अपितु दर्द को रसायनिक मिलान की गंधीय भक्षणी प्रक्रिया कहती है दर्द को दर्दहीन बना देती है सिद्धान्त को ताप दाब प्रक्रिया को प्रकृति द्वारा प्रताड़ित करने की कला नहीं यह विकलांग बनाकर छीन लिया नहीं कहती है, बल्कि सिद्धान्त को कर्म की ध्वनि रसायनिक प्रकाश क्रिया अंकित करती है सिद्धान्त को प्रकृति की मूल अवस्था कहते हैं। और यह अवस्था तभी सम्भव है जब जीव स्वयं को एहसास करने की आत्मिक क्रिया को विकसित करते हुए जीवन को अनिश्चित काल की यात्रा में विलीन कर दे, तब जीवन में किसी भी प्रकार की पीड़ा, वेदना, दुःख का स्थान नहीं रह जाता है। क्योंकि यह वेदनात्मक, पीड़ात्मक अवस्थायें तभी बनती हैं जब हम स्वयं को विकलांग समझकर प्रकृति की सिद्धान्तीय अवस्थाओं को सही गलत से देखते हुए अपने स्वार्थ के अनुसार आकलन करते हैं जबकि प्रकृति सभी के लिए एक समान न्याय करती है, चाहे वह फूल हो, चाहे वह पत्ती हो या फिर कोई जीव प्रकृति ने महाकाल एहसास की सिद्धान्तीय अवस्था ब्रह्माण्ड के प्रत्येक कण के लिए बनाई है। जीवन के प्रत्येक अवस्था को एहसास करना है जीवन सरल होकर जीवन को स्वकाल में विलीन करते हुए अशोक गन्ध कर्म को अंकित करते हुए स्वएहसासीय महाकाल धरा को स्थापित करना स्वयं की भूमि के साथ न्याय करना है। जो वास्तविक कर्म न्याय है।

एक आवाज़ है जो मुझे अपने करीब बुलाती है एक रोशनी है जो मुझे खुद में खो जाने को कहती है एक अहसास है जो मुझे मेरे रूह के कर्म से मुलाकात करने को कहती है एक फ़लक है जो मुझे कुदरत के छत में आने का रास्ता मेरे एहसास से दिखाती है एक निगाहों का साफ करम दिल चादर है जो मुझे कुदरत के हकीकत से रूबरू होने के लिए कहती है जो कहती है कि-

तू है तेरा करम है
जो तुझे तुझ में ही समा देगा
तुझे किसी चौखट से करम पूरे करने की जरूरत नहीं है
तू खुद को एहसास कर लेगा
तेरे करम का रास्ता वहीं से तुझे कुदरत
के अनोखे सफ़र में जोड़कर
तुझे आवाज, ध्वनि, साउण्ड का वा
मुरीद वा कायल बना देगा कि
तेरी जुबान नहीं तेरा एहसास
कहेगा कि -
हाँ यही तो है वो जिन्दगी जो
कुदरत ने बनायी थी
कहाँ दर-बदर भटक रही थी
तेरी जिन्दगी तो तुझ में ही समाई थी
ना, वो जिन्दगी नहीं थी जिसे
असरफियों से इकट्ठा करनी थी
कश्मकश रिश्तों का महल बनाकर
खुद की खुशी की कुर्बानी
अपनी ही आरजू की मैय्यत
दूसरों को ताउम्र खुश करने में गुज़ार दी
ना जिन्दगी मिली न जिन्दगानी मिली
मिली तो बस रूसवाई थी।
न ये जिन्दगी नहीं थी
जिन्दगी तो तुझमें ही समाई है
जब एक ने कहा जब एक राह पर चलने
वाली कुदरत ने कहा कि
एक रास्ते का राही बनकर
आवाज को रोशनी को सुर को
एहसास को एहसास कर
जिन्दगी के पन्ने खुद-ब-खुद
तेरे एहसास करम स्याही से लिख उठेंगे।

भारतीय ज्ञान परंपराः आदिवासियों का औषधीय ज्ञान

गौरीशंकर वैश्य विनम्र
लखनऊ

भारत की ज्ञान परंपरा केवल वेद, उपनिषद और शास्त्रों तक सीमित नहीं है। इस विशाल ज्ञान-भंडार का एक अत्यंत महत्वपूर्ण किंतु प्रायः उपेक्षित अंग है, आदिवासी समुदायों का पारंपरिक औषधीय ज्ञान। भारत में लगभग 700 से अधिक जनजातीय समुदाय निवास करते हैं, जो देश की कुल जनसंख्या का लगभग 8.6 प्रतिशत हैं। ये समुदाय सदियों से वनों, पहाड़ों और दुर्गम क्षेत्रों में रहते हुए प्रकृति के साथ गहन सामंजस्य में जीवन-यापन करते आए हैं। इसी सह-अस्तित्व से उन्होंने वनस्पतियों, जड़ी-बूटियों, खनिजों और पशु-उत्पादों के औषधीय गुणों का ऐसा गहन अनुभवजन्य ज्ञान अर्जित किया है, जो आधुनिक विज्ञान के लिए भी शोध का विषय बना हुआ है। यह ज्ञान मौखिक परंपरा, वैद्यों (गुनी, भगत, ओझा) के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा है, किंतु आधुनिकीकरण, वनों की कटाई और युवा पीढ़ी की उदासीनता के कारण यह अमूल्य धरोहर विलुप्ति के कगार पर है।

फोटो : एआई

पंडित खुशीलाल शर्मा आयुर्वेद कालेज, भोपाल की सह प्राध्यापक और प्रोजेक्ट को- आर्डिनेटर डॉ. अंजली जैन के अनुसार जिन पौधों का मोनोग्राफ तैयार किया गया है, उनमें तीन का चूहों पर प्रायोगिक अध्ययन किया है। इनमें गोंदकतीरा या कुल्लू (स्टर्कुलिया यूरेन्स) में घाव भरने की क्षमता एलोपैथी मल्हम पोवीडोन आयोडीन से बेहतर है। वन बरमसिया या दंडोतफला (ट्राइडेक्स प्रोकम्बेन्स) में बालों में वृद्धि की क्षमता है। चिपकी (जैथियम स्ट्रूमेरियम) में मूत्र विरेचन गुण है, जो मूत्र संक्रमण (यूरीन इन्फेक्शन) और गुर्दे की बीमारी में उपयोगी है।

आदिवासियों के औषधीय ज्ञान पर विज्ञान की सहमति

अब केन्द्रीय जनजातीय कार्य मंत्रालय द्वारा कराए गए शोध से उनके ज्ञान पर विज्ञान की मुहर लग गई है। भोपाल के पंडित खुशीलाल शर्मा शासकीय आयुर्वेद कालेज के चार वर्ष से अधिक समय तक चले शोध में पता चला है कि आदिवासी 400 से अधिक ऐसे औषधीय पौधों का उपयोग उपचार में कर रहे हैं, जिनका उल्लेख आयुर्वेद की फार्माकोपिया में भी है। शोध की बड़ी उपलब्धि यह है कि आदिवासियों के ज्ञान से 37 ऐसे पौधे मिले हैं, जो डायबिटीज, घाव भरने, बाल झड़ने, आर्थराइटिस. चर्मरोग सहित कई गंभीर रोगों में लाभकारी सिद्ध हुए हैं। इनका उपयोग लकवा, हृदय की बीमारियाँ, डायबिटीज, पीलिया, पेट की बीमारियाँ, मलेरिया, टायफायड, त्वचा संबंधी रोग, सर्पदंश, लू लगना, मानसिक रोग, दाँत दर्द, रक्त और मुँह के कैंसर के उपचार में आदिवासी वैद्य कर रहे हैं।

भोपाल के चार आदिवासी बहुल जिलों डिंडोरी, मंडला, अनूपपुर और शहडोल में यह शोध का कार्य किया गया है। इनमें अधिकतर गोंड और बैगा जनजाति के वैद्य हैं। आदिवासियों के पारंपरिक औषधीय ज्ञान पर यह सबसे बड़ा शोध है। इन 37 में से 27 पौधों का मोनोग्राफ भी तैयार कर लिया

गया है।

इसमें पौधे की संरचना, विभिन्न भाषाओ में प्रचलित नाम, पहचान, सूक्ष्मदर्शी लक्षण, रासायनिक घटक, भौतिक और रासायनिक मानकों को समाहित किया गया है।

औषधीय पौधों पर प्रायोगिक अध्ययन

पंडित खुशीलाल शर्मा आयुर्वेद कालेज, भोपाल की सह प्राध्यापक और प्रोजेक्ट को-आर्डिनेटर डॉ. अंजली जैन के अनुसार जिन पौधों का मोनोग्राफ तैयार किया गया है, उनमें तीन का चूहों पर प्रायोगिक अध्ययन किया है। इनमें गोंदकतीरा या कुल्लू (स्टर्कुलिया यूरेन्स) में घाव भरने की क्षमता एलोपैथी मल्हम पोवीडोन आयोडीन से बेहतर है। वन बरमसिया या दंडोतफला (ट्राइडेक्स प्रोकम्बेन्स) में बालों में वृद्धि की क्षमता है। चिपकी (जैथियम स्टूमेरियम) में मूत्र विरेचन गुण है, जो मूत्र संक्रमण (यूरीन इन्फेक्शन) और गुर्दे की बीमारी में उपयोगी है। वहीं, राजपिहरी / संजीवनी, लड़ियाँ या जारूल, दंडोतपला, दहिमन और मीठी पत्ती मिलाकर पाँच का अलग-अलग 10 से 15 रोगियों पर पायलट क्लिनिकल अध्ययन किया गया, जिसके बहुत अच्छे परिणाम मिले हैं।

आदिवासी औषधीय ज्ञान की विशेषताएँ

आदिवासी चिकित्सा पद्धति समग्रतावादी दृष्टिकोण पर आधारित है।आदिवासी कई रोगों का उपचार जड़ी - बूटियों से करते हैं। यह चिकित्सा पद्धति केवल रोग के लक्षणों का उपचार नहीं करती, बल्कि व्यक्ति, प्रकृति और आध्यात्मिकता के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

स्थानीयता आधारित ज्ञान

प्रत्येक जनजाति अपने भौगोलिक परिवेश में उपलब्ध वनस्पतियों के अनुसार अपनी चिकित्सा पद्धति विकसित करती है।

अनुभवजन्य परीक्षण

फोटो : एआई

यह ज्ञान पीढ़ियों के प्रत्यक्षानुभव और परीक्षण-त्रुटि (trial and error) पद्धति से परिष्कृत हुआ है।

मौखिक हस्तांतरण

लिखित अभिलेखों के अभाव में यह ज्ञान गीतों, कथाओं और गुरु-शिष्य परंपरा से संरक्षित रहा है।

समग्र उपचार पद्धति

शारीरिक व्याधि के साथ मानसिक और आध्यात्मिक पक्षों पर भी ध्यान दिया जाता है, जिसमें अनुष्ठान और मंत्रोच्चार भी सम्मिलित होते हैं।

प्रमुख आदिवासी क्षेत्र, समुदाय और उनका औषधीय ज्ञान

गोंड जनजाति : (मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश) गोंड जनजाति भारत की सबसे बड़ी जनजातियों में से एक है। इनके पारंपरिक वैद्य, जिन्हें "भुमका" या "गुनिया" कहा जाता है, वनौषधियों के गहन ज्ञाता होते हैं।

- **सर्पगंधा:** गोंड समुदाय इसकी जड़ का उपयोग उच्च रक्तचाप और मानसिक अशांति (अनिद्रा, उन्माद) के उपचार में करते हैं। आधुनिक विज्ञान ने भी इससे रिसर्पीन नामक तत्व निकालकर उच्च रक्तचाप की दवाइयाँ बनाई हैं।
- **शतावर :** इसकी जड़ का प्रयोग स्त्रियों में दुग्धवर्धक और शक्तिवर्धक टॉनिक के रूप में होता है।
- **महुआ :** फूल और छाल का उपयोग खांसी, त्वचा रोग तथा घाव भरने में किया जाता है।

भील जनजाति : (राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र)

भील समुदाय के पारंपरिक चिकित्सक "भोपा" कहलाते हैं।

नीम : त्वचा रोग, बुखार और घाव के संक्रमण में पत्तियों का लेप एवं काढ़ा प्रयुक्त होता है।

गुड़मार : मधुमेह नियंत्रण हेतु पत्तियों का प्रयोग सदियों से किया जा रहा है; यही कारण है कि इसे "शुगर डिस्ट्रॉयर" कहा जाता है।

अश्वगंधा : थकान, कमजोरी और तनाव दूर करने के लिए जड़ के चूर्ण का सेवन कराया जाता है।

संताल जनजाति :

(झारखंड, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, बिहार) संताल समुदाय के वैद्यों को "ओझा" या "जान गुरु" कहा जाता है।

चिरायता : बुखार, पाचन विकार और यकृत संबंधी रोगों में इसका कड़वा काढ़ा

फोटो : एआई

दिया जाता है।

कालमेघः मलेरिया और यकृत रोगों के उपचार हेतु इसका प्रयोग होता है, जिसे "जंगल की तुलसी" भी कहा जाता है।

हड़जोड़ : हड्डी टूटने पर इसकी बेल का लेप बांधकर हड्डी जोड़ने में सहायता ली जाती है- इसीलिए इसका नाम "हड़जोड़" पड़ा।

इरुला जनजाति :(तमिलनाडु) इरुला जनजाति सर्पदंश के उपचार में विशेषज्ञ मानी जाती है। ये विषनाशक जड़ी-बूटियों की पहचान और सर्प-विष निकालने की पारंपरिक विधियों के लिए प्रसिद्ध हैं। इनका ज्ञान इतना प्रामाणिक है कि तमिलनाडु सरकार ने "इरुला स्नेक कैचर्स कोऑपरेटिव सोसाइटी" के माध्यम से इन्हें एंटी-वेनम उत्पादन प्रक्रिया में सम्मिलित किया है।

टोडा जनजाति : (नीलगिरी, तमिलनाडु) टोडा जनजाति नीलगिरी की जैव विविधता से प्राप्त जड़ी-बूटियों का उपयोग श्वसन रोगों तथा जोड़ों के दर्द में करती है। ये दुग्ध उत्पादों के साथ हर्बल मिश्रण का सेवन कराते हैं।

बैगा जनजाति : (मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़) बैगा जनजाति को "वनों का चिकित्सक" कहा जाता है। इनका ज्ञान इतना समृद्ध है कि आस-पास के गैर-आदिवासी समुदाय भी इनसे उपचार कराने आते हैं। ये पुनर्नवा का प्रयोग गुर्दे और यकृत रोगों में तथा भृंगराज का प्रयोग बालों और यकृत संबंधी समस्याओं में करते हैं।

वारली जनजातिः (महाराष्ट्र) वारली समुदाय दमा और श्वसन रोगों के लिए वासा (अडूसा) की पत्तियों का काढ़ा प्रयोग करता है, जो आधुनिक कफ सिरप में भी प्रयुक्त तत्व है।

खासी और गारो जनजातियाँ : (मेघालय) पूर्वोत्तर भारत की ये जनजातियाँ अत्यंत समृद्ध जैव विविधता वाले क्षेत्र में निवास करती हैं और वहाँ पाई जाने वाली दुर्लभ हिमालयी जड़ी-बूटियों जैसे- तेजपत्ता, बच आदि का प्रयोग पाचन और श्वसन तंत्र के रोगों में करती हैं।

आदिवासी औषधीय ज्ञान और आधुनिक विज्ञान अनेक आधुनिक औषधियों का आधार आदिवासी परंपरागत ज्ञान ही रहा हैः

- सर्पगंधा से रिसर्पीन (उच्च रक्तचाप की दवा) का निर्माण।
- गुड़मार से मधुमेह-रोधी अनुपूरकों का विकास।
- नीम आधारित कीटनाशकों और सौंदर्य प्रसाधनों का व्यावसायिक उत्पादन।
- कालमेघ पर कोविड-19 महामारी के दौरान इसके प्रतिरक्षा-वर्धक गुणों को लेकर व्यापक शोध हुआ।

यह उदाहरण दर्शाते हैं कि आदिवासी ज्ञान केवल पारंपरिक आस्था नहीं, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि से भी प्रमाणिक है, जिस पर "एथ्नोबॉटनी" नामक विषय के अंतर्गत निरंतर शोध हो रहा है।

संरक्षण की चुनौतियाँ

इस अमूल्य ज्ञान के समक्ष संरक्षण की अनेक चुनौतियाँ हैंः

- मौखिक परंपरा होने के कारण अभिलेखीकरण का अभाव।
- वनों की कटाई और औषधीय पौधों की प्रजातियों का लुप्त होना।
- युवा पीढ़ी का पलायन और परंपरागत ज्ञान के प्रति घटती रुचि।
- जैव-चोरी एक बड़ी समस्या है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा बिना श्रेय या लाभ-साझेदारी के इस ज्ञान का व्यावसायिक दोहन किया जा रहा है। हल्दी और नीम से जुड़े अंतरराष्ट्रीय पेटेंट विवाद इसके प्रसिद्ध उदाहरण हैं।
- मानकीकरण और गुणवत्ता-नियंत्रण की कमी, जिससे यह ज्ञान आधुनिक चिकित्सा प्रणाली में समुचित रूप से समाहित नहीं हो पाता।

संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु सरकारी योजनाएँ एवं पहलें आदिवासी औषधीय ज्ञान के संरक्षण हेतु भारत सरकार ने अनेक संस्थागत प्रयास किए हैंः

राष्ट्रीय स्तर की संस्थाएँ एवं कार्यक्रम

- राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (एनेमपीबी) आयुष मंत्रालय के अधीन कार्यरत यह बोर्ड औषधीय पौधों की खेती, संरक्षण और अनुसंधान को बढ़ावा देता है।
- आयुष मंत्रालय की विभिन्न योजनाएँ पारंपरिक ज्ञान को मुख्यधारा की चिकित्सा

फोटो : एआई

आदिवासी समुदायों का औषधीय ज्ञान भारतीय ज्ञान परंपरा की एक जीवंत और अमूल्य कड़ी है। यह ज्ञान न केवल स्वास्थ्य-सेवा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि प्रकृति के साथ संतुलित सहअस्तित्व का एक आदर्श मॉडल भी प्रस्तुत करता है। आज जब संपूर्ण विश्व सतत विकास और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियों की ओर पुनः उन्मुख हो रहा है, तब आदिवासी ज्ञान परंपरा और भी अधिक प्रासंगिक हो गई है।

प्रणाली से जोड़ने हेतु अनुसंधान परिषदें (जैसे CCRAS) कार्यरत हैं।

- जैव विविधता अधिनियम, 2002 एवं जैविक विविधता बोर्ड (National Biodiversity Authority)-पारंपरिक ज्ञान के अभिलेखीकरण तथा जैव-चोरी रोकने हेतु "जैव विविधता प्रबंधन समितियाँ (BMC)" तथा "जन जैव विविधता रजिस्टर (PBR)" तैयार किए जा रहे हैं।
- ट्रेडिशनल नॉलेज डिजिटल लाइब्रेरी (TKDL)-यह वैज्ञानिक व पेटेंट कार्यालयों के लिए पारंपरिक ज्ञान का डिजिटल अभिलेखीकरण है, जो जैव-चोरी रोकने में सहायक सिद्ध हुआ है।

जनजातीय कार्य मंत्रालय की पहलें

- TRIFED (ट्राइबल कोऑपरेटिव मार्केटिंग डेवलपमेंट फेडरेशन ऑफ इंडिया), जो 1987 में स्थापित हुआ और जनजातीय कार्य मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत है,
- आदिवासियों द्वारा संग्रहित लघु वनोपज (Minor Forest Produce) के व्यापार को संस्थागत रूप देकर उनके सामाजिक-आर्थिक विकास हेतु कार्य करता है।
- वन धन विकास योजना (Van Dhan Yojana)-इस योजना के अंतर्गत आदिवासी उद्यमियों को औषधीय व सुगंधित पौधों सहित कई आर्थिक गतिविधियों से जोड़कर वर्षभर आय के अवसर सुनिश्चित किए जाते हैं, तथा हजारों वन धन विकास केंद्रों के माध्यम से वनोपज के संग्रहण, प्रशिक्षण एवं मूल्य-संवर्धन का कार्य किया जाता है।
- एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय (EMRS)- और अन्य शैक्षणिक पहलों के माध्यम से जनजातीय संस्कृति व पारंपरिक ज्ञान को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है।
- जनजातीय उपयोजना हेतु विशेष केंद्रीय सहायता (SCA to TSP) -इसके अंतर्गत आदिवासी समुदायों की आजीविका सुदृढ़ करने हेतु वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

अन्य सराहनीय प्रयास

विभिन्न राज्य सरकारों और वन विभागों द्वारा "मेडिसिनल प्लांट कंजर्वेशन एरिया (MPCA)" स्थापित किए गए हैं, जहाँ दुर्लभ औषधीय पौधों का संरक्षण किया जाता है।

- कई विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों (जैसे भारतीय वन्य अनुसंधान संस्थान, राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान) द्वारा आदिवासी क्षेत्रों में एथ्नोबॉटनिकल सर्वेक्षण करवाए जा रहे हैं, जिससे यह ज्ञान वैज्ञानिक रूप से प्रलेखित हो सके।
- अनेक गैर-सरकारी संगठन भी स्थानीय वैद्यों के साथ मिलकर "हर्बल गार्डन" और प्रशिक्षण कार्यक्रम चला रहे हैं।

आदिवासी समुदायों का औषधीय ज्ञान भारतीय ज्ञान परंपरा की एक जीवंत और अमूल्य कड़ी है। यह ज्ञान न केवल स्वास्थ्य-सेवा की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि प्रकृति के साथ संतुलित सहअस्तित्व का एक आदर्श मॉडल भी प्रस्तुत करता है। आज जब संपूर्ण विश्व सतत विकास और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धतियों की ओर पुनः उन्मुख हो रहा है, तब आदिवासी ज्ञान परंपरा और भी अधिक प्रासंगिक हो गई है। आवश्यकता इस बात की है कि इस ज्ञान का वैज्ञानिक अभिलेखीकरण हो, आदिवासी वैद्यों को समुचित सम्मान व लाभ-साझेदारी मिले, तथा सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन जमीनी स्तर पर प्रभावी ढंग से हो। तभी यह प्राचीन ज्ञान भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित रह सकेगा और मानवता की सेवा में अपना योगदान निरंतर देता रहेगा।

जब कोहरे ने चुनौती दी, विज्ञान ने 'दृष्टि' रची

डॉ. शुभा वी अयंगर की वैज्ञानिक यात्रा जिसने भारतीय आकाश को अधिक सुरक्षित बनाया।

प्रकृतिमेल डेस्क

'दृष्टि' को समझने के लिए यह समझना जरूरी है कि यह कोई ऐसा उपकरण नहीं है जो विमान को अपने आप उड़ाता या उतारता है। इसका काम है- वातावरण में मौजूद दृश्यता को मापना और रनवे के आसपास की visibility तथा RVR के बारे में विश्वसनीय आंकड़ा उपलब्ध कराना। यह प्रणाली transmissometer के सिद्धांत पर आधारित है। सरल शब्दों में, एक नियंत्रित प्रकाश स्रोत से प्रकाश भेजा जाता है और दूसरी ओर स्थित optical receiver यह देखता है कि कितनी प्रकाश ऊर्जा वहां तक पहुंची। वातावरण में कोहरे, धूल या अन्य कण प्रकाश को बिखेरते और अवशोषित करते हैं।

सर्दियों की सुबह जब कोहरा धरती और आकाश के बीच एक सफेद पर्दा खींच देता है, तब हमारे लिए कुछ सौ मीटर आगे देख पाना भी कठिन हो जाता है। सड़क पर वाहन धीमे हो जाते हैं, रेलगाड़ियां प्रभावित होती हैं और हवाई अड्डों पर उड़ानों का संचालन चुनौतीपूर्ण हो जाता है। लेकिन आसमान में उड़ रहे विमान के लिए कम दृश्यता की समस्या केवल असुविधा नहीं, बल्कि सुरक्षा से जुड़ा अत्यंत गंभीर प्रश्न है। ऐसे समय में विमान के पायलट को यह जानना आवश्यक होता है कि रनवे के आसपास वास्तविक दृश्यता कितनी है। इसी आवश्यकता ने भारत में एक ऐसी स्वदेशी तकनीक के विकास को जन्म दिया, जिसका नाम है—'दृष्टि'। इस तकनीक के विकास से जुड़ा नाम है डॉ. शुभा वेंकटेशा अयंगर, जिन्होंने अपने जीवन के 46 वर्ष CSIR-National Aerospace Laboratories

(CSIR-NAL), बेंगलुरु में वैज्ञानिक अनुसंधान को समर्पित किए। 2026 में भारत सरकार ने विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में उनके योगदान को पद्मश्री से सम्मानित किया। उनकी कहानी इसलिए विशेष है क्योंकि यह किसी ऐसे आविष्कार की कहानी नहीं है जिसे देखकर आम व्यक्ति चकित हो जाए। यह उस तकनीक की कहानी है जिसका महत्व तब दिखाई देता है जब परिस्थितियां सबसे कठिन होती हैं—जब रनवे धुंध में छिप जाता है और विमान को सुरक्षित जमीन तक पहुंचाना चुनौती बन जाता है।

डॉ. शुभा वेंकटेशा अयंगर का जन्म 14 मई 1954 को हुआ। विज्ञान में उनकी रुचि और प्रतिभा का परिचय उनके विद्यार्थी जीवन में ही मिल गया था। उन्होंने बेंगलुरु विश्वविद्यालय से भौतिक विज्ञान में बी.एससी. ऑनर्स और इलेक्ट्रॉनिक्स विशेषज्ञता के साथ मास्टर डिग्री प्राप्त की। दोनों स्तरों पर उन्होंने प्रथम स्थान प्राप्त किया और अपने शैक्षणिक जीवन में कई स्वर्ण पदक तथा भारत सरकार की मेरिट छात्रवृत्ति हासिल की। नवंबर 1974 में उन्होंने CSIR से संबद्ध फेलोशिप के माध्यम से अपने वैज्ञानिक जीवन की शुरुआत की और CSIR-NAL से जुड़ीं। आने वाले 46 वर्षों में यही संस्थान उनके वैज्ञानिक जीवन का प्रमुख केंद्र बना रहा। उन्होंने आगे चलकर पीएच.डी. भी पूरी की और वैज्ञानिक के रूप में लगातार ऐसे क्षेत्रों में काम किया जिनका संबंध पदार्थ विज्ञान, उपकरण निर्माण, एयरोस्पेस तथा रक्षा तकनीक से था। 2020 तक वे CSIR-NAL में Distinguished Scientist के पद तक पहुंचीं। यह यात्रा उस दौर में शुरू हुई थी जब भारत में अनेक उन्नत वैज्ञानिक उपकरणों और तकनीकों के लिए विदेशी स्रोतों पर निर्भरता काफी अधिक थी। ऐसे वातावरण में उनका दृष्टिकोण केवल अनुसंधान करने तक सीमित नहीं रहा; उनका लक्ष्य ऐसी तकनीक विकसित करना भी था जिसे भारत स्वयं बना और उपयोग कर सके।

कोहरा होने पर हमारी आंखों को कुछ दिखाई नहीं देता, लेकिन विमानन विज्ञान में केवल यह कहना पर्याप्त नहीं है कि 'आज बहुत कोहरा है।' विमान को सुरक्षित रूप से संचालित करने के लिए दृश्यता को वैज्ञानिक रूप से मापना पड़ता है। यहीं पर Runway Visual Range यानी RVR का महत्व सामने आता है। यह बताता है कि रनवे की दिशा में दृश्यता कितनी है। कम दृश्यता में विमान संचालन के लिए यह जानकारी पायलट, एयर ट्रैफिक कंट्रोल और मौसम संबंधी व्यवस्थाओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। भारत में लंबे समय तक ऐसी प्रणालियों के लिए विदेशी उपकरणों पर निर्भरता रही। समस्या केवल कीमत की नहीं थी। किसी भी देश के लिए महत्वपूर्ण विमानन उपकरणों के मामले में तकनीकी आत्मनिर्भरता, रखरखाव और स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप डिजाइन भी महत्वपूर्ण होते हैं। इसी चुनौती के बीच CSIR-NAL में स्वदेशी runway visibility measuring system विकसित करने का प्रयास आगे बढ़ा और यहीं से Drishti की कहानी शुरू हुई।

'दृष्टि' को समझने के लिए यह समझना जरूरी है कि यह कोई ऐसा उपकरण नहीं है जो विमान को अपने आप उड़ाता या उतारता है। इसका काम है—वातावरण में मौजूद दृश्यता को मापना और रनवे के आसपास की visibility तथा RVR के बारे में विश्वसनीय आंकड़ा उपलब्ध कराना। यह प्रणाली transmissometer के सिद्धांत पर आधारित है। सरल शब्दों में, एक नियंत्रित

प्रकाश स्रोत से प्रकाश भेजा जाता है और दूसरी ओर स्थित optical receiver यह देखता है कि कितनी प्रकाश ऊर्जा वहां तक पहुंची। वातावरण में कोहरे, धूल या अन्य कण प्रकाश को बिखेरते और अवशोषित करते हैं। इससे receiver तक पहुंचने वाले प्रकाश में परिवर्तन होता है। इस परिवर्तन को इलेक्ट्रॉनिक और computational processing के माध्यम से विश्लेषित करके वातावरण की दृश्यता का अनुमान लगाया जाता है। अर्थात जिस चीज को मनुष्य अपनी आंखों से केवल 'घना कोहरा' कहता है, Drishti उसे मापने योग्य वैज्ञानिक आंकड़े में बदल देती है। यही इसकी असली शक्ति है।

किसी भी तकनीक का वास्तविक मूल्य तब साबित होता है जब वह वास्तविक दुनिया की कठिन परिस्थितियों में काम करे। Drishti के शुरुआती परीक्षणों के लिए दिल्ली का इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा एक महत्वपूर्ण स्थान बना। वहां कम दृश्यता और घने कोहरे जैसी परिस्थितियों में इस प्रणाली का परीक्षण किया गया। 2011 में इसके शुरुआती commercial deployment का चरण आया और बाद में इसका उपयोग अन्य हवाई अड्डों तक बढ़ाया गया। यह वह समय था जब Drishti केवल एक laboratory project नहीं रह गया था। उसे वास्तविक विमानन वातावरण में अपनी विश्वसनीयता सिद्ध करनी थी। दिल्ली का कोहरा इस तकनीक के लिए किसी परीक्षा से कम नहीं था। जब दृश्यता बहुत कम हो जाती है, तब visibility measuring system से छोटी-सी त्रुटि भी महत्वपूर्ण हो सकती है। इसलिए Drishti का विकास केवल optical instrument बनाने का काम नहीं था; इसमें electronics, signal processing, calibration, environmental reliability और aviation standards जैसे अनेक

वैज्ञानिक पक्ष शामिल थे। यही कारण है कि इस उपलब्धि को केवल एक मशीन का आविष्कार कहना इसके पीछे किए गए काम को छोटा कर देना होगा।

Drishti को लेकर आम लोगों में एक भ्रम हो सकता है कि यह विमान को कोहरे में रनवे तक पहुंचाता है। वास्तविकता इससे अलग है। विमान की landing के लिए अलग-अलग प्रणालियां काम करती हैं। उदाहरण के लिए Instrument Landing System यानी ILS विमान को approach के दौरान आवश्यक guidance प्रदान कर सकता है। उपयुक्त विमान, हवाई अड्डे और अनुमोदित low-visibility procedures की स्थिति में autoland जैसी तकनीक भी उपयोग में आ सकती है। Drishti का काम इस पूरी व्यवस्था में visibility information उपलब्ध कराना है। इसलिए इसे विमान का 'driver' कहना सही नहीं होगा। इसे विमानन व्यवस्था की आंख और मापक यंत्र कहना अधिक उचित होगा। एक ओर पायलट और landing systems विमान को runway की ओर ले जाते हैं, दूसरी ओर Drishti यह बताने में मदद करता है कि उस वातावरण में दृश्यता वास्तव में कितनी है। यानी विमानन सुरक्षा की पूरी श्रृंखला में इसका महत्व एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में है।

किसी देश की वैज्ञानिक आत्मनिर्भरता का वास्तविक अर्थ तब सामने आता है जब वह किसी महंगी आयातित तकनीक का विकल्प स्वयं विकसित करता है और फिर उसे बड़े पैमाने पर उपयोग में लाता है। भारत सरकार के अनुसार Drishti के विकास ने विमानन क्षेत्र में स्वदेशी क्षमता को मजबूत किया और विदेशी तकनीक पर निर्भरता तथा विदेशी मुद्रा खर्च को कम करने में योगदान दिया। सरकार ने यह भी उल्लेख किया है कि Drishti का उपयोग भारतीय अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डों तथा भारतीय वायुसेना के हवाई क्षेत्रों में किया गया है। इसका महत्व केवल आर्थिक नहीं है। जब कोई देश अपने महत्वपूर्ण विमानन उपकरण स्वयं विकसित

करता है तो उसके पास तकनीक की समझ, सुधार की क्षमता और भविष्य के संस्करण विकसित करने की स्वतंत्रता भी रहती है। Drishti इसी वैज्ञानिक आत्मनिर्भरता का एक उदाहरण बनकर सामने आया।

डॉ. अयंगर की वैज्ञानिक यात्रा का एक और महत्वपूर्ण पहलू है—उनका काम केवल नागरिक विमानन तक सीमित नहीं रहा। उनका वैज्ञानिक अनुभव उच्च तापमान वाली सामग्रियों, instrumentation तथा एयरोस्पेस और रक्षा प्रणालियों तक फैला हुआ था। भारत सरकार के 2026 के आधिकारिक विवरण में उनके योगदान को civil aviation से लेकर defence और materials science तक विस्तृत बताया गया है। सरकारी विवरण के अनुसार उन्होंने अत्यधिक तापमान और उच्च गति वाले aerospace applications के लिए महत्वपूर्ण components तथा technologies पर भी काम किया। उनके योगदान को भारत के Agni missile programme से जुड़ी एक तकनीकी समस्या के समाधान के संदर्भ में भी रेखांकित किया गया है। इससे उनके काम की व्यापकता समझी जा सकती है। एक ही वैज्ञानिक जीवन में एक ओर हवाई अड्डे के रनवे की visibility मापने की समस्या और दूसरी ओर अत्यधिक तापमान झेलने वाली aerospace technology जैसी बिल्कुल अलग चुनौतियों पर काम करना साधारण उपलब्धि नहीं है।

डॉ. अयंगर की कहानी का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि उन्होंने ऐसे समय में वैज्ञानिक क्षेत्र में लंबी पारी खेली जब STEM और विशेष रूप से aerospace तथा defence research में महिलाओं की संख्या आज की तुलना में कम थी। उन्होंने किसी त्वरित प्रसिद्धि का रास्ता नहीं चुना। उनका काम वर्षों तक laboratory, testing facility और research programme के बीच चलता रहा। वैज्ञानिक उपलब्धियां अक्सर उसी समय दिखाई देती हैं जब उनका कोई उपकरण बाजार में आता है, कोई विमान सुरक्षित उतरता है या कोई रक्षा प्रणाली सफल होती है। लेकिन उस उपलब्धि के पीछे दशकों का शांत अनुसंधान छिपा रहता है। Drishti इसी तरह की उपलब्धि है। लोग जब सर्दियों में किसी विमान की देरी को देखते हैं, तब शायद उन्हें visibility measuring equipment के बारे में पता भी न हो। लेकिन विमानन सुरक्षा का बड़ा हिस्सा उन्हीं प्रणालियों पर निर्भर करता है जिन्हें आम यात्री शायद कभी देख नहीं पाता।

वर्ष 2026 में डॉ. शुभा वेंकटेशा अयंगर को पद्मश्री से सम्मानित किया गया। भारत सरकार की आधिकारिक सूची में उन्हें विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में यह सम्मान दिया गया। यह सम्मान उनके लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि Drishti कोई हाल में पैदा हुई चर्चा नहीं है। इसकी वास्तविक यात्रा एक दशक से भी अधिक पुरानी है। पहले तकनीक विकसित हुई, फिर उसका परीक्षण हुआ, deployment हुआ, उपयोग बढ़ा और वर्षों बाद उस योगदान को राष्ट्रीय सम्मान मिला। विज्ञान में अक्सर यही होता है—आविष्कार पहले आता है, पहचान बाद में। किसी वैज्ञानिक की असली उपलब्धि केवल पुरस्कार नहीं होती। असली सफलता तब होती है जब उसका शोध किसी समस्या का समाधान करे और समाज या देश के लिए उपयोगी बने। Drishti के मामले में यह कसौटी पूरी होती दिखाई देती है। एक ऐसी तकनीक, जिसके लिए भारत को कभी विदेशी प्रणालियों पर निर्भर रहना पड़ता था, भारतीय वैज्ञानिक संस्थान द्वारा विकसित प्रणाली के रूप में देश के नागरिक और रक्षा हवाई क्षेत्रों में उपयोग हो रही है।

डॉ. शुभा अयंगर की कहानी को केवल 'कोहरे में विमान उतारने वाली मशीन' की कहानी समझना अधूरा होगा। यह कहानी समस्या, विज्ञान और आत्मनिर्भरता को जोड़ती है। समस्या थी—कम दृश्यता। विज्ञान ने समाधान खोजा—प्रकाश के माध्यम से दृश्यता को मापना और उसे विश्वसनीय आंकड़ों में बदलना। और आत्मनिर्भरता ने उस समाधान को भारतीय तकनीक में बदल दिया। इस यात्रा में एक महिला वैज्ञानिक ने दशकों तक काम किया और ऐसी तकनीक विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जो भारतीय विमानन सुरक्षा के लिए उपयोगी बन गई। शायद यही कारण है कि 'दृष्टि' नाम इस तकनीक के लिए इतना उपयुक्त है। यह केवल रनवे को देखने की क्षमता नहीं है। यह समस्या को पहले से पहचानने की दृष्टि है। यह विदेशी निर्भरता से बाहर निकलने की दृष्टि है। यह विज्ञान को प्रयोगशाला से वास्तविक जीवन तक ले जाने की दृष्टि है और सबसे बढ़कर, यह उस विश्वास की दृष्टि है कि भारत की प्रयोगशालाओं में ऐसी तकनीकें बनाई जा सकती हैं जिन पर देश अपने आकाश की सुरक्षा के लिए भरोसा कर सके।

कोहरा आज भी आएगा। मौसम बदलेगा। दृश्यता कभी साफ होगी, कभी बेहद कम। लेकिन जब धुंध के बीच रनवे पर उतरने वाला विमान अपनी अंतिम approach पर होगा, तब उसके पीछे केवल पायलट का अनुभव नहीं होगा। वहां मौसम विज्ञान, electronics, aviation systems और वर्षों के वैज्ञानिक अनुसंधान की एक पूरी श्रृंखला काम कर रही होगी। उस श्रृंखला में डॉ. शुभा वेंकटेशा अयंगर का योगदान एक ऐसी वैज्ञानिक कहानी के रूप में दर्ज है जिसने दृश्यता को केवल देखा नहीं—उसे विज्ञान में मापा। और यही शायद उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि है। कोहरे के बीच रास्ता दिखाने वाली 'दृष्टि' दरअसल भारत की वैज्ञानिक दृष्टि का भी प्रतीक बन गई।

स्वतंत्रता मतलब लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा का संकल्प

सौरभ वार्ष्णेय
वरिष्ठ पत्रकार, चिंतक

हर वर्ष 15 अगस्त को जब तिरंगा आकाश में लहराता है तो उसके साथ करोड़ों भारतीयों की भावनाएं भी लहराती हैं। यह ध्वज हमें उन अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों की याद दिलाता है जिन्होंने अपना वर्तमान देश के भविष्य के लिए समर्पित कर दिया। किसी ने जेल की यातनाएं सहीं, किसी ने फांसी का फंदा चूमा, किसी ने परिवार और संपत्ति का त्याग किया तो किसी ने अपने जीवन के सुखों को राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए न्योछावर कर दिया।

भारत की स्वतंत्रता केवल विदेशी शासन से मुक्ति का नाम नहीं है। 15 अगस्त 1947 को देश ने राजनीतिक दासता की बेड़ियां तोड़ी थीं, लेकिन आजादी का वास्तविक अर्थ उससे कहीं व्यापक है। स्वतंत्रता का उद्देश्य केवल सत्ता का हस्तांतरण नहीं, बल्कि ऐसा भारत बनाना था जहां प्रत्येक नागरिक सम्मान, समानता, न्याय और अवसर के साथ जीवन जी सके। जहां संविधान प्रधान हो, लोकतंत्र मजबूत हो, विविधता हमारी शक्ति बने और राष्ट्र की एकता एवं अखंडता किसी भी परिस्थिति में कमजोर न पड़े। इसलिए स्वतंत्रता दिवस केवल उत्सव का दिन नहीं, बल्कि आत्ममंथन और संकल्प का अवसर भी है।

हर वर्ष 15 अगस्त को जब तिरंगा आकाश में लहराता है तो उसके साथ करोड़ों भारतीयों की भावनाएं भी लहराती हैं। यह ध्वज हमें उन अनगिनत स्वतंत्रता सेनानियों की याद दिलाता है जिन्होंने अपना वर्तमान देश के भविष्य के लिए समर्पित कर दिया। किसी ने जेल की यातनाएं सहीं, किसी ने फांसी का फंदा चूमा, किसी ने परिवार और संपत्ति का त्याग किया तो किसी ने अपने जीवन के सुखों को राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए न्योछावर कर दिया। उनके लिए आजादी व्यक्तिगत सुविधा का साधन नहीं, बल्कि भारत के करोड़ों लोगों की गरिमा और भविष्य का प्रश्न थी।

आज जब हम स्वतंत्र भारत में सांस ले रहे हैं, तब यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से हमारे सामने खड़ा होता है कि क्या हमने उस आजादी के वास्तविक उद्देश्य को समझा है? क्या स्वतंत्रता केवल अधिकार मांगने तक सीमित रह गई है या हम अपने कर्तव्यों को भी उतनी ही गंभीरता से स्वीकार करते हैं? क्या लोकतंत्र केवल चुनाव जीतने और सरकार बनाने का माध्यम है, अथवा जनता की आवाज सुनने, असहमति का सम्मान करने और संविधान की मर्यादा बनाए रखने की व्यवस्था भी है? इन प्रश्नों पर गंभीर चिंतन आवश्यक है।

भारत की सबसे बड़ी ताकत उसकी युवा आबादी है। युवा केवल देश का भविष्य नहीं, वर्तमान भी हैं। उनके हाथ में तकनीक है, उनके पास ऊर्जा है और नए विचारों को स्वीकार करने की क्षमता है।लेकिन युवाओं के सामने चुनौतियां भी कम नहीं हैं। रोजगार, कौशल, शिक्षा, प्रतियोगिता और बदलती तकनीक के बीच उन्हें अपने भविष्य का निर्माण करना है। ऐसे समय में उन्हें केवल नौकरी खोजने वाला नहीं, बल्कि अवसर पैदा करने वाला नागरिक बनाने की जरूरत है। युवाओं को राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी करनी होगी।

स्वतंत्रता का अर्थ मनमानी नहीं है। स्वतंत्रता हमें अधिकार देती है, लेकिन साथ ही जिम्मेदारी भी सौंपती है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता लोकतंत्र की आत्मा है, लेकिन उसका अर्थ यह नहीं कि झूठ, अफवाह, नफरत और सामाजिक विभाजन को बढ़ावा दिया जाए। राजनीतिक विरोध लोकतंत्र का आवश्यक हिस्सा है, लेकिन विरोध का अर्थ राष्ट्रहित से समझौता करना नहीं हो सकता। सरकार से सवाल पूछना नागरिक का अधिकार है, लेकिन कानून और संस्थाओं के प्रति सम्मान बनाए रखना भी नागरिक जिम्मेदारी है। आज सोशल मीडिया के दौर में स्वतंत्रता का एक नया आयाम सामने आया है। सूचना का प्रसार पहले की तुलना में कहीं अधिक तेज हो गया है। एक व्यक्ति कुछ सेकंड में ऐसी बात हजारों लोगों तक पहुंचा सकता है जिसकी सत्यता की उसने स्वयं जांच नहीं की। यही कारण है कि आज जिम्मेदार नागरिकता पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। फर्जी खबरें, भ्रामक सूचनाएं और अफवाहें सामाजिक सौहार्द को नुकसान पहुंचा सकती हैं। इसलिए डिजिटल युग की स्वतंत्रता के साथ विवेक और जिम्मेदारी भी जरूरी है।

आजादी की रक्षा केवल सीमा पर तैनात सैनिक नहीं करते। किसान अपने खेत में मेहनत करके, शिक्षक अपने विद्यार्थियों को शिक्षित करके, वैज्ञानिक नई खोज करके, श्रमिक उत्पादन करके, चिकित्सक सेवा करके, पत्रकार सच सामने लाकर और नागरिक कानून का पालन करके भी देश की स्वतंत्रता को मजबूत करते हैं। राष्ट्र निर्माण किसी एक संस्था या वर्ग की जिम्मेदारी नहीं है; यह प्रत्येक नागरिक का साझा दायित्व है।

भारत की पहचान उसकी विविधता में निहित है। यहां अलग-अलग भाषाएं हैं, अनेक संस्कृतियां हैं, विभिन्न खान-पान और वेशभूषाएं हैं, अलग-अलग परंपराएं हैं और जीवन के अनेक रंग हैं। इसके बावजूद हम एक राष्ट्र हैं। यही भारत की सबसे बड़ी विशेषता है। हमारी एकता किसी एकरूपता पर आधारित नहीं है। भारत को एक बनाने के लिए सभी लोगों का एक जैसा होना जरूरी नहीं। हमारी एकता का आधार यह भावना है कि अलग-अलग पहचान के बावजूद हम सब भारतीय हैं। यही विचार भारतीय राष्ट्रवाद को व्यापक और समावेशी बनाता है। आज जब दुनिया के अनेक हिस्सों में सामाजिक, धार्मिक और जातीय संघर्ष दिखाई देते हैं, तब भारत के लिए यह और भी आवश्यक है कि वह अपनी सामाजिक एकता को मजबूत रखे। किसी भी प्रकार की नफरत, भेदभाव और विभाजनकारी मानसिकता राष्ट्र की शक्ति को कमजोर करती है। राजनीति में मतभेद हो सकते हैं, विचारधाराओं में अंतर हो सकता है, लेकिन राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता पर मतभेद नहीं होना चाहिए। हमें यह समझना होगा कि भारत की ताकत केवल उसकी सेना, अर्थव्यवस्था या जनसंख्या में नहीं है। भारत की वास्तविक शक्ति उसके नागरिकों के आपसी विश्वास और सामाजिक एकजुटता में है। यदि समाज भीतर से कमजोर होगा तो बाहरी चुनौतियों का सामना करना कठिन हो जाएगा।

राष्ट्रीय अखंडता का अर्थ केवल भौगोलिक सीमाओं की रक्षा करना नहीं है। निश्चित रूप से देश की सीमाओं की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है और हमारे सैनिक इसके लिए कठिन परिस्थितियों में भी डटे रहते हैं। लेकिन राष्ट्रीय अखंडता का एक सामाजिक और संवैधानिक पक्ष भी है। जब किसी नागरिक को उसकी भाषा, क्षेत्र, जाति या आर्थिक स्थिति के कारण दूसरे दर्जे का महसूस कराया जाता है, तब राष्ट्र की सामाजिक अखंडता कमजोर होती है। जब भ्रष्टाचार व्यवस्था में विश्वास को कम करता है, तब संस्थागत अखंडता प्रभावित होती है। जब कानून का पालन केवल कमजोर से अपेक्षित किया जाता है और शक्तिशाली व्यक्ति कानून से ऊपर समझा जाता है, तब लोकतंत्र की बुनियाद कमजोर होती है। इसलिए अखंड भारत का निर्माण तभी संभव है जब देश के हर नागरिक को यह विश्वास हो कि संविधान उसके अधिकारों की रक्षा करता है और कानून सबके लिए समान है। राष्ट्रीय अखंडता का सबसे मजबूत आधार न्याय और समान अवसर है।भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। यह उपलब्धि अपने आप में गौरव का विषय है। लेकिन लोकतंत्र की शक्ति केवल चुनाव कराने में नहीं होती। लोकतंत्र की वास्तविक सफलता इस बात से तय होती है कि संस्थाएं कितनी मजबूत हैं, नागरिक कितने जागरूक हैं, विपक्ष कितना जिम्मेदार है, सरकार कितनी जवाबदेह है और समाज असहमति को कितना सम्मान देता है।

संसद लोकतंत्र का सर्वोच्च राजनीतिक मंच है। वहां सरकार की नीतियों पर सवाल होना चाहिए, विधेयकों पर चर्चा होनी चाहिए और जनता से जुड़े मुद्दों पर गंभीर बहस होनी चाहिए। सत्ता पक्ष का दायित्व है कि वह विपक्ष की आवाज सुने, जबकि विपक्ष का दायित्व है कि वह सरकार का विरोध

फोटो : एआई

आजादी का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य गरीबी, अशिक्षा और शोषण से मुक्ति भी था। भारत ने पिछले दशकों में उल्लेखनीय प्रगति की है। सड़क, बिजली, डिजिटल तकनीक, शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग और बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में देश ने बड़ी उपलब्धियां हासिल की हैं। भारत आज विश्व अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। लेकिन विकास की असली परीक्षा यह है कि उसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक कितना पहुंचता है। किसान, मजदूर, छोटे व्यापारी, युवा, महिलाएं और कमजोर वर्ग यदि विकास की मुख्यधारा से पीछे रह जाते हैं

करते हुए भी संसदीय मर्यादा बनाए रखे। संसद में चर्चा का स्थान हंगामे ने ले लिया तो लोकतंत्र की आत्मा कमजोर होगी।लोकतंत्र में असहमति दुश्मनी नहीं होती। सरकार के निर्णय पर सवाल उठाना राष्ट्र विरोध नहीं है और सरकार का समर्थन करना भी किसी नागरिक को अंधसमर्थक नहीं बनाता। स्वस्थ लोकतंत्र वह है जिसमें अलग-अलग विचारों को सुनने और तर्क के आधार पर निर्णय लेने की क्षमता हो।आजादी के आंदोलन में भी अनेक विचारधाराएं थीं। सभी स्वतंत्रता सेनानियों के रास्ते अलग हो सकते थे, लेकिन लक्ष्य एक था—भारत की स्वतंत्रता। आज भी राजनीतिक और वैचारिक मतभेदों के बीच राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखना आवश्यक है।

भारत का संविधान स्वतंत्रता, समानता, न्याय और बंधुत्व की भावना को संस्थागत आधार देता है। संविधान ने नागरिकों को अधिकार दिए हैं, लेकिन साथ ही राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों की याद भी दिलाई है।संविधान की रक्षा केवल न्यायपालिका, संसद या सरकार की जिम्मेदारी नहीं है। प्रत्येक नागरिक को संविधान की मूल भावना को समझना और उसका सम्मान करना चाहिए। कानून का पालन, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा, सामाजिक सद्भाव, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, पर्यावरण संरक्षण और राष्ट्र की एकता के प्रति प्रतिबद्धता—ये सभी जिम्मेदार नागरिकता के महत्वपूर्ण पक्ष हैं।यदि हम अधिकारों की बात तो करें लेकिन कर्तव्यों को भूल जाएं, तो लोकतंत्र अधूरा रह जाएगा। यदि हम संविधान से अपने अधिकार मांगें लेकिन उसके मूल्यों का सम्मान न करें, तो स्वतंत्रता का अर्थ कमजोर पड़ जाएगा।

आजादी का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य गरीबी, अशिक्षा और शोषण से मुक्ति भी था। भारत ने पिछले दशकों में उल्लेखनीय प्रगति की है। सड़क, बिजली, डिजिटल तकनीक, शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग और बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में देश ने बड़ी उपलब्धियां हासिल की हैं। भारत आज विश्व अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।लेकिन विकास की असली परीक्षा यह है कि उसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक कितना पहुंचता है। किसान, मजदूर, छोटे व्यापारी, युवा, महिलाएं और कमजोर वर्ग यदि विकास की मुख्यधारा से पीछे रह जाते हैं तो आर्थिक प्रगति अधूरी मानी जाएगी।आजादी का मतलब यह भी है कि किसी गरीब ब'चे को केवल गरीबी के कारण अ'छी शिक्षा से वंचित न होना पड़े। किसी युवा की प्रतिभा केवल संसाधनों की कमी के कारण दब न जाए। किसी किसान को अपनी मेहनत का उचित मूल्य पाने के लिए संघर्ष न करना पड़े। किसी महिला को सुरक्षा और सम्मान के लिए अपने अधिकारों की लड़ाई न लडऩी पड़े।

भारत की सबसे बड़ी ताकत उसकी युवा आबादी है। युवा केवल देश का भविष्य नहीं, वर्तमान भी हैं।उनके हाथ में तकनीक है, उनके पास ऊर्जा है और नए विचारों को स्वीकार करने की क्षमता है।लेकिन युवाओं के सामने चुनौतियां भी कम नहीं हैं। रोजगार, कौशल, शिक्षा, प्रतियोगिता और बदलती तकनीक के बीच उन्हें अपने भविष्य का निर्माण करना है। ऐसे समय में उन्हें केवल नौकरी खोजने वाला

नहीं, बल्कि अवसर पैदा करने वाला नागरिक बनाने की जरूरत है। युवाओं को राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी करनी होगी। उन्हें राजनीति में आएं या सामाजिक क्षेत्र में काम करें, विज्ञान और तकनीक को अपनाएं या उद्यमिता की राह चुनें—हर क्षेत्र में ईमानदारी और राष्ट्रहित को प्राथमिकता देनी होगी।देश का भविष्य केवल संसद में बनने वाले कानूनों से तय नहीं होगा। यह स्कूलों, विश्वविद्यालयों, खेतों, प्रयोगशालाओं, कारखानों और डिजिटल दुनिया में काम कर रही नई पीढ़ी के निर्णयों से भी तय होगा।

लोकतंत्र के चारों ओर एक मजबूत सार्वजनिक विमर्श आवश्यक है और इसमें स्वतंत्र एवं जिम्मेदार पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका है। पत्रकारिता का दायित्व सत्ता से प्रश्न करना जितना है, उतना ही समाज को सही और प्रमाणित सूचना देना भी है।आज सूचना की बाढ़ के बीच सत्य की पहचान चुनौती बन गई है। ऐसे समय में पत्रकारिता को सनसनी से अधिक तथ्य, पक्षपात से अधिक निष्पक्षता और प्रचार से अधिक जनसरोकार को महत्व देना होगा। लोकतंत्र में प्रेस की स्वतंत्रता केवल पत्रकारों का अधिकार नहीं, जनता का अधिकार भी है। नागरिकों को सही सूचना मिलेगी तभी वे सही निर्णय ले सकेंगे। इसलिए पत्रकारिता की स्वतंत्रता और उसकी जिम्मेदारी दोनों को समान महत्व देना होगा।राष्ट्रभक्ति केवल तिरंगा फहराने या राष्ट्रगान गाने तक सीमित नहीं हो सकती। ये भावनाएं हमारे राष्ट्रप्रेम की अभिव्यक्ति हैं, लेकिन राष्ट्रभक्ति का वास्तविक परीक्षण हमारे दैनिक व्यवहार में होता है।जब हम ईमानदारी से कर चुकाते हैं, सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान नहीं पहुंचाते, सड़क पर नियमों का पालन करते हैं, किसी जरूरतमंद की सहायता करते हैं, भ्रष्टाचार को बढ़ावा नहीं देते, महिलाओं का सम्मान करते हैं और दूसरे नागरिक के अधिकारों का सम्मान करते हैं—तब हम राष्ट्र के प्रति अपना दायित्व निभाते हैं। देशभक्ति का अर्थ देश की कमियों को छिपाना भी नहीं है। सच्चा राष्ट्रप्रेम वह है जिसमें हम कमियों को स्वीकार करते हैं और उन्हें दूर करने का प्रयास करते हैं। देश को बेहतर बनाने के लिए सवाल पूछना, सुधार की मांग करना और व्यवस्था को अधिक जवाबदेह बनाना भी राष्ट्रभक्ति का ही हिस्सा है।1947 में हमें राजनीतिक स्वतंत्रता मिली। अब 21वीं सदी का भारत एक ऐसे राष्ट्र के निर्माण की ओर बढ़ रहा है जो आर्थिक रूप से मजबूत, सामाजिक रूप से समरस, तकनीकी रूप से सक्षम और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति दृढ़ हो। आजादी के अमृतकाल की वास्तविक सफलता केवल आर्थिक आंकड़ों से नहीं मापी जाएगी। इसका मूल्यांकन इस बात से होगा कि देश का सामान्य नागरिक अपने भविष्य को लेकर कितना आश्वस्त है, युवाओं को कितने अवसर मिलते हैं, किसानों की स्थिति कितनी मजबूत होती है, महिलाओं की भागीदारी कितनी बढ़ती है, शिक्षा और स्वास्थ्य कितने सुलभ होते हैं तथा लोकतांत्रिक संस्थाओं पर जनता का विश्वास कितना मजबूत रहता है।हमें ऐसा भारत बनाना है जहां विकास और लोकतंत्र साथ-साथ आगे बढ़ें। जहां आधुनिकता और परंपरा में संघर्ष नहीं, संवाद हो। जहां विज्ञान और संस्कृति एक-दूसरे के पूरक हों। जहां आर्थिक प्रगति के साथ मानवीय संवेदनाएं भी मजबूत हों।15 अगस्त हमें हर वर्ष याद दिलाता है कि स्वतंत्रता अनमोल है। इसे हासिल करने में पीढिय़ों ने अपना जीवन लगाया। इसलिए इसकी रक्षा केवल सैनिकों या सरकार का दायित्व नहीं है। हर नागरिक को स्वतंत्रता की कीमत समझनी होगी।आज जब हम तिरंगे को सलाम करें तो केवल अतीत को याद न करें, भविष्य के लिए भी संकल्प लें। संकल्प लें कि हम भारत की एकता को कमजोर करने वाली हर प्रवृत्ति का विरोध करेंगे। संकल्प लें कि हम संविधान और लोकतांत्रिक संस्थाओं का सम्मान करेंगे। संकल्प लें कि हम नफरत की जगह संवाद, हिंसा की जगह शांति और विभाजन की जगह एकता को प्राथमिकता देंगे। संकल्प लें कि हम अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों को भी समझेंगे।संकल्प लें कि हम अपने ब'चों को केवल सफल नागरिक नहीं, जिम्मेदार नागरिक बनाएंगे। उन्हें बताएंगे कि भारत की शक्ति उसकी विविधता में है, उसकी पहचान उसके संविधान में है और उसका भविष्य उसके नागरिकों की ईमानदार मेहनत में है।स्वतंत्रता दिवस का वास्तविक उत्सव तभी होगा जब देश का प्रत्येक नागरिक यह महसूस करे कि भारत उसका अपना है और राष्ट्र की प्रगति में उसका भी योगदान है।

आजादी की रक्षा केवल सीमा पर बंदूक उठाकर नहीं होती; यह विद्यालय में शिक्षा देकर, खेत में अन्न उगाकर, कार्यालय में ईमानदारी से काम करके, न्यायालय में न्याय देकर, संसद में सार्थक बहस करके, पत्रकारिता में सत्य लिखकर और समाज में भाईचारा कायम करके भी होती है।15 अगस्त केवल कैलेंडर की एक तारीख नहीं है। यह भारत की आत्मा को याद करने का दिन है। यह स्वयं से सवाल करने का दिन है कि हमने देश से क्या पाया, लेकिन उससे भी बड़ा सवाल यह है कि हमने देश को क्या दिया। तिरंगा तभी वास्तव में गौरवान्वित होगा जब उसके नीचे खड़ा प्रत्येक भारतीय अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों को भी समझेगा। लोकतंत्र तभी मजबूत होगा जब सत्ता और विपक्ष दोनों जनता के प्रति जवाबदेह होंगे। एकता तभी स्थायी होगी जब विविधताओं का सम्मान होगा। अखंडता तभी सुरक्षित होगी जब न्याय और समानता का विश्वास हर नागरिक के मन में होगा। आजादी हमें विरासत में मिली है, लेकिन उसकी रक्षा हर पीढ़ी को स्वयं करनी होगी। यही स्वतंत्रता दिवस का संदेश है। यही राष्ट्र के प्रति हमारा संकल्प होना चाहिए। और यही आजादी का असली मकसद है।

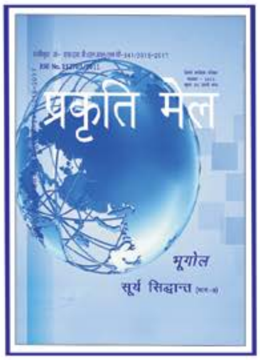

R N I No. UPHIN/2011/40224

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकृति मेल वह आईना है जिसमें आप अपनी वास्तविक तस्वीर के साथ प्रकृति की हर क्रिया प्रतिक्रिया का वैज्ञानिक स्वरूप देखें।

अशोक 'मानव'

उत्तर भारत की तेजी से लोकप्रिय होती हिन्दी मासिक पत्रिका
(शीघ्र ही अपने विज्ञापन की जगह बुक करवाये) (8423330911)

☐ हां, मैं प्रकृति मेल पत्रिका का वर्षिक ग्राहक बनना पसंद करूंगा/ करूंगी

प्रकृति मेल के पक्ष में देय ₹ ☐☐☐ कैश ☐ चेक ☐ तारीख ☐☐☐☐☐☐

1 year membership fee -220/- only. (Must be drawn in favour of 'Prakriti mail' payable at lucknow)

संलग्न चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं. ☐☐☐☐☐☐ आहरित बैंक (बैंक का नाम)____________________

नाम ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

पता____

____________________________ राज्य______________ पिन__________

फोन नंबर ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐ ई-मेल:____________________

कृपया फार्म भरकर निम्नलिखित पते पर भेजे:

प्रकृति मेल, सूर्या आश्रम, मानव नगर, (निकट आई.आई.एस.ई.) कल्याणपुर, लखनऊ, पिनकोड- 226022, उ0 प्र0।

नियम और शर्तें

पत्रिका का मूल्य और आफॅर केवल भारत में लागू। कृपया पत्रिका की पहली प्रति डाक या कोरियर के माध्यम से मंगवाने के लिए कुछ समय दें। किसी भी तरह के विवाद का निबटारा केवल लखनऊ की अदालत में होगा।

नि:शुल्क ई-मैगज़ीन प्राप्त करने के लिए हमारे वेबसाइट - www.prakritimail.com पर सम्पर्क करें।

सूत्र वाक्य

अशोक मानव

- चरण गति से स्वईंधन जोड़कर तत्व निर्माण करने की क्रिया को 'चित' कहते हैं।

- दिन अर्थात जाग्रत अवस्था जिसमें इन्द्रियाँ अनेकों आयाम में फैली होती हैं जब कि रात सोने की अवस्था है जिसमें इन्द्रियां किसी एक विषय को पूर्ण करने के लिए केंद्रित होती है जो शक्तिशाली गुणों का निर्माण करती हैं।

- ध्यान किया नहीं जाता हो जाता है जब जिस विषय के लिए जितना जरुरत होती उतना विषयात्मक घेराव हर किसी का हो जाता है , बाहय ध्यान वास्तविक ध्यान में सिर्फ अवरोध उत्पन्न करता है।

- प्रकृति सही गलत की नजर से नहीं बल्कि जीवन के वजूद के अनुकूल यात्रा विज्ञान बनाती है जिसमें शोषणवादी कण अपना मिलान कर अपनी सत्ता स्थापित करने हेतु प्रवेश करते है उस प्रदूषण को पकाकर यात्रा विज्ञान से मिटाकर वजूद का एक गुणधारी कण बना देती है जिसमें जो शोषण और शासनवादी कण बन जाता है उसे मिटा देती है और वो कण जो स्ववजूद के बन जाते हैं जो न किसी से प्रभावित है न किसी को प्रभावित करते हैं , उन्हें प्रकृति बना देती है।

- जीव प्रकृति का एक विज्ञान है जो अपनी इच्छा को तृप्त करने हेतु बनाया जाता है।

- भारमुक्त रखने के लिए प्रकृति किसी दूसरे के भार को उठाने की इच्छा पर भी भार को नहीं बढ़ाती बल्कि उस इच्छा को अपना स्वभाव बनाकर स्वकर्म योग में जोड़ देती है जो गुणात्मक रसायन विज्ञान बनकर कार्य को पूरा करता है यदि जल्दबाजी में हो रही घटना को बल लगाकर रोकने का प्रयास किया जाता है तो बल भार बनकर यात्रा में हलचल उत्पन्न करने लगता है।

- प्रकृति हर किसी अवस्था को पूर्ण करने हेतु रासायनिक मिलान करती है इसी क्रिया से उसके यात्रा की गति बनती है।

- प्रकृति की परिभाषा में जीवन एहसास है।

मानव सुगन्ध विज्ञान

अशोक मानव

प्रकृति का विस्तार जीवों की विकासोन्मुखी प्रक्रिया का परिणाम है जो वैज्ञानिक तरीके से सूर्य और जल के मिलने से होता है। सूर्य प्रकाश जल पर पड़ने से जल का जो भाग जलता है वह हवा बनकर ऊपर जाता है जिससे सूर्य और जल के बीच ऐसी परतों का निर्माण होता है जो निश्चित तापमान बनाती है। जिससे जलीय जीव का निर्माण होता है। यही जलीय जीव जब अपना शरीर छोड़कर जाता है, जो पदार्थ के रूप में परिवर्तित होता है, यही पदार्थ इकट्ठा होकर जमीनी सतह का निर्माण करता है। जिसमें बिल बनाकर रहने वाले जीव की उत्पत्ति होती है। बिल बनने से हवा और प्रकाश अन्दर तक पहुंच जाता है, जिससे रसायनिक परिवर्तन होता है, जो जमीन को उपजाऊ बनाता है, जिसमें वनस्पति की उत्पत्ति होती है। इसी प्रकार वैज्ञानिक तरीके से अनेकों जीव की उत्पत्ति होती है। जिससे प्रकृति का विस्तार निरन्तर होता रहता है। अलग-अलग प्रजाति के जीव द्वारा छोड़ा गया शरीर अलग-अलग प्रजाति के जीवन द्वारा छोड़ा गया शरीर अलग-अलग गुण को छोड़कर जीवों की प्रजाति को बढ़ाते जाते हैं। ये जीव सुनिश्चित गुण को धारण करके गुणात्मक पदार्थ को बढ़ाते जाते हैं। इस प्रकार जीव से पदार्थ और पदार्थ से जीव की उत्पत्ति की वैज्ञानिक प्रक्रिया चलती रहती है। जिससे प्रकृति का निरन्तर विस्तार होता रहता है। हर जीव का अपना महत्व होता है। कोई भी जीव अकारण नहीं होता है। हर जीव गुणात्मक पदार्थ का निर्माण करने के लिये पैदा होते हैं। यह तभी संभव होता है जब जीव स्वाभाविक रूप से अपना शरीर छोड़ते हैं। जिस पदार्थ से जीव परिपक्व पदार्थ बना पाते हैं उसी को अपना आहार बनाते हैं। यह प्रक्रिया स्वाभाविकता से पैदा होती है। गन्दगी में पैदा होने वाले जीव गन्दगी को ही अपना आहार बनाकर गन्दगी से उत्पन्न होने वाली दुर्गन्ध को जान लेवा होने से रोकते हैं और गन्दगी को खत्म करके परिपक्व पदार्थ का निर्माण करते हैं। इस प्रकार पदार्थ की गुणात्मकता बढ़ती जाती है। जिससे सुन्दर प्रजाति के जीव पैदा होते हैं। जीवों द्वारा निरन्तर प्रकृति को सजाने की प्रक्रिया चलती रहती है। इसी वैज्ञानिकता से प्रकृति का सौन्दर्य बढ़ता रहता है और हजारों साल बाद मानव जैसे सौन्दर्य पूर्ण प्राणी की उत्पत्ति होती है।

प्रकृति में जीव की उत्पत्ति जीव द्वारा उत्पन्न होने वाली नकारात्मक ऊर्जा खत्म करके गुणों का निर्माण और पदार्थ का विस्तार करने के लिये होती है। इसी से प्रकृति का विस्तार होता है। मानव के अतिरिक्त प्रकृति के अन्य जीव जिस गुण का विस्तार करने के लिये आते हैं, उसी गुण का विस्तार करते हैं, पर मानव प्रकृति का सबसे अधिक सौन्दर्य पूर्ण प्राणी होने के कारण किसी भी गुण को उत्पन्न कर सकता है। भोजन हर जीव की आवश्यकता होती है, पर किये गये भोजन से शरीर में जिस पदार्थ का निर्माण होता है, उस पर उसकी सोच का प्रभाव होता है। सभी जीव अपने एक निश्चित स्वभाव को धारण करते हैं। जिससे एक निश्चित गुण का विकास करते हैं। जो शरीर छोड़ने के बाद रसायनिक परिवर्तन के बाद मिट्टी में व अन्य पदार्थ में बदल जाता है, जो स्थायी पदार्थ का रूप ले लेता है और हमेशा अपने गुण को छोड़ता रहता है, जो प्रकृति निर्माण और जीव उत्पत्ति में अपने गुण को प्रदान करता रहता है।

मानव अनेकों इच्छाओं को पैदा करता रहता है। जिससे उसके शरीर में बनने वाले पदार्थों में अनेक गुण आ जाते हैं। मानव शरीर में पैदा होने वाली इच्छा से गुणात्मक प्रकाश बनता है, जो शरीर के अन्दर आने वाले भोजन का रासायनिक परिवर्तन करके उसी गुण के पदार्थ का निर्माण करता है। जब व्यक्ति का

जिस प्रकार हर उत्पत्ति का विज्ञान गंध में मौजूद होता है उसी प्रकार मानव की भी अपनी गंध होती है जो स्वभाव बनकर गतिमान होती है।

शरीर छूट जाता है तो उसका शरीर अनेकों पदार्थों में परिवर्तित हो जाता है, उस पदार्थ में उसकी इच्छा वाला गुण आ जाता है, जो अपने गुण का मानव बनाने में क्रियाशील हो जाता है। जब मानव अपने आप को 'प्रकृति विज्ञान' का परिणाम जान पायेगा और अपनी हर क्रिया को एक विज्ञान मानने लगेगा तब वही इच्छा पैदा करेगा जिसकी आवश्यकता होगी। ऐसा होने से मानव की ऊर्जा जो व्यर्थ में निकल जाती है, वह सुरक्षित रहने लगेगी। इसकी जो ऊर्जा व्यर्थ में निकलती है, वह व्यर्थ नहीं जाती है, बल्कि जिसके लिये निकलती है, उस गुण का निर्माण करती हैं। इसी व्यर्थ की ऊर्जा से नकारात्मक ऊर्जा पैदा होती हैं, जो स्वयं के और दूसरों के कार्यों में व्यवधान उत्पन्न करती है। बीमारी और अशान्ति का कारण बनती है। इसी नकारात्मक ऊर्जा से भ्रष्टाचार जैसी बीमारी का जन्म होता है।

इसकी जड़ यही है, इसे रोकने के लिए मानव को अपनी विचारधारा सकारात्मक करनी पड़ेगी तभी लोग इस बीमारी से बच पायेंगे। ईमानदारी का चोला पहनने से कोई ईमानदार नहीं हो जाता है। जब तक कि उसके अन्तःकरण से उसकी सुगन्ध नहीं आती है। नकारात्मक सोच पीछे से चली आ रही है। जिसके कारण से मिट्टी ही प्रदूषित हो गयी है और उसी गुण को धारण करके लोग पैदा हो रहे हैं। इससे बचने के लिए मानव को अपने आप को विज्ञान मानना पड़ेगा, जो है अपनी इच्छा शक्ति को सकारात्मक बनाकर मानव सुगन्ध बनाना, तभी प्रकृति की मिट्टी से नकारात्मक ऊर्जा खत्म हो पायेगी। परिणाम स्वरूप दुर्गन्ध खत्म हो जायेगी और पीड़ा पहुंचाने वाली ऊर्जा नहीं पैदा होगी। ऐसा होने पर मानव का वह सपना पूरा हो जायेगा, जिसमें मानव पीड़ा मुक्त खुशहाल पुष्प की तरह खिलकर मानवता की सुगन्ध छोड़ते हुए देखना चाहता है। मानव प्रकृति विज्ञान का सबसे सुन्दर प्राणी है। इसी के अन्दर वह क्षमता है कि अपनी इच्छा शक्ति से किसी भी गुण को पैदा कर सकता है, जैसे इच्छा इसके अन्दर पैदा होती है, वैसा एहसास इसको होता है। उस एहसास से उस गुण की ऊर्जा पैदा होती है, जो शरीर में उस गुण का निर्माण करती है और उस गुण की सुगन्ध प्रकृति में निकल जाती है। जो हवा रूप में उसका विस्तार करती है। अपने गुण से सम्बन्धित लोगों के अन्दर स्वशन क्रिया से अन्दर पहुंचकर अपने गुण व भाव पैदा करती है। शरीर के अन्दर गुण शरीर छूटने के बाद मिट्टी बनकर उस गुण का मानव पैदा करने लगती है। यही ऊर्जा भविष्य में फिर पैदा होने के बाद उसके काम आती है। यही उसकी धन राशि होती है, जो उसके विकास में सहायक होती है। इसलिये मानव को दूसरे को पीड़ा पहुंचाने वाली इच्छा नहीं पैदा करनी चाहिये। मानव एक ज्ञानी प्राणी है, जो जहां जिस विषय की जरूरत है, उसे पहचान सकता है। किस विषय में किस गुण को मिलाने से निर्माण होता है, यह जानकर उसी गुण को मिलाना चाहिए। जिससे प्रकृति और सुन्दर बन जायेगी और मानव तन सुन्दर होने के साथ भाव से भी सुन्दर हो जायेगा। ऐसा होने से आगे आने वाली समय में मिट्टी बदल जायेगी। उसमें से इसी गुण की सुगन्ध निकलने लगेगी और मानव सुगन्ध वाले मानव पैदा होने लगेंगे। ऐसा होने पर मानव को पीड़ा पहुंचाने वाले मानव पैदा होना बन्द हो जायेगा। भ्रष्टाचार व अन्य बिमारियां स्वतः खत्म हो जायेगी। एक खुशहाल मानव समाज का निर्माण होने लगेगा।

मानव प्रकृति जगत में सुगन्ध की साज है अर्थात् सुगन्ध को सजाने वाला प्राणी हैं। मानव अपने ज्ञान से प्रकृति को सुगन्धित करने वाले चर-अचर जीव को पहचान कर उसको बढ़ा सकता है। अपनी वैज्ञानिकता से पदार्थ का शोधन करके उत्पादन को बढ़ा सकता है। शायद प्रकृति ने अपनी इन्ही इच्छाओं की पूर्ति के लिये मानव प्रजाति की उत्पत्ति की होगी। यह कार्य ज्ञानी, वैज्ञानिक ही कर सकते हैं। पर हर मानव सकारात्मक इच्छा धारण करके मानव खुशहाली की सुगन्ध बढ़ा सकता है। जीवन रहते खुशहाली प्रकृति को सुगन्धित करती रहती है और शरीर छोड़कर जाने के बाद उसकी मिट्टी स्थायी रूप से हमेशा यह सुगन्ध छोड़ती रहती है। प्रकृति को इसका लाभ मिलने के साथ ही स्वयं को इसका विशेष लाभ मिलता है। जैसी इच्छा पैदा होती है, वैसा ही एहसास शरीर को होता है। अच्छी सोच रखने से अच्छा एहसास होता है जिसके लिए सोच पैदा की जाती है, उससे भी उसी गुण की सुगन्ध अपने पास आने लगती है। अच्छी सोच से तनाव, बीमारी और मन अशान्त नहीं होता है। सकारात्मक सोच से मानव विपरीत परिस्थितियों में भी सहयोग प्राप्त कर लेता है। उदाहरणार्थ - यदि आप कूड़े में बैठे हो और यह सोचो कि यह कूड़ा है, मैं तो फँस गया ज्यादा देर रहना पड़ेगा तो बिमार हो जाऊँगा। इस सोच से मानव परेशान हो जायेगा घबराहट, बेचैनी होने लगेगी। कूड़े की नकारात्मक ऊर्जा उसके अन्दर आने लगेगी। पर यदि आप यह सोचो कि यह कूड़ा है यह भी प्रकृति को जरूरत है। यह पेड़-पौधों का आहार है। इसके होने से ही हम लोगों का निर्माण होता है। इस सोच से मन अशान्त नहीं होगा और उससे निकलने वाली ऊर्जा उसके लिए सकारात्मक हो जायेगी, जो उसे नुकसान नहीं पहुंचायेगी। व्यक्ति अपने विपरित परिस्थितियों के प्रति सकारात्मक सोच धारण करके उसकी नकारात्मक को खत्म कर सकता है और अपनी इसी सोच से अपने आप को हमेशा एक सुगन्धित प्राणी बनाये रख सकता है। ऐसा करने से वह निरोगी और खुशहाल हमेशा रह सकता है। एक जीवन में ऐसा प्रयास करने के बाद भविष्य में प्रकृति स्वयं विकार मुक्त मानव की रचना करने लगेगी। आप फिर इसी प्रकृति में जन्म लेंगे। इसलिए इसे सुगन्धित करने में अपना सहयोग प्रदान करें इसी आग्रह के साथ।

प्रश्न हमारे
उत्तर श्री अशोक मानव जी के

प्रश्न : गुरू जी। आज का इंसान शिक्षित होने के बावजूद भी आपराधिक कृत्यों में क्यों लिप्त रहता हैं।

उत्तर : जीवन पर लगाये गए प्रतिबन्ध के कारण वह अपने बीजत्व के स्वाभाविक प्रकृति को नहीं पूर्ण कर पाता है। जो उसकी पूर्णता की अनिवार्यता है। उसी को पूर्ण करने हेतु वह उससे परे भी क्रिया कर जाता है। ज्ञान तो किसी कर्म को करने में और अन्य नई तकनीक बताता है। जैसे गेहूं यदि धान की नक़ल करेगा तो वह अपने अस्तित्व को नहीं बचा पाएगा। अर्थात जो जिस स्वभाव का होता है उसी को पूर्ण करता है।

प्रश्न :जीवनयात्रा सरल और कष्टकारी कब होती है ?

उत्तर : अवस्थानुकूल स्वभाव बना लेना जीवन यात्रा का सरलीकरण है और अवस्था के विपरीत स्वभाव रखना जीवनयात्रा को कष्ट में बदलना है।

यदि किसी पाठक के मन में कोई भी सामाजिक या प्राकृतिक प्रश्न उठ रहा है वह उस प्रश्न का निदान चाहते हैं तो पाठक हमें अपना प्रश्न निम्न पते पर भेज सकते हैं। निदान प्रश्न के अगले अंक में दिया जाएगा। आप अपना प्रश्न डाक द्वारा या ईमेल पर भेज सकते हैं

डाक पता : प्रकृति मेल, सर्या आश्रम, मानव नगर (निकट आई.आई. एस.ई),
कल्याणपुर, लखनऊ-226022, उ० प्र०
ईमेल-info@parkritimail.com, editor.prakritimail@gmail.com
9807636072, 7376495194

नैनो थ्रेड्स

मानवेन्द्र
लखनऊ

आज की दुनिया में तकनीक का विकास केवल बड़ी और शक्तिशाली मशीनें बनाने तक सीमित नहीं है। वैज्ञानिक अब पदार्थों को इतना छोटा बनाने की दिशा में काम कर रहे हैं कि उनकी संरचना को परमाणुओं और अणुओं के स्तर पर नियंत्रित किया जा सके। इसी नैनो-स्तरीय विज्ञान से निकलने वाली रोमांचक सामग्रियों में कार्बन नैनोथ्रेड्स (Carbon Nanothreads) का नाम तेजी से उभर रहा है। ये अत्यंत पतले, एक-आयामी कार्बन पदार्थ हैं, जिनमें असाधारण मजबूती, कठोरता और कुछ परिस्थितियों में विद्युत एवं तापीय गुणों की संभावनाएँ देखी गई हैं। नैनो तकनीक सामान्यतः लगभग 1 से 100 नैनोमीटर के स्तर पर पदार्थों की संरचना और गुणों को नियंत्रित करने से जुड़ी है।

साधारण धागे को हम आंखों से देख सकते हैं, लेकिन नैनोथ्रेड की दुनिया बिल्कुल अलग है। कुछ कार्बन नैनोथ्रेड इतने छोटे हो सकते हैं कि उनका व्यास नैनोमीटर के स्तर पर होता है। कार्बन नैनोथ्रेड के एक महत्वपूर्ण वर्ग को वैज्ञानिक डायमंड-लाइक या sp□-बॉन्डेड कार्बन नैनोथ्रेड कहते हैं। इनकी संरचना में कार्बन परमाणु इस प्रकार जुड़े होते हैं कि उनका आंतरिक ढांचा हीरे जैसी बंधन-व्यवस्था से मिलता-जुलता है।

इसे सरल भाषा में समझें तो यह ऐसा है जैसे किसी अत्यंत मजबूत पदार्थ की संरचना को एक बहुत ही पतले, लचीले धागे के रूप में व्यवस्थित कर दिया गया हो। यही विशेषता नैनोथ्रेड्स को भविष्य की उन्नत

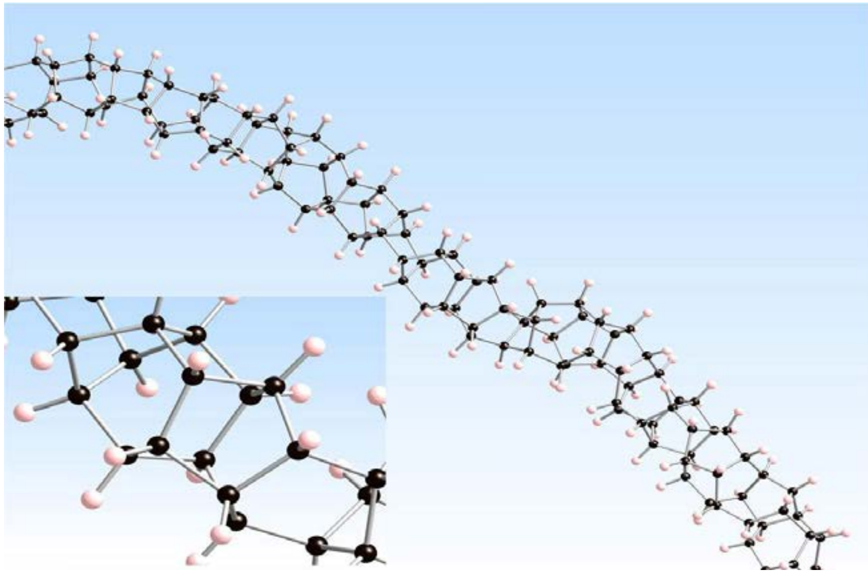

कार्बन नैनोथ्रेड्स के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि 2014 में सामने आई, जब शोधकर्ताओं ने बेंजीन (benzene) को अत्यधिक दबाव में रखकर और नियंत्रित तरीके से दबाव कम करके एक नए प्रकार के क्रिस्टलीय, एक-आयामी कार्बन पदार्थ का निर्माण किया। इस शोध में लगभग 0.6 नैनोमीटर व्यास वाले डायमंड-जैसे कार्बन नैनोथ्रेड्स की संरचना सामने आई।

सामग्री के लिए दिलचस्प बनाती है। नैनोथ्रेड की खोज कैसे हुई?

कार्बन नैनोथ्रेड्स के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि 2014 में सामने आई, जब शोधकर्ताओं ने बेंजीन (benzene) को अत्यधिक दबाव में रखकर और नियंत्रित तरीके से दबाव कम करके एक नए प्रकार के क्रिस्टलीय, एक-आयामी कार्बन पदार्थ का निर्माण किया। इस शोध में लगभग 0.6 नैनोमीटर व्यास वाले डायमंड-जैसे कार्बन नैनोथ्रेड्स की संरचना सामने आई।

इस खोज की खास बात यह थी कि वैज्ञानिकों ने पारंपरिक उच्च-तापमान वाली निर्माण विधि के बजाय रासायनिक प्रतिक्रिया की गति और उच्च दबाव को नियंत्रित करके कार्बन की नई संरचना तैयार की। इससे भविष्य में अलग-अलग प्रकार के नैनोथ्रेड्स बनाने की संभावना खुली।

नैनोथ्रेड्स की सबसे बड़ी विशेषता उनकी संभावित मजबूती और कठोरता है। कंप्यूटर मॉडलिंग और सैद्धांतिक अध्ययनों में कुछ डायमंड नैनोथ्रेड संरचनाओं के लिए अत्यधिक उच्च stiffness और strength का अनुमान लगाया गया है। एक अध्ययन में लगभग 850 GPa stiffness और 26.4 nN strength के सैद्धांतिक मान बताए गए थे। हालांकि, ऐसे आंकड़ों को वास्तविक बड़े पैमाने के उत्पादों के प्रदर्शन के बराबर नहीं समझना चाहिए, क्योंकि प्रयोगशाला से व्यावहारिक उपयोग तक पहुंचने में अभी कई चुनौतियां हैं।

शुद्धता का अंत, मिलावट का स्वर्णकाल

डॉ. विजय गर्ग
मलोट, पंजाब

सरकारों को खाद्य और अन्य उत्पादों की परीक्षण व्यवस्था को मजबूत करना चाहिए, निरीक्षण बढ़ाने चाहिए, जानबूझकर मिलावट करने वालों के लिए प्रभावी दंड सुनिश्चित करना चाहिए और परीक्षण सुविधाओं को आम लोगों के लिए अधिक सुलभ बनाना चाहिए। विशेष रूप से उन मिलावटी गतिविधियों पर कठोर कार्रवाई होनी चाहिए जो उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य को गंभीर नुकसान पहुँचा सकती हैं।

कभी शुद्धता को दैनिक जीवन का एक बुनियादी गुण माना जाता था। चाहे बात भोजन की हो, दवाइयों की, पानी की या घरेलू उपयोग की वस्तुओं की- लोगों को विश्वास होता था कि वे जो कुछ खरीद रहे हैं, वह असली, सुरक्षित और हानिकारक पदार्थों से मुक्त होगा। लेकिन आज बढ़ती मिलावट की समस्या एक चिंताजनक सवाल खड़ा करती हैः क्या हम शुद्धता के अंत और मिलावट के स्वर्णकाल की ओर बढ़ रहे हैं?

मिलावट केवल उपभोक्ताओं के साथ धोखा नहीं है। यह जनस्वास्थ्य, आर्थिक न्याय और सामाजिक विश्वास के लिए गंभीर खतरा बन सकती है। जब भोजन या अन्य उत्पादों में जानबूझकर घटिया अथवा अवांछित पदार्थ मिलाए जाते हैं, तो तत्काल उद्देश्य अधिक मुनाफा कमाना हो सकता है, लेकिन इसकी दीर्घकालिक कीमत पूरे समाज को चुकानी पड़ती है।

भोजन विशेष रूप से मिलावट के प्रति संवेदनशील है। दूध, मसाले, खाद्य तेल, मिठाइयाँ, अनाज, दालें और रोजमर्रा में इस्तेमाल होने वाली अनेक वस्तुएँ मिलावट का शिकार हो सकती हैं। आकर्षक पैकेजिंग

और आधुनिक मार्केटिंग किसी उत्पाद की गुणवत्ता का प्रभाव पैदा कर सकती है, लेकिन वास्तविक सामग्री कुछ और कहानी बता सकती है। आम उपभोक्ता के पास न तो प्रयोगशाला की सुविधाएँ होती हैं और न ही प्रत्येक उत्पाद की गुणवत्ता की जाँच करने का तकनीकी ज्ञान।

समस्या तब और गंभीर हो जाती है जब मिलावट आवश्यक वस्तुओं में हो। भोजन खरीदने वाला व्यक्ति पोषण की अपेक्षा करता है, किसी अदृश्य स्वास्थ्य जोखिम की नहीं। इसी तरह दवा खरीदने वाला मरीज उपचार की उम्मीद करता है, उसकी गुणवत्ता को लेकर अनिश्चितता की नहीं। इसलिए उत्पादक और उपभोक्ता के बीच विश्वास अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मिलावट लगातार क्यों बढ़ रही है? इसके पीछे सबसे बड़े कारणों में से एक मुनाफा है। जब गलत तरीके उत्पादन लागत को कम कर देते हैं या किसी उत्पाद की मात्रा को बढ़ा हुआ दिखाते हैं, तो बेईमान कारोबारी उन लोगों की तुलना में अधिक लाभ कमा सकते हैं जो गुणवत्ता के मानकों को बनाए रखते हैं। कमजोर निगरानी, उपभोक्ताओं में सीमित जागरूकता और अपर्याप्त परीक्षण व्यवस्था इस समस्या को और बढ़ा सकती है।

तकनीक इस मामले में चुनौती भी है और अवसर भी। आधुनिक प्रयोगशालाएँ अनेक प्रकार की मिलावट का अत्यंत सटीक पता लगा सकती हैं। पोर्टेबल परीक्षण उपकरण, डिजिटल ट्रेसेबिलिटी, बेहतर पैकेजिंग तकनीक और डेटा आधारित निरीक्षण प्रणालियाँ आपूर्ति श्रृंखला को अधिक पारदर्शी बना सकती हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस भी उत्पादन, वितरण और उपभोक्ता शिकायतों में असामान्य पैटर्न की पहचान करने में नियामक संस्थाओं की सहायता कर सकती है।

लेकिन केवल तकनीक इस समस्या का समाधान नहीं कर सकती। व्यापार के केंद्र में नैतिकता का होना आवश्यक है। कोई भी

कानून या नियम पूरी तरह ईमानदारी का स्थान नहीं ले सकता। व्यवसायियों को समझना होगा कि मिलावट से प्राप्त अल्पकालिक लाभ जनस्वास्थ्य को नुकसान पहुँचा सकता है, उपभोक्ताओं का विश्वास नष्ट कर सकता है और अंततः पूरे उद्योग की प्रतिष्ठा को प्रभावित कर सकता है।

उपभोक्ताओं की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। जागरूकता बचाव की पहली सीढ़ी है। लोगों को विश्वसनीय स्रोतों से उत्पाद खरीदने चाहिए, लेबल और समाप्ति तिथि की जाँच करनी चाहिए, असामान्य रूप से सस्ते उत्पादों से सावधान रहना चाहिए और मिलावट का संदेह होने पर संबंधित अधिकारियों को सूचित करना चाहिए। उपभोक्ता शिक्षा को जनस्वास्थ्य शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

सरकारों को खाद्य और अन्य उत्पादों की परीक्षण व्यवस्था को मजबूत करना चाहिए, निरीक्षण बढ़ाने चाहिए, जानबूझकर मिलावट करने वालों के लिए प्रभावी दंड सुनिश्चित करना चाहिए और परीक्षण सुविधाओं को आम लोगों के लिए अधिक सुलभ बनाना चाहिए। विशेष रूप से उन मिलावटी गतिविधियों पर कठोर कार्रवाई होनी चाहिए जो उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य को गंभीर नुकसान पहुँचा सकती हैं।

स्कूल और शैक्षणिक संस्थान भी इसमें योगदान दे सकते हैं। बच्चों को केवल अकादमिक विषय ही नहीं, बल्कि लेबल पढ़ने, खाद्य सुरक्षा समझने और भ्रामक दावों को पहचानने जैसे व्यावहारिक कौशल भी सिखाए जाने चाहिए। एक जागरूक उपभोक्ता शोषण का शिकार होने की संभावना को काफी कम कर सकता है।

गहराई से देखें तो समस्या केवल भोजन में मिलावट की नहीं है। यह विश्वास में मिलावट की भी समस्या है। जब लोग अपनी खरीदी जाने वाली हर वस्तु की गुणवत्ता पर संदेह करने लगते हैं, तो सामाजिक विश्वास कमजोर होने लगता है। ईमानदार उत्पादक नुकसान में रहते हैं, उपभोक्ता चिंतित होते हैं और व्यापार तथा समाज के बीच संबंध धीरे-धीरे केवल लेन-देन तक सीमित होने लगता है।

इसलिए "मिलावट का स्वर्णकाल" किसी उपलब्धि का उत्सव नहीं, बल्कि एक चेतावनी है। यदि मुनाफा जिम्मेदारी पर हावी होता रहा तो शुद्धता धीरे-धीरे सामान्य नियम के बजाय एक अपवाद बन सकती है।

समाज के सामने वास्तविक चुनौती इस प्रवृत्ति को उलटने की है। हमें ऐसी संस्कृति विकसित करनी होगी जिसमें गुणवत्ता का सम्मान हो, ईमानदारी को प्रोत्साहन मिले और मिलावट को कोई चतुर व्यावसायिक तरीका नहीं, बल्कि जनविश्वास का अस्वीकार्य उल्लंघन माना जाए।

शुद्धता विलासिता नहीं बननी चाहिए। यह हर व्यक्ति का अधिकार बनी रहनी चाहिए। सुरक्षित भोजन, विश्वसनीय उत्पादों और स्वस्थ समाज का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि हम मिलावट को बढ़ने देते हैं या अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में इस्तेमाल होने वाली वस्तुओं की ईमानदारी और शुद्धता को पुनः स्थापित करने का संकल्प लेते हैं।

न्यायार्थ अपने जीवनसाथी अथवा परिजनों का विरोध भी अनुचित नहीं

सीताराम गुप्ता
पीतमपुरा,दिल्ली

मैथिलीशरण गुप्त जी ने कहा है कि न्यायार्थ अपने बंधु को भी दंड देना धर्म है। बिलकुल उचित है लेकिन हम अपने जीवनसाथी अथवा अग्रजों को तो दंड नहीं दे सकते अतः सत्याग्रह का मार्ग अपनाया जा सकता है। सत्याग्रह का रास्ता अपना कर उन्हें सही मार्ग पर चलने के लिए विवश किया जा सकता है। इस स्थिति में यदि हम थोड़ा-सा भी सुधार कर लें तो ये बहुत बड़ी उपलब्धि होगी।

एक इजराइली लघुकथा पढ़ रहा था। एक व्यक्ति की पत्नी अपनी नौकरानी पर आरोप लगाती है कि उसने उसके घर से एक क़ीमती बरतन चुरा लिया है। पति नौकरानी से बरतन की चोरी के बारे में पूछता है तो वो मना कर देती है। पति को विश्वास हो जाता है कि नौकरानी ने बरतन नहीं चुराया लेकिन पत्नी नहीं मानती। पत्नी कहती है कि मैं इसे अदालत में सजा दिलवाऊँगी। वह अदालत में जाने के लिए तैयार होने लगती है तो पति भी उसके साथ जाने के लिए तैयार होने लगता है। पति को तैयार होते देख पत्नी कहती है कि तुम्हें मेरे साथ जाने की जरूरत नहीं है। मैं खुद निपट लूँगी। मुझे अदालत के क़ायदे-क़ानूनों की सारी जानकारी है। पति ने कहा, ''बेशक तुम अदालत के सारे क़ायदे-क़ानून जानती हो लेकिन हमारी ग़रीब नौकरानी नहीं जानती। मैं उसके साथ जा रहा हूँ। मेरे होते हुए उस पर अन्याय कैसे हो सकता है?'' वर्तमान राजनीतिक व सामाजिक परिप्रेक्ष्य में ये लघुकथा अत्यंत प्रासंगिक लगती है।

सबसे पहले तो ये स्पष्ट होना आवश्यक है कि इस प्रसंग का उद्देश्य पत्नियों को दोषी ठहराना बिलकुल नहीं है। ये मात्र एक कथा है। हमारे यहाँ वास्तव में अधिकतर पत्नियाँ ही अपने पतियों की ग़लत बातों का विरोध करती आई हैं। इस दृष्टि से माँओं की स्थिति थोड़ी भिन्न होती है। अधिकतर माँएँ अपने बेटों की ग़लत बातों का पक्ष लेने में भी पीछे नहीं रहतीं। कथा में एक पति अपनी ग़रीब नौकरानी को अन्याय से बचाने के लिए अपनी पत्नी की अपेक्षा अपनी नौकरानी का साथ देने का निर्णय करता है। प्रश्न उठता है कि क्या हम पति या पत्नी के रूप में किसी को अन्याय से बचाने के लिए अपने जीवनसाथी के विरुद्ध जा सकते हैं? क्या हम हर हाल में सच्चाई के पक्ष में खड़े हो सकते हैं? कुछ लोग होंगे लेकिन अधिकतर के लिए ऐसा सोचना भी संभव नहीं हो सकता। चाहे वे कितने भी ग़लत अथवा दोषी क्यों न हों लेकिन हम हर हाल में प्रायः अपने जीवनसाथी, बच्चों, मित्रों अथवा परिचितों का साथ देते हैं। हम ऐसा क्यों करते हैं?

उनसे प्रेम के कारण? उन्हें विषम परिस्थितियों में बचाने के लिए? उनका सहयोग करने के लिए? लेकिन क्या ऐसा करके हम वास्तव में उन्हें सहयोग देते हैं? उन्हें बचाते हैं? उनसे प्रेम करते हैं? हाँ हम उन्हें बचाते हैं

और उनसे सहयोग करते हैं लेकिन ऐसा करके प्रेम तो हरगिज़ नहीं करते। उनके नैतिक अथवा चारित्रिक विकास में योगदान नहीं करते। किसी की ग़लत बात में उसका साथ देना प्रेम नहीं है। हाँ कोई निहित स्वार्थ हो सकता है। हम किसी न किसी स्वार्थ के लिए ही ऐसा करते हैं। हमें ऐसा ही सिखाया गया होता है कि हम हर हाल में अपनों के पक्ष में बोलें चाहे उन्होंने अपराध ही क्यों न किया हो। आज के राजनीतिक परिदृष्य की बात करें तो वहाँ तो ऐसा ही हो रहा है। पार्टी की ग़लत नीतियों अथवा कार्यों का विरोध तो दूर की बात उनका अंध समर्थन किया जा रहा है। अपनी पार्टी की हर ग़लत-सही बात का समर्थन और दूसरों की सही बात का भी विरोध। क्या हममें इतनी नैतिकता भी नहीं बची कि दूसरों की सही बात को सही न कहें तो कम से कम उसका विरोध तो न करें। सही के विरोध और ग़लत के पक्ष में झंडे तो न उठाएँ।

क्या ऐसा हो सकता है कि हमारे अपनों की सारी बातें सही हों और दूसरों की सारी बातें ही ग़लत हों? हमारी अपनी पार्टी की सारी नीतियाँ सही हों और दूसरी पार्टियों की सारी नीतियाँ ही ग़लत हों? ऐसा नहीं हो सकता लेकिन हम ऐसा ही मानते हैं। हर ग़लत-सही का समर्थन ही पार्टी के प्रति वास्तविक निष्ठा माना जाता है। हम पार्टी की हर ग़लत-सही बात का समर्थन करेंगे तो पार्टी भी हमारे लिए कुछ करेगी। अपनों की हर ग़लत-सही बात का समर्थन ही परस्पर प्रेम का द्योतक हो गया है। ऐसा नहीं करेंगे तो रिश्ते टूट जाएँगे। हम रिश्तों को बचाने के लिए ऐसा कर सकते हैं। ग़लत होने के बावजूद यदि हम अपने जीवनसाथी, बच्चों, मित्रों अथवा अन्य प्रियजनों के साथ होते हैं तो मात्र इसलिए कि हमसे ग़लती हो जाने की स्थिति में वे भी हमारे पक्ष में बोलें व हमारी सहायता के लिए तत्पर रहें। हम प्रायः एक दूसरे को ऐसा ही सहयोग देते हैं लेकिन इसमें जिस चीज़ का सबसे अधिक नुक़सान होता है वह है सच्चाई और ईमानदारी।

वैसे भी जब हमारे परिवार के सदस्य, मित्र अथवा परिजन ग़लत मार्ग पर हों तो उनका बेजा पक्ष लेना वास्तव में उनका अहित करना है। जब तक हमें इसके दुष्प्रभावों का पता चलता बहुत देर हो चुकी होती है। हम इन बातों पर अपने परिजनों अथवा जीवनसाथी से संबंध-विच्छेद तो नहीं कर सकते लेकिन उन्हें समझा ज़रूर सकते हैं। उन्हें किसी का अहित करने अथवा किसी के साथ अन्याय करने के दुष्परिणामों के विषय में सचेत करके किसी का अहित अथवा किसी के साथ अन्याय न करने के लिए सहमत कर सकते हैं। मैथिलीशरण गुप्त जी ने कहा है कि न्यायार्थ अपने बंधु को भी दंड देना धर्म है। बिलकुल उचित है लेकिन हम अपने जीवनसाथी अथवा अग्रजों को तो दंड नहीं दे सकते अतः सत्याग्रह का मार्ग अपनाया जा सकता है। सत्याग्रह का रास्ता अपना कर उन्हें सही मार्ग पर चलने के लिए विवश किया जा सकता है। इस स्थिति में यदि हम थोड़ा-सा भी सुधार कर लें तो ये बहुत बड़ी उपलब्धि होगी।

वास्तव में माता-पिता द्वारा उनके स्वयं के उचित आचरण द्वारा ही बच्चों में उच्च नैतिक गुणों अथवा उदात्त भावों को स्थापित किया जा सकता है। यदि हम अपने बच्चों का ग़लत पक्ष लेना छोड़ दें तो भी वे बहुत अच्छे नागरिक बन सकते हैं। इस मामले में समाज की स्थिति तो किसी भी तरह से ठीक नहीं कही जा सकती।

एक बार मैं अपनी बहन से किसी बात पर नाराज़ था और इसी नाराज़गी के चलते कई महीनों तक उससे मिलने नहीं गया। इसी दौरान दीपावली भी आ गई। पत्नी ने पूछा कि दीदी के यहाँ कब जाओगे? मैंने कहा कि मुझे हरगिज़ नहीं जाना है। उन्होंने कहा कि आपको जाना चाहिए। मैंने कहा कि मुझे नहीं जाना। पत्नी ने आपको जाना चाहिए की बजाय कहा कि आपको जाना है और ज़रूर जाना है। मैं अपनी ज़िद पर अड़ा रहा तो वो भी अपनी ज़िद पर अड़ी रहीं। अगले दिन पूछा, ''आज शाम को जा रहे हो?'' नहीं। उससे अगले दिन खाना बंद। सबको खिला दिया लेकिन ख़ुद नहीं खाया। इस उपवास और सत्याग्रह का परिणाम सुखद ही रहा। अगले दिन सब लोग बहन के घर जा पहुँचे। जब पत्नियाँ पतियों को साड़ियाँ ख़रीदने और आभूषण बनवाने के लिए विवश कर सकती हैं तो उन्हें ग़लत दिशा में जाने से रोक कर सही मार्ग पर चलने के लिए भी विवश कर सकती हैं। कर सकती हैं नहीं करती हैं। जो अनुचित हो उसका निरंतर विरोध और जो उचित हो उसके लिए निरंतर आग्रह अनुचित नही अनिवार्य है।

हमें अपने बच्चों में प्रारंभ से ही ऐसे संस्कार डालने चाहिए जिससे वे हमेशा सही के पक्ष में बोलना और ग़लत अथवा अन्याय का विरोध करना सीख जाएँ। इसके लिए माता-पिता को उनके सामने स्वयं का आदर्श प्रस्तुत करना होगा। कुछ लोग स्वयं तो कभी ईमानदारी और सच्चाई का पालन नहीं करते लेकिन बच्चों को ऐसा करने का उपदेश देते रहते हैं। वे मन से चाहते हैं कि उनके बच्चे ईमानदार और सत्यनिष्ठ बनें। लेकिन उनके मन से चाहने पर भी ऐसा नहीं हो पाता। वास्तव में माता-पिता द्वारा उनके स्वयं के उचित आचरण द्वारा ही बच्चों में उच्च नैतिक गुणों अथवा उदात्त भावों को स्थापित किया जा सकता है। यदि हम अपने बच्चों का ग़लत पक्ष लेना छोड़ दें तो भी वे बहुत अच्छे नागरिक बन सकते हैं। इस मामले में समाज की स्थिति तो किसी भी तरह से ठीक नहीं कही जा सकती। आज यदि किन्हीं दो पड़ोसियों के बीच कोई विवाद अथवा लड़ाई हो जाए तो आसपास के लोग प्रायः या तो दूर खड़े होकर तमाशा देखते हैं या फिर ताक़तवर अथवा प्रभावशाली व्यक्ति के पक्ष में खड़े हो जाते हैं। तटस्थता से ही नहीं किसी ग़लत व्यक्ति का पक्ष लेने से भी बचना अनिवार्य है। इसके अभाव में समाज के किसी भी क्षेत्र में पूर्ण न्याय की स्थापना असंभव है।

मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया: भारत के महान इंजीनियर और राष्ट्रनिर्माता

नमिता वैश्य
गोण्डा

विश्वेश्वरैया की सबसे चर्चित इंजीनियरिंग उपलब्धियों में स्वचालित जलद्वारों का विकास शामिल है। उन्होंने ऐसे स्वचालित बांध बाढ़ द्वार विकसित किए जिन्हें जलाशयों में पानी के स्तर को नियंत्रित करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता था। इन द्वार का पेटेंट भी उनसे जुड़ा है और 1903 में पुणे के निकट खडकवासला जलाशय में इनका उपयोग किया गया। इस व्यवस्था से जलाशय की उपयोगी भंडारण क्षमता बढ़ाने और अतिरिक्त पानी को नियंत्रित करने में मदद मिली।

मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया भारत के उन महान व्यक्तित्वों में से एक हैं जिन्होंने इंजीनियरिंग को केवल पुल, बांध, सड़क और जल-व्यवस्था बनाने का माध्यम नहीं माना, बल्कि उसे राष्ट्र निर्माण का प्रभावशाली साधन बनाया। वे एक कुशल अभियंता होने के साथ-साथ दूरदर्शी प्रशासक, अर्थचिंतक और राष्ट्रनिर्माता भी थे। जल प्रबंधन से लेकर सिंचाई, बाढ़ नियंत्रण, औद्योगीकरण, शिक्षा और आर्थिक विकास तक उनके कार्यों का विस्तार था। उन्होंने ऐसे समय में भारत के आधुनिकीकरण की आवश्यकता पर जोर दिया, जब देश औद्योगिक और तकनीकी दृष्टि से विकसित देशों से बहुत पीछे था। उनके जन्मदिवस 15 सितंबर को भारत में प्रतिवर्ष 'अभियंता दिवस' अर्थात Engineers' Day के रूप में मनाया जाता है। यह दिन केवल एक महान इंजीनियर की स्मृति का अवसर नहीं, बल्कि विज्ञान, तकनीक और राष्ट्र निर्माण के प्रति उनके दृष्टिकोण को याद करने का दिन भी है।

मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का जन्म 15 सितंबर 1861 को तत्कालीन मैसूर राज्य के चिक्कबल्लापुर क्षेत्र के मुद्देनहल्ली गांव में हुआ था। उनके पिता श्रीनिवास शास्त्री संस्कृत के विद्वान थे और आयुर्वेद का भी

ज्ञान रखते थे। पारिवारिक परिस्थितियां बहुत समृद्ध नहीं थीं और जीवन के प्रारंभिक वर्षों में उन्हें कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, लेकिन शिक्षा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता कभी कम नहीं हुई। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने के बाद बेंगलुरु के Central College में अध्ययन किया और वहां से B.A. की उपाधि प्राप्त की। इसके बाद उन्होंने पुणे के College of Science में इंजीनियरिंग की पढ़ाई की। उन्होंने इंजीनियरिंग की परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और 1884 में Bombay Presidency के Public Works Department में Assistant Engineer के रूप में अपने पेशेवर जीवन की शुरुआत की।

सरकारी सेवा के शुरुआती वर्षों में ही उनकी प्रतिभा सामने आने लगी। उन्होंने जलापूर्ति, सिंचाई, जल निकासी और जल प्रबंधन जैसी समस्याओं को केवल तकनीकी चुनौती के रूप में नहीं देखा, बल्कि उन्हें जनता के जीवन और आर्थिक विकास से जोड़कर समझा। सिंध क्षेत्र के सुक्कुर में जलापूर्ति व्यवस्था से संबंधित उनके कार्य ने उन्हें विशेष पहचान दिलाई। वहां उन्होंने सिंधु नदी के पानी को उपयोगी बनाने के लिए एक जटिल जलापूर्ति व्यवस्था तैयार की। जल और सिंचाई से जुड़ी समस्याओं पर उनकी गहरी पकड़ आगे चलकर उनके सबसे महत्वपूर्ण इंजीनियरिंग कार्यों का आधार बनी।

विश्वेश्वरैया की सबसे चर्चित इंजीनियरिंग उपलब्धियों में स्वचालित जलद्वारों का विकास शामिल है। उन्होंने ऐसे automatic weir floodgates विकसित किए जिन्हें जलाशयों में पानी के स्तर को नियंत्रित करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता था। इन gates का patent भी उनसे जुड़ा है और 1903 में पुणे के निकट Khadakvasla Reservoir में इनका उपयोग किया गया। इस व्यवस्था से जलाशय की उपयोगी भंडारण क्षमता बढ़ाने और अतिरिक्त पानी को नियंत्रित करने में मदद मिली। बाद में इसी प्रकार की तकनीक का उपयोग अन्य परियोजनाओं में भी किया गया। उनके जल प्रबंधन संबंधी कार्यों में 'Block System of Irrigation' का भी महत्वपूर्ण स्थान था। इन उपलब्धियों ने उन्हें केवल एक सरकारी इंजीनियर नहीं, बल्कि एक नवोन्मेषी अभियंता के रूप में स्थापित किया।

1908 में हैदराबाद में मूसी नदी की भीषण बाढ़ ने भारी तबाही मचाई। इस घटना के बाद विश्वेश्वरैया को शहर की बाढ़ समस्या के समाधान के लिए तकनीकी सलाह देने के लिए बुलाया गया। उन्होंने बाढ़ नियंत्रण के लिए व्यापक उपायों पर काम किया और जलाशय-आधारित व्यवस्था की दिशा में महत्वपूर्ण सुझाव दिए। आगे चलकर Osman Sagar और Himayat Sagar जैसे जलाशयों ने हैदराबाद की जल व्यवस्था तथा बाढ़ नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस कार्य ने यह दिखाया कि विश्वेश्वरैया किसी समस्या के सामने केवल तत्काल समाधान नहीं खोजते थे, बल्कि उसके दीर्घकालीन प्रभावों को ध्यान में रखकर योजना बनाने पर जोर देते थे।

1909 में वे मैसूर राज्य के Chief Engineer बने और इसके कुछ वर्षों बाद 1912 में उन्हें मैसूर रियासत का दीवान नियुक्त किया गया। वे 1912 से 1918 तक इस पद पर रहे। यह उनके जीवन का वह दौर था जब उनकी इंजीनियरिंग क्षमता प्रशासनिक दृष्टि और आर्थिक सोच के साथ जुड़ गई। उन्होंने मैसूर को केवल प्रशासनिक रूप से चलाने के बजाय उसे शिक्षा, उद्योग, बैंकिंग, व्यापार और आधारभूत संरचना के क्षेत्र में आगे ले जाने का प्रयास किया। उनके कार्यकाल में औद्योगिक विकास को विशेष महत्व मिला और मैसूर को आधुनिक तथा आर्थिक रूप से अधिक सक्षम राज्य बनाने की दिशा में कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए। उनके योगदान के कारण उन्हें बाद में 'Father of Modern Mysore' के रूप में याद किया गया।

मैसूर के विकास में शिक्षा को विश्वेश्वरैया ने विशेष महत्व दिया। उनका मानना था कि किसी भी समाज की वास्तविक प्रगति केवल सड़कों और कारखानों से नहीं हो सकती; उसके लिए शिक्षित और प्रशिक्षित मानव संसाधन भी आवश्यक है। 1916 में University of Mysore की स्थापना हुई। इसके पीछे तत्कालीन महाराजा कृष्णराज वाडियार चतुर्थ और उनके दीवान विश्वेश्वरैया की महत्वपूर्ण भूमिका थी। यह भारत के शुरुआती विश्वविद्यालयों में से एक था और तत्कालीन ब्रिटिश शासित क्षेत्रों के बाहर स्थापित होने वाला पहला विश्वविद्यालय था। विश्वेश्वरैया की दृष्टि में उच्च शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री देना नहीं, बल्कि समाज और उद्योग की आवश्यकताओं के अनुरूप ज्ञान और कौशल विकसित करना भी था।

उनके प्रशासनिक कार्यकाल में उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए भी अनेक कदम उठाए गए। मैसूर में Sandalwood Oil Factory और Soap Factory जैसी

भद्रावती में Iron and Steel Works की स्थापना और उसके विकास में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने State Bank of Mysore की स्थापना तथा व्यापार और उद्योग को प्रोत्साहित करने वाली संस्थागत व्यवस्थाओं को भी आगे बढ़ाया। उनका स्पष्ट विश्वास था कि किसी देश की आर्थिक मजबूती के लिए केवल कृषि पर्याप्त नहीं है; उद्योग, व्यापार, तकनीकी शिक्षा और आधुनिक अवसंरचना का समान रूप से विकास आवश्यक है।

औद्योगिक इकाइयों के विकास को प्रोत्साहन मिला। भद्रावती में Iron and Steel Works की स्थापना और उसके विकास में भी उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने State Bank of Mysore की स्थापना तथा व्यापार और उद्योग को प्रोत्साहित करने वाली संस्थागत व्यवस्थाओं को भी आगे बढ़ाया। उनका स्पष्ट विश्वास था कि किसी देश की आर्थिक मजबूती के लिए केवल कृषि पर्याप्त नहीं है; उद्योग, व्यापार, तकनीकी शिक्षा और आधुनिक अवसंरचना का समान रूप से विकास आवश्यक है।

कृष्णराज सागर अर्थात KRS Dam भी विश्वेश्वरैया की इंजीनियरिंग विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा है। कावेरी नदी पर स्थित इस विशाल परियोजना का निर्माण उनके तकनीकी नेतृत्व से गहराई से जुड़ा रहा। परियोजना का काम उनके दीवान बनने से पहले शुरू हो चुका था और बाद के वर्षों में पूरा हुआ। बांध और उससे जुड़े जल प्रबंधन ने मैसूर क्षेत्र में सिंचाई, पेयजल और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। KRS परियोजना उस समय एशिया की सबसे बड़ी जलाशय परियोजनाओं में गिनी जाती थी और यह दक्षिण भारत के जल संसाधन विकास के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

विश्वेश्वरैया की प्रतिभा केवल मैसूर तक सीमित नहीं रही। उन्होंने भारत के विभिन्न हिस्सों में जलापूर्ति, सिंचाई और जल निकासी से जुड़ी परियोजनाओं के लिए तकनीकी सलाह दी। अदन में जलापूर्ति और drainage व्यवस्था से जुड़े उनके कार्य का भी उल्लेख मिलता है। इसी प्रकार भारत के अलग-अलग क्षेत्रों में जल संसाधनों के बेहतर उपयोग और शहरी सुविधाओं के विकास के लिए उनके अनुभव का लाभ लिया गया। उनके लिए इंजीनियरिंग का अर्थ केवल किसी परियोजना को पूरा कर देना नहीं था, बल्कि उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम और वैज्ञानिक उपयोग सुनिश्चित करना था।

विश्वेश्वरैया की सोच में औद्योगीकरण का विशेष स्थान था। वे मानते थे कि यदि भारत को आर्थिक रूप से मजबूत और आत्मनिर्भर बनना है तो उसे आधुनिक उद्योगों, तकनीकी शिक्षा और वैज्ञानिक सोच को अपनाना होगा। उन्होंने अपने विचारों को केवल भाषणों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि पुस्तकों के माध्यम से भी सामने रखा। उनकी प्रमुख कृतियों में **Reconstructing India**, जो 1920 में प्रकाशित हुई, और **Planned Economy for India**, जो 1934 में प्रकाशित हुई, विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इन पुस्तकों में उन्होंने भारत के आर्थिक विकास, औद्योगीकरण, शिक्षा, उत्पादकता और योजनाबद्ध विकास की आवश्यकता पर विचार प्रस्तुत किए। उनकी आर्थिक सोच स्वतंत्र भारत में नियोजित विकास की बहस से कई दशक पहले ही सामने आ चुकी थी।

उनकी एक अन्य महत्वपूर्ण कृति "Memoirs of My Working Life" है, जिसमें उन्होंने अपने लंबे पेशेवर जीवन और कार्यानुभवों का विवरण दिया।

उल्लेखनीय बात यह है कि उन्होंने अपने जीवन के व्यक्तिगत विवरणों की अपेक्षा अपने काम और सार्वजनिक सेवा को अधिक महत्व दिया। भारत सरकार के एक विवरण के अनुसार उनकी यह आत्मकथा उन्होंने लगभग 90 वर्ष की आयु में लिखी और उसका आरंभ भी उनके 1884 में Assistant Engineer के रूप में सरकारी सेवा में प्रवेश से होता है। इससे उनके व्यक्तित्व की एक विशेषता सामने आती है—वे अपने जीवन को उपलब्धियों की व्यक्तिगत कहानी की अपेक्षा कार्य और जिम्मेदारी की यात्रा के रूप में देखते थे।

विश्वेश्वरैया के लिए अनुशासन और कार्य के प्रति निष्ठा केवल व्यक्तिगत गुण नहीं थे, बल्कि उनके पूरे जीवन-दर्शन का हिस्सा थे। वे समय की पाबंदी, योजनाबद्ध कार्य और उच्च गुणवत्ता के समर्थक थे। उनका मानना था कि संसाधनों का अपव्यय और कार्य में लापरवाही किसी भी राष्ट्र की प्रगति में बाधा बन सकती है। उनका प्रसिद्ध विचार "Industrialise or Perish" उनकी औद्योगिक सोच की तीव्रता को दर्शाता है। वे चाहते थे कि भारत अपने मानव संसाधन, प्राकृतिक संसाधन और तकनीकी क्षमता का बेहतर उपयोग करे तथा दुनिया के औद्योगिक देशों के बराबर खड़ा हो।

उनकी असाधारण सेवाओं के लिए उन्हें अनेक सम्मान प्राप्त हुए। ब्रिटिश शासन के दौरान उन्हें Knight Commander of the Order of the Indian Empire यानी KCIE की उपाधि प्रदान की गई, जिसके बाद वे 'Sir M. Visvesvaraya' के नाम से प्रसिद्ध हुए। स्वतंत्र भारत ने 1955 में उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया। यह सम्मान उनके इंजीनियरिंग, औद्योगिक विकास और राष्ट्र निर्माण में लंबे योगदान की राष्ट्रीय मान्यता था।

उनका जीवन असाधारण रूप से लंबा रहा। वे 14 अप्रैल 1962 को बेंगलुरु में 100 वर्ष से अधिक आयु में निधन तक देश के विकास से जुड़े विषयों में रुचि बनाए रहे। उनकी दीर्घायु जितनी उल्लेखनीय थी, उतनी ही उल्लेखनीय उनकी कार्य के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता थी। वे उम्र को सक्रिय सोच और राष्ट्रहित के कार्यों के लिए बाधा नहीं मानते थे। उनके व्यक्तित्व में अनुशासन, परिश्रम, तकनीकी दक्षता और सार्वजनिक जीवन के प्रति जिम्मेदारी का अद्भुत मेल दिखाई देता है।

उनका जीवन असाधारण रूप से लंबा रहा। वे 14 अप्रैल 1962 को बेंगलुरु में 100 वर्ष से अधिक आयु में निधन तक देश के विकास से जुड़े विषयों में रुचि बनाए रहे। उनकी दीर्घायु जितनी उल्लेखनीय थी, उतनी ही उल्लेखनीय उनकी कार्य के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता थी। वे उम्र को सक्रिय सोच और राष्ट्रहित के कार्यों के लिए बाधा नहीं मानते थे। उनके व्यक्तित्व में अनुशासन, परिश्रम, तकनीकी दक्षता और सार्वजनिक जीवन के प्रति जिम्मेदारी का अद्भुत मेल दिखाई देता है।

मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया की सबसे बड़ी विरासत किसी एक बांध, कारखाने या संस्थान में नहीं, बल्कि उस सोच में है जिसे उन्होंने अपने कार्यों के माध्यम से स्थापित किया। उन्होंने दिखाया कि इंजीनियरिंग केवल गणना, मशीन और निर्माण की विद्या नहीं है; इसका अंतिम उद्देश्य मानव जीवन को बेहतर बनाना और समाज की वास्तविक समस्याओं का समाधान करना भी है। पानी की कमी हो, बाढ़ का खतरा हो, सिंचाई की आवश्यकता हो, उद्योगों का अभाव हो या तकनीकी शिक्षा की कमी—उन्होंने हर समस्या को विकास की दृष्टि से देखने का प्रयास किया।

आज भारत जब विशाल बांधों, एक्सप्रेसवे, मेट्रो रेल, डिजिटल अवसंरचना, अंतरिक्ष कार्यक्रमों और अत्याधुनिक औद्योगिक परियोजनाओं के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ रहा है, तब विश्वेश्वरैया की सोच पहले से अधिक प्रासंगिक दिखाई देती है। उन्होंने एक ऐसे भारत की कल्पना की थी जो ज्ञान, तकनीक, उद्योग और अनुशासन के बल पर अपने विकास का रास्ता स्वयं तैयार करे। यही कारण है कि 15 सितंबर को मनाया जाने वाला अभियंता दिवस केवल उनके जन्मदिवस का स्मरण नहीं है। यह उस विचार का सम्मान है कि विज्ञान और तकनीक तभी सार्थक हैं जब उनका उपयोग समाज और राष्ट्र के व्यापक हित में किया जाए।

मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया ने अपने जीवन से यह प्रमाणित किया कि प्रतिभा तभी ऐतिहासिक शक्ति बनती है जब उसके साथ अनुशासन, परिश्रम और सार्वजनिक उद्देश्य जुड़ा हो। वे इंजीनियर थे, लेकिन उनकी दृष्टि केवल इंजीनियरिंग तक सीमित नहीं थी। वे प्रशासक थे, लेकिन उनका प्रशासन केवल सरकारी व्यवस्था तक सीमित नहीं था। वे अर्थचिंतक थे, लेकिन उनकी आर्थिक सोच का केंद्र राष्ट्र की उत्पादक क्षमता और आत्मनिर्भरता थी। उनका जीवन इसलिए आज भी प्रेरणा देता है क्योंकि उन्होंने अपने ज्ञान को व्यक्तिगत सफलता का साधन बनाने के बजाय राष्ट्र निर्माण का माध्यम बनाया। भारत के इंजीनियरों के लिए उनका जीवन एक आदर्श है और देश के लिए उनकी विरासत इस विश्वास का प्रतीक है कि दूरदृष्टि, विज्ञान और कठोर परिश्रम मिल जाएं तो एक व्यक्ति भी विकास की दिशा बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

ध्वजारोहण या ध्वज फहराना : 80वें स्वतंत्रता दिवस पर जानिए दोनों में फर्क

सुनील कुमार महला
जोधपुर, राजस्थान

राष्ट्रीय ध्वज साफ-सुथरा, सही स्थिति में और सम्मानजनक एवं प्रमुख स्थान पर प्रदर्शित होना चाहिए। केसरिया पट्टी हमेशा ऊपर की ओर होनी चाहिए और ध्वज उल्टा नहीं लगाया जा सकता। ध्वज फटा, मैला या अस्त-व्यस्त नहीं होना चाहिए तथा उसे जमीन, फर्श या पानी को स्पर्श नहीं करना चाहिए। राष्ट्रीय ध्वज का उपयोग सजावट, झालर, बंटिंग आदि के रूप में नहीं किया जा सकता।

15 अगस्त 2026 का दिन प्रत्येक भारतीय के लिए गौरव, उत्साह और देशभक्ति का अवसर है। इस वर्ष हम भारत की स्वतंत्रता की 79वीं वर्षगांठ पूरी होने के बाद 80वाँ स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं। पाठक जानते हैं कि 15 अगस्त 1947 को भारत ने औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता प्राप्त की थी और इसी ऐतिहासिक दिन की स्मृति में प्रत्येक वर्ष स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है।स्वतंत्रता दिवस का सबसे महत्वपूर्ण और भावनात्मक क्षण राष्ट्रीय ध्वज से जुड़ा होता है। तिरंगा केवल तीन रंगों से बना एक ध्वज नहीं, बल्कि यह भारत की स्वतंत्रता, संप्रभुता, एकता, विविधता और असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान का प्रतीक है। भारत का वर्तमान राष्ट्रीय ध्वज 22 जुलाई 1947 को संविधान सभा द्वारा अपनाया गया था। जब 15 अगस्त को तिरंगा आकाश में लहराता है, तो उसके साथ करोड़ों भारतीयों की आशाएं, आकांक्षाएं और राष्ट्र के प्रति कर्तव्यबोध भी जुड़ जाता है।

राष्ट्रीय ध्वज से जुड़े नियमों में समय के साथ महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। 26 जनवरी 2002 से भारतीय ध्वज संहिता में बदलाव कर नागरिकों को अपने घर, कार्यालय और प्रतिष्ठानों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने का अधिकार दिया गया। इससे पहले आम नागरिकों के लिए राष्ट्रीय ध्वज फहराने पर कई प्रतिबंध थे। बाद में 30 दिसंबर 2021 के संशोधन के माध्यम से राष्ट्रीय ध्वज के निर्माण में हाथ से काते और हाथ से बुने कपड़ों के साथ-साथ मशीन से बने कपास, पॉलिएस्टर, ऊन, रेशम और खादी के बंटिंग के उपयोग की अनुमति दी गई। इस प्रकार अब केवल खादी से बने ध्वज तक यह व्यवस्था सीमित नहीं रही।इसके बाद 20 जुलाई 2022 को भारतीय ध्वज संहिता में एक और महत्वपूर्ण संशोधन किया गया। इसके तहत किसी नागरिक के घर पर राष्ट्रीय ध्वज को दिन और रात दोनों समय फहराने की अनुमति दी गई। इसलिए सूर्यास्त के बाद घर पर तिरंगा उतारना अनिवार्य नहीं है। हालांकि, रात में ध्वज फहराते समय उसकी गरिमा और सम्मान का पूरा ध्यान रखना आवश्यक है। राष्ट्रीय ध्वज साफ-सुथरा, सही स्थिति में और सम्मानजनक एवं प्रमुख स्थान पर प्रदर्शित होना चाहिए। केसरिया पट्टी हमेशा ऊपर की ओर होनी चाहिए और ध्वज उल्टा नहीं लगाया जा सकता। ध्वज फटा, मैला या अस्त-व्यस्त नहीं होना चाहिए तथा उसे जमीन, फर्श या पानी को स्पर्श नहीं करना चाहिए। राष्ट्रीय ध्वज का उपयोग सजावट, झालर, बंटिंग आदि के रूप में नहीं किया जा

सकता।आज अधिकार और जनभागीदारी की भावना को आगे बढ़ाते हुए 'हर घर तिरंगा' अभियान के माध्यम से नागरिकों को राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्मान और राष्ट्रभक्ति व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। यह अभियान तिरंगे को केवल सरकारी संस्थानों तक सीमित रखने के बजाय प्रत्येक नागरिक के घर और जीवन से जोड़ने का माध्यम बना है।

हालांकि, यहां यह समझना भी जरूरी है कि 'ध्वजारोहण' और 'ध्वज फहराना' शब्दों का प्रयोग अक्सर एक-दूसरे के स्थान पर कर दिया जाता है, लेकिन इनके अर्थ और परंपरागत प्रयोग में अंतर है। ध्वजारोहण का शाब्दिक अर्थ है-ध्वज को नीचे से ऊपर उठाकर निर्धारित ऊंचाई तक ले जाना और स्थापित करना। वहीं ध्वज फहराने का आशय है-पोल के ऊपर स्थित ध्वज को खोलकर अथवा फैलाकर हवा में लहराना। इस दृष्टि से दोनों क्रियाओं की प्रकृति अलग है। भारत के राष्ट्रीय पर्वों में इस अंतर को समझने के लिए 15 अगस्त और 26 जनवरी का उदाहरण सबसे उपयुक्त है। 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री लाल किले की प्राचीर से राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं। इसके विपरीत 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति राष्ट्रीय ध्वज का ध्वजारोहण करते हैं। इसलिए सामान्यतः कहा जाता है कि 15 अगस्त को ध्वज फहराया जाता है और 26 जनवरी को ध्वजारोहण किया जाता है।इसके पीछे दोनों राष्ट्रीय पर्वों की ऐतिहासिक परिस्थितियां भी महत्वपूर्ण हैं। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ था। उस समय ब्रिटिश शासन के प्रतीकात्मक रूप से हटने और स्वतंत्र भारत के उदय का संदेश देते हुए तिरंगे को ऊपर फहराया गया। दूसरी ओर, 26 जनवरी 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ और देश एक संप्रभु लोकतांत्रिक गणराज्य बना। इसलिए गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रपति द्वारा ध्वजारोहण की परंपरा स्थापित हुई। हालांकि सामान्य बोलचाल में 'ध्वजारोहण' और 'ध्वज फहराना' कई बार समान अर्थ में प्रयुक्त होते हैं और सरकारी अथवा सार्वजनिक कार्यक्रमों में भी दोनों शब्द सुनने को मिल सकते हैं। लेकिन राष्ट्रीय पर्वों की विशिष्ट संवैधानिक एवं ऐतिहासिक परंपरा को ध्यान में रखते हुए 15 अगस्त के लिए 'राष्ट्रीय ध्वज फहराना' और 26 जनवरी के लिए 'राष्ट्रीय ध्वजारोहण' कहना अधिक सटीक और प्रचलित है। भारत सरकार के राष्ट्रीय पोर्टल पर भी स्वतंत्रता दिवस के संदर्भ में 15 अगस्त के अवसर पर तिरंगे के फहराने और ध्वज-समारोह का उल्लेख मिलता है।

दरअसल, तिरंगे का फहरना केवल एक औपचारिक क्रिया नहीं है। यह उस संघर्ष की याद दिलाता है जिसमें असंख्य ज्ञात-अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। जब तिरंगा हवा में लहराता है, तो उसमें शहीद भगत सिंह का साहस, महात्मा गांधी का सत्य और अहिंसा का संदेश, सुभाष चंद्र बोस का अदम्य राष्ट्रवाद, सरदार पटेल का राष्ट्रीय एकीकरण और असंख्य वीरों का त्याग दिखाई देता है। यही कारण है कि स्वतंत्रता दिवस का ध्वज समारोह भारतीय जनमानस के लिए अत्यंत भावनात्मक महत्व रखता है।

80वाँ स्वतंत्रता दिवस इसलिए भी विशेष है कि यह हमें केवल अतीत का गौरव याद करने का अवसर नहीं देता, बल्कि भविष्य के भारत के निर्माण का संकल्प भी कराता है। स्वतंत्रता केवल विदेशी शासन से मुक्ति का नाम नहीं; वास्तविक स्वतंत्रता तभी सार्थक है जब देश का प्रत्येक नागरिक समान अवसर, सम्मान, सुरक्षा और विकास का अनुभव करे। तिरंगे के नीचे खड़े होकर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों का भी ईमानदारी से निर्वहन करेंगे।

अंततः यही कहना उचित होगा कि 15 अगस्त का तिरंगा हमें संदेश देता है कि स्वतंत्रता बड़ी कीमत पर मिली है और इसकी रक्षा करना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। ध्वज का फहरना हमारे स्वतंत्र अस्तित्व का प्रतीक है, जबकि उसके प्रति सम्मान हमारी राष्ट्रीय चेतना का परिचायक है। इस 80वें स्वतंत्रता दिवस पर आइए, तिरंगे को केवल सलामी ही न दें, बल्कि उसके मूल्यों-एकता, अखंडता, समानता, त्याग और राष्ट्रप्रेम को अपने जीवन में उतारने का संकल्प भी लें। जय हिंद! जय भारत!

जो जान पाये जो नही जान पाये

उमेश मानव

" हम समझते है, हम जानते है " यह कथन अकसर सुनने में आता है। कुछ तो यह भी कहते मिल जाते है कि ' अरे हम सब जानते हैं '। वस्तुतः कोई कुछ नही जानता। गुरुवर कहते है कि जो हम जानने की बात करते है या जो हम समझते है कि हम समझ रहे है। वह केवल व्यक्ति कि स्वयं की ही समझ होती है। व्यक्ति अपने ही बारे में जान रहा होता है। गुरुवर कहते है कि हम दूसरों में अपनी ही अवस्था को जान रहे होते है। मतलब कि जितनी अवस्था मेरी दूसरे में होती है हम उतना ही जान पाते है। जो हम जान पा रहे है वह हमारी ही एक अवस्था है न की दूसरे कि अवस्था। गुरुवर बताते है कि कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे की अवस्था को जान ही नहीं सकता है। प्रकृति के सिद्धान्त के अनुसार किसी को भी एक दूसरे की अवस्था के अंदर हस्तक्षेप करने का अधिकार नही है। ' फिर ये जो कहा जाता है कि हम जानते है , इससे क्या अर्थ निकलता है ? इसका अर्थ यह है कि हम जो किसी के बारे में जान रहे है। जो हम समझ बना रहे है वह हमारी अवस्था , हमारे सोच-विचार , हमारी धारणा पर निर्भर करता है। हम जैसे होते है वैसी दूसरों के लिए हमारी सोच बनती है। यह भी कि जब प्राकृतिक सिद्धान्त ही ऐसा नही है तब हम दूसरों की अवस्था के बारे में कैसे जान पायेंगे। तो जो हम जान पा रहे है वह कभी किसी समय हमारी ही अवस्था दूसरे मे छिपी हुई होगी , जिसका एहसास अब हमे हो रहा है। जो हम जान पा रहे है वह हमारी ही चीज है , दूसरे का हम कुछ नही जान पा रहे है। न जान ही सकते है। जो जान पाये वह अपना ही , दूसरे का कुछ नही जान पाये।

थोड़ा विचार करें तो हम देख पायेंगे कि यदि हर व्यक्ति दूसरे में अपनी ही अवस्था न देख रहा होता तो सभी के विचार या राय किसी व्यक्ति के बारे में एक जैसे ही होते। परन्तु हम देखते है कि यहाँ तो एक व्यक्ति के बारे में सभी की अलग-अलग राय होती है। जब व्यक्ति एक ही है तब इतनी भिन्नता कैसे ? यह सिर्फ इसलिए क्योंकि बाकी सब अपनी अपनी अवस्था का ही एहसास कर रहे होते है। इस आधार पर वे दूसरो को अच्छी तरह जानने और समझने का दावा कर रहे होते है। इससे यह स्पष्ट होता है कि जो कुछ भाव जैसे

थोड़ा विचार करें तो हम देख पायेंगे कि यदि हर व्यक्ति दूसरे में अपनी ही अवस्था न देख रहा होता तो सभी के विचार या राय किसी व्यक्ति के बारे में एक जैसे ही होते। परन्तु हम देखते है कि यहाँ तो एक व्यक्ति के बारे में सभी की अलग-अलग राय होती है। जब व्यक्ति एक ही है तब इतनी भिन्नता कैसे ? यह सिर्फ इसलिए क्योंकि बाकी सब अपनी अपनी अवस्था का ही एहसास कर रहे होते है।

क्रोध , घृणा , आनन्द आदि जो कुछ भी हममें बन रहा है वह उसका नही हमारा ही है। वैसे तो रासायनिक यात्रा में अच्छा बुरा कुछ नहीं होता। फिर भी जो भी एहसास हमें हो रहा है अच्छा या बुरा वह हमारा अपना ही है। दूसरा तो अपनी स्थिति में गतिमान है। यह विषय भी अनोखा ही है। एक ही व्यक्ति को लोग कितने अलग-अलग नजरिये से देखते है ? जब व्यक्ति एक ही है तो सभी को एक सा ही नजर आना चाहिए। परन्तु ऐसा नही होता सभी की राय अलग-अलग होती है। रासायनिक गुणात्मकता और अवस्थाओं का यह प्राकृतिक नियम है। एक बात और भी निकल कर आती है कि लोग अक्सर अपने करीबी मित्र या रिश्तेदार के लिए कह देते है कि हम उन्हें अच्छे से , पूरी तरह से जानते हैं। स्वयं में विचार किया जाये तो क्या सच में ऐसा है ? दूसरों को तो रहने ही दें हम स्वयं के बारे में भी अच्छे से नहीं जानते होंगे।

यहाँ गुरुवर द्वारा बताया गया एक आध्यात्मिक विज्ञान भी बतलाते चला जायें जिसमें गुरुवर बताते है कि हम उन्हीं से सम्पर्क में आते है जिनसे हमारा कुछ रासायनिक लेन देन रहता है। ऐसे व्यक्ति एक दूसरे के सम्पर्क में आने के बाद , जिसको जिससे लाभ लेना होता है वह लेता है और जिसको लाभ देना होता है उसके ह्रदय में दूसरे के प्रति लगाव , दया , आकर्षण के कैसे भी भाव बने वह रासायीनक लेनदेन पूर्ण करने के लिए बनेगा। अब इतने समय भर में जब तक लेन देन होना है तब तक व्यक्ति को यह लग सकता है कि यही मेरा सबकुछ है और अब हम एक दूसरे से कभी जुदा नहीं होंगे। परन्तु जैसे ही लेन देन पूरा होगा। दोनो व्यक्ति स्वयं से ही सहज अलगाव बना लेते है। गुरुवर बताते है कि जितना जिसमे जिसकी अवस्था छिपी होती है उतने भर के लिए व्यक्ति साथ आता है। व्यक्ति दूसरे व्यक्ति में ही छिपी अपनी अवस्था का आनन्द लेता है। भ्रम में वह यह सोचता है कि वह तो दूसरे की अवस्था का भोग कर रहा है। जो कि हो ही नही सकता। गुरुवर बताते है कि दूसरे की अवस्था तो प्रकृति का रहस्य है जो उजागर नहीं हो सकता। इसलिए सभी को अपने को सहज भाव में रखते हुए जीवन निर्वाह करना चाहिए। किसी से द्वेष या लगाव नही बस सहज मित्रता के भाव में रहते हुए स्वतंत्र अवस्था बनानी चाहिए। यही स्वतंत्र भाव में दूसरे को भी रहने देना चाहिए। इसी में आनन्दपूर्ण जीवन यात्रा का मर्म छिपा है। यह न समझकर जैसे ही हम अधिकार जताना शुरू कर देते है। ज्यों ही हक की बात करते है , दूसरे के शोषण में आनन्द लेते है , स्वतंत्रता का हनन करते है वैसे ही दबाव बनना शुरू हो जाता है।

गुरुवर कहते है कि जब हम सहज नही रहते। स्वाभाविक रूप से जो रासायनिक मिलान होना होता है उसे अपने अनुसार , अपनी इच्छा से और जल्दी करने का प्रयास करते है तो वहाँ एक गैप आ जाता है। क्योंकि अब वह सहज गति से नही बलपूर्वक किया गया प्रयास हो गया है। ऐसे में घर्षण से हवा बनती है जो एक खाली स्थान का निर्माण कर देती है। जिसको गैप कहा जा रहा है। यह गैप एक प्रकार के तनाव को दबाव को जन्म देता है। यह स्थिति जीवन में कठिनाईयों को जगह देती है। व्यक्ति के जीवन में अप्रिय चीजें होने लगती है। प्रकृति के नियम के तहत हर एक चीज का समय निश्चित होता है। हम किसी भी कारणवश प्रयास करके किसी अमुक चीज को जल्दी प्राप्त करने का प्रयास जब करते है तो घर्षण होता है जो हमारे जीवन के अगल अलग पहलुओं में तनाव बन कर दिखता है। इस प्रकार जिस भी आध्यात्मिक ऊर्जा से कृपा पाने की उम्मीद हम रखते है , यदि रासायनिकता के अनुसार कृपा प्राप्त करना लिखा होगा तो सहज रूप में अवश्य होगा। परन्तु ऐसा नहीं है तो फिर आप लाख प्रयास कर लो वह कृपा आपको नहीं मिलेगी और अन्यथा प्रयास तनाव को जन्म देने लगता है और जीवन में उथल-पुथल शुरू हो जाता है।

गुरुवर प्रकृति रहस्य को समझाते हुए बताते है कि प्रार्थना , ध्यान , सिद्धि आदि में भी यही अवस्था का नियम लागू होता है। हम जिनकी प्राप्ति के लिए , अनुकम्पा के लिए जप , प्रार्थना आदि करते है उनमें मेरी कोई। छिपी अवस्था पहले की होगी तभी हम उनसे किसी प्रकार का फल प्राप्त कर पायेंगे अन्यथा नहीं। यह देखा भी जा सकता है कि तप , जप , ध्यान तो बहुत से लोग करते है। परन्तु फल या किसी प्रकार की सिद्धि मुश्किल से ही एक-दो को मिलती है। किसे मिलती है उन्हीं को जिनकी अवस्था रासायनिक लेन-देन कि होती है। इस बात से वे लोग सावधान हो सकते है जो ढोंगी बाबाओं के चक्कर मे फंस जाते है। ऐसे भी इन बातों से यह समझा जा सकता है कि किसी भी प्रकार का कष्ट अपने को देने की कोई जरूरत नही है। जो आपके मिलान की अवस्था है वह आपसे स्वतः ही मिल लेगी , किसी भी प्रकार की अनावश्यक कोशिश व्यर्थ ही है। गुरुश्री तो यह तक कहते है कि मेरे पास भी लोग आते है और कृपा करने को कहते है। ऐसे कुछ नही प्राप्त नही होता , जिनको कृपा प्राप्त होती है वह उन्हीं की कोई अवस्था मुझे में रहती है जो कृपा के रूप में उन्हें प्राप्त होती दिखती है। न मुझे से कोई कुछ ले सकता है और न ही मैं किसी को कुछ दे सकता हूं (हालांकि मैं इसे नही मानता)। यह केवल अपकी अवस्था का आप से मिलान ही है।

शिक्षा को लौटानी होगी मानवीय संवेदना

अवनीश कुमार गुप्ता
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

भारत की शिक्षा व्यवस्था लंबे समय से ऐसी दोहरी चुनौती का सामना कर रही है जिसमें एक ओर वैश्विक स्तर पर प्रतिभाशाली युवाओं का निर्माण करने की आकांक्षा है, तो दूसरी ओर प्रवेश परीक्षाओं, कोचिंग उद्योग और अंकों की अंधी प्रतिस्पर्धा ने शिक्षा के मूल उद्देश्य को सीमित कर दिया है। हाल के वर्षों में प्रश्नपत्र लीक, परीक्षा अनियमितताओं, मानसिक तनाव, छात्र आत्महत्याओं और महंगी कोचिंग व्यवस्था ने यह स्पष्ट संकेत दिया है कि केवल परीक्षा प्रणाली में सुधार पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि संपूर्ण शैक्षिक दर्शन पर पुनर्विचार आवश्यक है। यह तथ्य है कि भारत ने विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, प्रशासन और उद्यमिता जैसे क्षेत्रों में विश्वस्तरीय प्रतिभाएँ दी हैं। किंतु यह भी उतना ही सत्य है कि इन सफलताओं के पीछे लाखों ऐसे विद्यार्थी भी हैं जो संसाधनों की कमी, असमान अवसरों और अत्यधिक प्रतिस्पर्धा के कारण अपनी वास्तविक क्षमता तक पहुँच ही नहीं पाते। इसलिए अब शिक्षा को केवल चयन की प्रक्रिया नहीं, बल्कि प्रत्येक विद्यार्थी की क्षमता के विकास की प्रक्रिया के रूप में देखने की आवश्यकता है।

यह मान लेना कि तीन या चार घंटे की एक परीक्षा किसी विद्यार्थी की बुद्धिमत्ता, रचनात्मकता, नैतिकता, नेतृत्व क्षमता और जीवन कौशल का अंतिम प्रमाण बन सकती है, आधुनिक शिक्षा विज्ञान की दृष्टि से भी सीमित सोच है। परीक्षा आवश्यक है, किंतु उसे शिक्षा का पर्याय बना देना सबसे बड़ी भूल रही है। आज अनेक विद्यार्थी विश्लेषणात्मक सोच, नवाचार, कला, खेल, सामाजिक नेतृत्व, संवाद कौशल और व्यावहारिक दक्षताओं में उत्कृष्ट होते हुए भी केवल इसलिए पीछे रह जाते हैं क्योंकि वे एक विशेष प्रकार की प्रतियोगी परीक्षा के अनुरूप स्वयं को ढाल नहीं पाते। दूसरी ओर रटने की संस्कृति और अनुमान आधारित तैयारी को बढ़ावा देने वाली व्यवस्था कई बार वास्तविक प्रतिभा की अपेक्षा परीक्षा तकनीक में दक्ष विद्यार्थियों को आगे ले आती है। तथ्य और मत के बीच अंतर स्पष्ट रखना आवश्यक है। तथ्य यह है कि अधिकांश प्रतिष्ठित संस्थानों में प्रवेश अभी भी प्रतियोगी परीक्षाओं पर आधारित है। मत यह है कि भविष्य में इन परीक्षाओं के साथ बहुआयामी मूल्यांकन को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए ताकि चयन अधिक न्यायपूर्ण बन सके।

कोचिंग उद्योग का विस्तार भी इसी असंतुलित व्यवस्था का परिणाम है। जब विद्यालयों की शिक्षा प्रवेश परीक्षाओं की आवश्यकताओं से अलग दिखाई देने लगती है, तब अभिभावक अतिरिक्त संसाधनों की ओर स्वाभाविक रूप से आकर्षित होते हैं। परिणामस्वरूप शिक्षा एक सामाजिक अधिकार से अधिक आर्थिक क्षमता का विषय बन जाती है। छोटे नगरों और ग्रामीण क्षेत्रों के अनेक परिवार अपने बच्चों की तैयारी के लिए ऋण लेते हैं, बचत समाप्त कर देते हैं अथवा अन्य आवश्यकताओं में कटौती करते हैं। महानगरों के अतिरिक्त कोटा, प्रयागराज, पटना, सीकर, हैदराबाद, दिल्ली और अन्य शिक्षा केंद्रों में विकसित कोचिंग संस्कृति ने अवसर तो दिए हैं, किंतु साथ ही मानसिक दबाव और सामाजिक असमानता को भी बढ़ाया है। यह कहना उचित नहीं

होगा कि प्रत्येक कोचिंग संस्थान नकारात्मक भूमिका निभाता है, क्योंकि अनेक संस्थान गुणवत्तापूर्ण मार्गदर्शन भी उपलब्ध कराते हैं। किंतु जब किसी व्यवस्था की सफलता विद्यालयों से अधिक कोचिंग संस्थानों पर निर्भर होने लगे, तब यह शिक्षा तंत्र के लिए गंभीर संकेत माना जाना चाहिए।

विद्यालयों की भूमिका को पुनर्स्थापित करना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। यदि विद्यालयों में प्रयोगशाला आधारित शिक्षण, परियोजना कार्य, भाषा दक्षता, तार्किक चिंतन, अनुसंधान प्रवृत्ति, कला, खेल, सामुदायिक सेवा और डिजिटल साक्षरता को समान महत्व दिया जाए तो विद्यार्थियों का समग्र विकास संभव होगा। प्रवेश प्रक्रिया में विद्यालयी उपलब्धियों, सत्यापित परियोजनाओं, सामाजिक सहभागिता, इंटर्नशिप, शोध अभिरुचि तथा साक्षात्कार जैसे तत्वों का संतुलित समावेश किया जा सकता है। इससे केवल स्मरण शक्ति नहीं, बल्कि समस्या समाधान क्षमता, नेतृत्व, सहयोग, नैतिक उत्तरदायित्व और व्यावहारिक समझ का भी मूल्यांकन संभव होगा। हालांकि इसके साथ पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए स्पष्ट मानदंड, प्रशिक्षित मूल्यांकनकर्ता और डिजिटल सत्यापन प्रणाली अनिवार्य होगी।

परीक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता भी समान रूप से महत्वपूर्ण है। प्रश्नपत्र लीक की घटनाओं ने विद्यार्थियों के विश्वास को गहरा आघात पहुँचाया है। ऐसी घटनाएँ केवल प्रशासनिक विफलता नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय के सिद्धांत पर भी प्रश्नचिह्न लगाती हैं। सुरक्षित डिजिटल प्रश्नपत्र प्रबंधन, बहुस्तरीय एन्क्रिप्शन, सीमित अभिगम, परीक्षा केंद्रों का नियमित ऑडिट, स्वतंत्र निगरानी तंत्र, तकनीकी सुरक्षा, उत्तर पुस्तिकाओं का वैज्ञानिक विश्लेषण तथा दोषियों के विरुद्ध त्वरित दंडात्मक कार्रवाई जैसी व्यवस्थाएँ अब विकल्प नहीं बल्कि आवश्यकता बन चुकी हैं। साथ ही परीक्षा कैलेंडर को पूरे वर्ष में संतुलित ढंग से वितरित किया जाए ताकि किसी एक परीक्षा पर अत्यधिक दबाव न बने और विद्यार्थियों को तैयारी के लिए पर्याप्त अवसर मिल सकें।

राष्ट्रीय स्तर की एक समान परीक्षा व्यवस्था पर भी गंभीर विमर्श आवश्यक है। विशाल भौगोलिक, भाषाई, सांस्कृतिक और सामाजिक विविधता वाले देश में एक ही मॉडल सभी विद्यार्थियों के लिए समान रूप से उपयुक्त हो, यह मान लेना व्यावहारिक नहीं है। विभिन्न विषयों की प्रकृति भी अलग होती है। चिकित्सा, अभियांत्रिकी, विधि, कला, सामाजिक विज्ञान और डिजाइन जैसे क्षेत्रों के लिए समान मूल्यांकन पद्धति अपेक्षित परिणाम नहीं दे सकती। इसलिए राष्ट्रीय मानकों के साथ संस्थानों को सीमित शैक्षणिक स्वायत्तता देना अधिक संतुलित विकल्प हो सकता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और संबंधित व्यावसायिक निकायों के दिशा-निर्देशों के भीतर संस्थानों को अपने विषयानुकूल अतिरिक्त मूल्यांकन विकसित करने की अनुमति मिलने से चयन प्रक्रिया अधिक सार्थक बन सकती है।

अभिभावकों की भूमिका भी इस परिवर्तन में अत्यंत महत्वपूर्ण है। अनेक बार सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण कुछ चुनिंदा व्यवसायों को ही सफलता का पर्याय मान लिया जाता है। इससे विद्यार्थी अपनी वास्तविक रुचि और क्षमता की उपेक्षा करने लगते हैं। व्यवस्थित करियर परामर्श, मनोवैज्ञानिक सहयोग, योग्यता परीक्षण और उद्योग जगत से संवाद की व्यवस्था विद्यालय स्तर से ही विकसित की जानी चाहिए। यदि कोई विद्यार्थी कृषि प्रौद्योगिकी, पर्यावरण विज्ञान, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, शिक्षण, डिजाइन, लोक प्रशासन, उद्यमिता, साहित्य, खेल या संगीत में उत्कृष्ट भविष्य देखता है, तो उसे उसी दिशा में आगे बढ़ने का सम्मानजनक अवसर मिलना चाहिए। विविध करियर विकल्पों की सामाजिक स्वीकृति बढ़े बिना परीक्षा का दबाव कम नहीं होगा।

नई शिक्षा नीति ने बहुविषयक शिक्षा, कौशल विकास और लचीले शिक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए हैं। किंतु किसी भी नीति की वास्तविक सफलता उसके प्रभावी क्रियान्वयन पर निर्भर करती है। पर्याप्त वित्तीय निवेश, प्रशिक्षित शिक्षक, आधुनिक प्रयोगशालाएँ, स्थानीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री, डिजिटल अवसंरचना और ग्रामीण क्षेत्रों तक समान संसाधनों की उपलब्धता के बिना अपेक्षित परिवर्तन संभव नहीं होगा। शिक्षा सुधार को केवल नीति दस्तावेजों तक सीमित रखने के बजाय उसे विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के दैनिक शैक्षणिक जीवन का हिस्सा बनाना होगा।

अंततः शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि उत्तरदायी, संवेदनशील, वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले और लोकतांत्रिक मूल्यों से युक्त नागरिक तैयार करना है। जब व्यवस्था विद्यार्थियों को भय, ऋण, तनाव और निरंतर तुलना से मुक्त कर उनकी जिज्ञासा, रचनात्मकता और मानवीय गरिमा को केंद्र में रखेगी, तभी वास्तविक परिवर्तन दिखाई देगा। तथ्य यह है कि प्रतियोगिता आधुनिक समाज का हिस्सा रहेगी। किंतु यह मत अधिक दूरदर्शी प्रतीत होता है कि प्रतियोगिता का आधार केवल अंक नहीं, बल्कि क्षमता, चरित्र, कौशल, नवाचार और सामाजिक उत्तरदायित्व होना चाहिए। भारत यदि ज्ञान आधारित वैश्विक नेतृत्व का लक्ष्य प्राप्त करना चाहता है, तो उसे ऐसी शिक्षा व्यवस्था का निर्माण करना होगा जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी स्वयं को केवल परीक्षार्थी नहीं, बल्कि संभावनाओं से परिपूर्ण नागरिक के रूप में देख सके। तभी शिक्षा सचमुच मानवीय बनेगी और राष्ट्र की प्रगति का सबसे विश्वसनीय आधार भी।

गले लगाना या लगना -मानो वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगम

इरा त्रिपाठी
वाराणसी

आज अचानक मध्य अस्सी का वो समय मेरे मन मस्तिष्क मे याद आ गया जब हम सब अपने रिश्तेदारियों मे जाया करते थे और पहुंचने और वापस लौटते समय लोगों के आपस मे गले लगाते आँखों से आँसू बहाते और प्रेम भावना व्यक्त करते देखते तो बहुत ही सामान्य सा लगता था पर आज जब एक मानो सामाजिक परामर्श दाता के दृष्टिकोण से देखते है तो बहुत सारे पहलू नजर आते है। कभी-कभी जीवन की सबसे बड़ी ताकत किसी शब्द में नहीं, बल्कि दो बाहों के सच्चे आलिंगन में छिपी होती है, गले लगाना केवल एक शारीरिक क्रिया नहीं, यह दिल से दिल को जोडने वाला पुल है। यह हमें याद दिलाता है कि हम अकेले नहीं हैं, कि हमारे पास कोई है जो हमें समझता है, स्वीकार करता हे और हमारे साथ खड़ा है। मानव जीवन में स्पर्श केवल शारीरिक क्रिया नहीं बलकि भावनात्मक और मानसिक जुड़ाव का माध्यम है। "गले लगना (आलिंगन) एक ऐसी सहज क्रिया है, जो बिना शब्दों के गहरी भावनाएँ व्यक्त कर देती है- प्रेम, अपनापन, सहानुभूति, क्षमा, या सुरक्षा का भाव मनोविज्ञान के दृष्टिकोण से यह क्रिया हमारे मस्तिष्क, हामान्न और मानंसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव डालती है।

विज्ञान भी कहता हैं, अपनापन ज़रूरी हैं जीवन के लिए जब हम किसी को गले लगाते है तो शरीर में ऑक्सीटोसिन नामक हार्मोन का स्त्रव बढ़ता है , जिसे "हैप्पी हार्मोन" भीं कहा जाता है। यह हार्मोन तनाव को कम करता है, रक्तचाप को नियंत्रित करता है और व्यकित में सुरक्षा व विश्वास की भावना जगाता है।इसके अलावा, गले लगने से कॉर्टिसोल (तनाव हार्मोन) का स्तर घटता है, जिससे चिंता और अवसाद के लक्षण कम हो सकते हैं।

● मनोवेज्ञानिक विज्ञान भी कहता हैं, अपनापन ज़रूरी हैं जीवन के लिए जब हम किसी को गले लगाते है तो शरीर में ऑक्सीटोसिन नामक हामोंन का साव बदता हे, जिसे "हैप्पी हर्मन" भीं कहा जाता है। यह हार्मोन तनाव को कम करता है, रक्तचाप को नियंत्रित करता है और व्यकित मे सुरक्षा व विश्वास की भावना जगाता है।इसके अलावा,

● गले लगने से कॉर्टिसोल (तनाव हामोन) का स्तर घटता है, जिससे चिंता और अवसाद के लक्षण कम हो सकते हैं

● भावनात्मक प्रभाव, संबंधों में मजबूतीः गले लगना रिश्तों में भावनात्मक दूरी को घटाता है। दूरी मिटानाः गले लगना रिश्तों में जमी बर्फ को पिघला देता है।

● सहानुभूति का संचारः यह बिना बोले ही "मैं तुम्हारे साथ हूँ" का संदेश देता है।

● क्षमा और मेल-मिलापः विवाद के बाद गले लगना मनोवेज्ञानिक रूप से तनाव को पिघलाने का काम करता है सांस्क्रातक और सामाजिक दृष्टिकोण तो कुछ में यह केवल घनिष्ठ संबंधों तक सीमित है। भारतीय संदर्थ में, त्योहारों, विदाई समय स्वागत और क्षमा-याचना के समय गले लगना एक भावनात्मक परंपरा है।

● हर संस्कृति में गले लगाने का अर्थं

और तरीका अलग हो सकता है। कुछ समाजों में यह औपचारिक अभिवादन है, यह परंपरा हमें सिखाती है कि अपनापन दिखाने में कभी संकोच नहीं करना चाहिए।

● चिकित्सकीय और थेरेप्यूटिक उपयोग मनाचाकेत्सा में "हग थेरेपी" का प्रयोग किया जाता है, जिसमें रोगी को सुरक्षित और सहानुभूतिपूर्ण आलिंगन देकर मानसिक तनाव कम करने में मदद की जाती है। यह विशेष रूप से बच्चों, बुजुर्गों और आघात झेल चुके व्यक्तियों के लिए लाभकारी हे गले लगना या लगाना एक छोटा कदम, बड़ा असर जेसा होता है, गले लगाना हमें यह सिखाता है कि प्यार और अपनापन बॉटने के लिए कोईं बहुत बड़े प्रयास नहं करने होते , बल्कि छोटे-छोटे सच्चे इशारे ही काफी हैं। तो आज, किसी अपने को गले लगाइए- जीवन में नईं रोशनी भर दे।

शायद आपका यह कदम उनको "गले लगाना" केवल एक शारीरिक क्रिया नहीं, बल्कि एक गहरी मनोवेज्ञानिक प्रक्रिया है, जो हमारे मास्तष्क, भावनाआं और सामााजक सबधा का सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। यह हमें याद दिलाता हे कि कभी-कभी शब्दों से अधिक असरदार एक सच्चा आलिंगन हो सकता है।

तीन अलग-अलग शुरुआत के उदाहरण निम्न है-

- भावनात्मक (ईमोशनल) शरुआत "कभी-कभी जीवन की सबसे बड़ी सांत्वना एक शब्द में नहीं आलिंगन ही काफी होता है।"
- जिसे हर दिल समता है, चाहे वह किसी भी देश, धर्म या उम्र का हो।"कभी कभी किसी की घटीं हुई हिम्मत को जोड़ने के लिए बस एक शब्द में नहीं बल्कि दो बाहों के घेरे में मिलती है। गले लगाना वह भाषा है, जिसे हर दिल समझता है चाहे वह किसी भी देश, धर्म, जाति, या उम्र का हो, दार्शनिक (फिलॉसॉफिकल) शुरुआत और जुडाव का सबसे सरल, सबसे सशक्त प्रतीक है- गले लगाना। यह हमें याद दिलाता हे कि हम अकेले नहीं हैं।" मनुष्य के आस्तित्व का सार जुडाव में है।
- वैज्ञानिक (फेक्चुअल) शुरुआत "अमेरिकी मनोवेज्ञानिकों के शोध के अनुसार, दिन में कम से कम चार बार गले लगना मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है। यह केवल भावनात्मक नहीं, ब्लकि जैविक रासायनिक प्रक्रिया है जो हमारे शरीर में सकारात्मक बदलाव लाती हैं
- सांस्कृतिक और सामाजिक प्रेरणा हमारी भारतीय संस्कृति में गले लगाना त्योहारों, स्वागत, विदाई और क्षमा-याचना का प्रतीक है। यह परंपरा हमें सिखाती है कि अपनापन दिखाने में कभी संकोच नहीं करना चाहिए !
- थेरेपी और जीवन में बदलाव, आज मानसिक स्वास्थ्य सुधारने का एक समान्य तरीका है। यह बच्चों, बुजुर्गों और आघात झेल चुके लोगों के लिए उम्मीद की किरण बन सकता है। चुनौती देने वाली शुरुआत "क्या आपने आज किसी को गले लगाया? अगर नहीं, तो शायद आप किसी की मुस्कान का कारण बनने का मौका खो रहे हैं।"
- आशा जगाने वाली शुरूवात आलिंगन में इतनी ताकत है कि वह ऑस रोक सकता है, डर मिटा सकता हे और दिल में उम्मीद जगा सकता है।"

आप भी किसी का दिन बदल सकते हैं- बस एक सच्चे आलिंगन "एक्शन प्लान" मे भी जोड़ सकते है - जिसमें बताया जाए कि रोज़मर्रा की जिंदगी में गले लगाने की आदत कैसे विकसित करें, ताकि यह केवल विचार न रहकर जीवनशैली बन जाए,हम इसे अपने "एक्शन प्लान" भी जोड़ सकता हूँ- जिसमें बताया जाएगा कि रोज़मर्रा की ज़िंदगी में गले लगाने की आदत कैसे विकसित करें, वैज्ञानिक प्रमाण""।

गले लगाने या लगने से तनाव कम होता है और cortisol का स्तर घटाता है जिसमें मानसिक शांति प्राप्त होता है तथा हार्मोनल का संतुलन बढ़ाता है जैसे oxytocin, Dopamine, Endorphins इत्यादि खुशी और जुड़ाव बढ़ कर ह्रदय स्वास्थ्य को बढ़ावा देती हैं, रक्तचाप और ह्रदय गति सामान्य करके dil ke स्वास्थ्य को बढ़ाता है

2025 हग्गिंग के अध्ययन अनुसार गले लगाना ह्रदय स्वास्थ्य को बढ़वा देती है, रक्तचाप व ह्रदय रोग के जोखिम को घटाता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है जिससे संक्रमण का खतरा कम होता है। 2025 hugging study के अनुसार गले लगने से अवसाद व चिंता कम होती है जिससे मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा मिलता है।

तो आज से ही गले लगना या लगाना या यूँ कहें कि जादू झप्पी एक दूसरे को देने की आदत डाले।

संवेदनशील प्राणी "हाथी" के साथ मजाक एवं क्रूरता महंगी पड़ेगी

डॉ. बी.आर. नलवाया
मन्दसौर (म.प्र.)

एक हाथी को लोग मूर्ख नहीं बना सकते, भले ही वह पालतू हो। कैद में रहने वाले सबसे बुद्धिमान जानवर में हाथी प्रमुख है। हाथी मनुष्य की गंध को 3000 फीट दूर से भी महसूस कर लेता है। हाथी जब मद में आता है तो उसे संभालना बहुत कठिन हो जाता है। कुछ हाथियों को संभालने के मामले में 64 वर्ष की उम्र में भी डॉक्टर कुशलकुंवर शर्मा का विश्व कीर्तिमान स्थापित है। वह कहते हैं कि हाथी को संभालना है ,तो उसके मुड़ को भांपना बहुत जरूरी है।

अति प्राचीन काल से हमारी यह धारणा रही है, कि संसार में भावनाएं सिर्फ मनुष्य में ही पाई जाती है, किंतु बाद में पता चला की भावनाएं केवल इंसानों में ही नहीं बल्कि जानवरों में भी होती है। फिर जैसे-जैसे विज्ञान ने विकास किया एवं पेड़ पौधों पर अध्ययन किए गए तो पेड़ पौधों में भी भावनाओं और और उनमें जीव का पाया जाना स्पष्ट हो गया। अब यह तयशुदा बात है, कि भावनाएं अथवा संवेदनशीलता सभी प्राणियों में पाई जाती है।

आपने भी कई बार अपने आसपास उपस्थित जानवरों में भावनाओं को महसूस किया होगा, कभी अपने पालतू जानवर को अपनों से बिछड़ने पर रोते हुए देखा होगा। जानवरों में कौन कितना अधिक भावुक है इसकी व्याख्या कुछ वर्षों पूर्व अमेरिका की विलियम एंड मैरी कॉलेज की मानव विज्ञान की प्रोफेसर बारबरा किंग ने अपनी एक पुस्तक "हाउ एनिमल्स ग्रीव" में की है। अपनी इस पुस्तक में उन्होंने जानवरों की अनेक प्रजातियों पर किए गए अध्ययन को लोगों के साथ शेयर किया है।

आज 12 अगस्त हाथी दिवस पर हाथी के चरित्र पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है, उनकी व्याख्या बताती है, कि दुख व्यक्त करने में हाथी सबसे अधिक भावुक जानवर है। किताब में उन्होंने जानवरों की अनेक प्रजातियों के द्वारा अपनों से बिछड़ने के शौक को व्यक्त करने के तरीकों का वर्णन किया है, जिसमें हाथी द्वारा भावनाएं प्रकट करने का तरीका अचरज भरा था। उन्होंने बताया कि हाथी के शव को रेत में छोड़ दिए जाने पर पाया गया कि हाथियों के पांच अलग-अलग परिवार उस हाथी के शव के पास आए और सभी ने अलग अलग तरीके से अपनी भावनाएं व्यक्त की। किसी ने शव के चारों ओर चक्कर लगाकर दुख व्यक्त किया तो किसी ने चुपचाप उसके पास खड़े रहकर तो किसी ने अन्य तरीके से सूंड उठाकर अपनी अपनी संवेदना प्रकट की। बारबरा का कहना है कि वे यह नहीं मानती कि जानवरों का शोक प्रकट करने का तरीका इंसानों की तरह का है किंतु कुछ प्रजातियों में दुख व्यक्त करने की भावनाएं वास्तविक होती है।

राष्ट्रपति द्रोपति मुर्मू ने गज उत्सव 2023 के उद्घाटन के अवसर पर असम स्थित काजीरंगा नेशनल पार्क में एक हाथी को

पुचकारा और उसे केला खिलाया। उन्होंने बताया कि मानव हाथी संघर्ष का गहन विश्लेषण किया जाए , तो स्पष्ट होता है कि हाथियों के प्राकृतिक गलियारों में अवरोध है, इसके लिए मनुष्य जिम्मेदार है। उन्होंने कहा कि लोगों को हाथियों के साथ दया का व्यवहार करना चाहिए। हाथी हमारा राष्ट्रीय विरासत पशु है. l इसकी रक्षा करके हम अपनी राष्ट्रीय विरासत की रक्षा कर सकते हैं। हाथी झुंड में रहते हैं, और यदि किसी एक हाथी पर भी मुसीबत आती है ,तो दूसरे उसकी मदद करते हैं। मनुष्यों को इससे सीख लेनी चाहिए।

विगत वर्षों में सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हुआ जिसमें जंगल में एक हाथी धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है, एवं उसके आगे चल रही एक विदेशी लड़की अपने एक हाथ में केले का एक पूरा डंकल और दूसरे हाथ में केला लेकर हाथी को खिलाने की कोशिश कर रही थी। लड़की केला खिलाने के लिए हाथी को आगे बुला रही थी, उसका यह वीडियो कोई मोबाइल कैमरे में शूट कर रहा था। वह लड़की हाथी को अकेला दिखा कर बार-बार आगे बुलाने के लिए प्रेरित तो करती रही, परंतु केला नहीं खिलाया। लड़की की इस हरकत से हाथी क्रोधित हो गया और उसने अपनी सूंड से लड़की पर हमला करके लड़की को थोड़ी दूर गिरा दिया और उसे चोट भी आई।

स्पष्ट है कि एक हाथी को लोग मूर्ख नहीं बना सकते, भले ही वह पालतू हो। कैद में रहने वाले सबसे बुद्धिमान जानवर में हाथी प्रमुख है। हाथी मनुष्य की गंध को 3000 फीट दूर से भी महसूस कर लेता है। हाथी जब मद में आता है तो उसे संभालना बहुत कठिन हो जाता है। कुछ हाथियों को संभालने के मामले में 64 वर्ष की उम्र में भी डॉक्टर कुशलकुंवर शर्मा का विश्व कीर्तिमान स्थापित है। वह कहते हैं कि हाथी को संभालना है ,तो उसके मुड़ को भांपना बहुत जरूरी है। हाथी कोई

हाथी भी उन प्रजातियों की सूची में सम्मिलित है जिनके विलुप्त होने का खतरा है। दक्षिण एशिया में अभी करीब 48000 हाथी है ,और इनमें से 27000 हाथी अकेले हमारे देश में है। इतनी बड़ी तादाद में हाथी हमारे पास है। लेकिन हमारे संरक्षित वन कम हो रहे हैं, मानव जाति की संख्या बढ़ रही है, वहीं जंगल सिकुड़ते जा रहे हैं।

मशीन नहीं है, बल्कि एक जीव है। आप उसके साथ जैसा पेश आएंगे बदले में वह भी वैसा ही बर्ताव करेगा। हाथी बहुत संवेदनशील जीव है, जो आप की क्रिया को देखकर सब कुछ भांप जाता है।

हाथी भी उन प्रजातियों की सूची में सम्मिलित है जिनके विलुप्त होने का खतरा है। दक्षिण एशिया में अभी करीब 48000 हाथी है ,और इनमें से 27000 हाथी अकेले हमारे देश में है। इतनी बड़ी तादाद में हाथी हमारे पास है। लेकिन हमारे संरक्षित वन कम हो रहे हैं, मानव जाति की संख्या बढ़ रही है, वहीं जंगल सिकुड़ते जा रहे हैं।

हाथी झुंड में रहते हैं एवं हाथीयों की टोली का नेतृत्व नर हाथी नहीं बल्कि मादा हथिनी करती है। हाथी परिवार में सत्ता नर कि नहीं बल्कि मादा की होती है। वहीं अपने परिवार की मुखिया होती है। हाथी लंबी दूरी पर मौजूद अपने झुंड के हाथी और दूसरे झुंडों के हाथियों से संपर्क रखते हैं। हाथी कम फ्रीक्वेंसी वाली आवाज निकालते हैं जिसे इंसान सुन नहीं पाते। जंगली हाथी की औसत उम्र 45 से 60 वर्ष व पालतू हाथियों की औसत उम्र 70 से 80 वर्ष की होती है। हाथी की सूंड में 40000 मांसपेशियां होती है। सूंड की नोक से हाथी सुई भी उठा सकता है। हाथी की सूंड के विविध उपयोग होते हैं जिसमें सूँघना,पानी पीना, भोजन ग्रहण करना, नहाना आदि शामिल है।

हाथी एक ऐसा जानवर है जो कभी कूद नहीं सकता, परंतु हाथी को जल क्रीड़ा में बहुत आनंद आता है। हाथी एक विशुद्ध शाकाहारी प्राणी है और मांसाहार से सदैव दूर रहता है। वृक्षों की छाल, फल, गन्ना हाथी को विशेष प्रिय होता है और नमक हाथी का पसंदीदा भोजन कहा गया है। हाथी एक दिन में 190 लीटर पानी पीता है जो कि उसे जल के किसी भी खुले स्त्रोत से मिल जाता है। हाथी धरती का सबसे विशाल प्राणी है एवं उनकी स्मरण शक्ति भी अन्य जानवरों से काफी अधिक है। अब इंसान को यह समझना आवश्यक है कि हाथी काफी विनम्र एवं शांत स्वभाव वाला एक भोला प्राणी है, यदि मनुष्य इसके साथ क्रूरता करता है, तो उसके परिणाम भी उसे भुगतने पड़ेंगे। आज हम निर्णय करें कि हाथी दिवस पर हाथी के साथ कोई कुरर्ता या मजाक नहीं करेंगे।

ईश्वरीय मानव

जो आदमी इस दुनिया में पेदा होता है उन सबके अन्दर ज्योति दी गयी है। हृदय ईश्वर का अंश या बीज है जिसमें पूरे शक्ति के पुनर्जीवन देने की शक्ति होती है। अन्तस्थ आत्मा मे पूर्ण निष्ठा रख कर हममे से प्रत्येक जगत के बंधन से मुक्त हो सकता है। कोई अंधता या दुष्टता ईश्वर का उपभोग करने में बाधक नहीं है।

तारा दत्त भट्ट

लखनऊ

ईश्वरीय मानव से हमारा अभिप्राय है गौतम बुद्ध एवं ईसामसीह जैसे लोगों से है। उनके नामों से ही द्वैत की अभिव्यक्ति होती है और ज्ञात होता है कि वे मानव स्वरूप में परमात्मा की अभिव्यक्ति हैं। उनका मानवी रूप इस अभिव्यक्ति का अवलम्ब आज है। जरथुस्त्र का असली नाम ''स्पितमा '' था जरथुस्त्र तो उनकी उपाधी है। क्राइस्ट की तरह ही बुद्ध भी मानव स्वरूप में जगतिक सत्य को प्रकट करते हैं। उनके स्वभाव के मानवीय एवं ईश्वरीय पक्षों के बीच क्या सम्बन्ध है, यह प्रश्न उठता है। निरपेक्ष सत्ता सापेक्ष में ही प्रतिबिम्बित होती है। यदि परस्पर प्रतिकूल शब्दावली में कहा जाय तो प्रत्येक अभिव्यक्ति अप्रतिम तथ आंशिक या सापेक्ष रूप से निरपेक्ष होती है। फिर भी यह सत्य है। मनुष्य पूर्ण होने पर दैवी पद प्राप्त करता है, वह स्वतंत्रता, मुक्ति प्राप्त करता है यह मुक्ति आनन्द है यही नित्यता है, यही सत्य है, यही वह निरपेक्ष स्थिति है जिसमें व्यक्तिगत और सामाजिक उपक्रमों का अन्त हो जाता है।

ईश्वरीय मानव सच्चे मानव के पूर्वगामी हैं, जो कुछ एक गौतम या ईसा के लिए संभव है वह प्रत्येक मानव प्रणी के लिए संभव है। उनके रूप में मानव स्वभाव अपनी पूणता को पाता है। हमारे जेष्ठ बंधु हैं। वे हमें बताते हैं कि मानवता क्या कर सकती है। गौतम और ईसा ईश्वरीय चेतना के स्वामी बन गये, इससे वे दूसरे मानवों नहीं हो गये। यदि हम यह मान भी लें की ईसा निष्पाप हैं तो इससे उनकी मानवता पर कोई फर्क नहीं पड़ता। पाप मानव प्रकृति का सार तत्व नहीं है। यह उसकी एक विकृती, एक विप्लव है हम साधारण मानवों में ईश्वरीय चेतना धूमिल, दुर्बल और अपूर्णरूप से विकसित होती है। ईसा में वह बड़ी प्रबल है, वहां मूर्ती पूर्ण रूप से जाज्वल्यमान है।

जो आदमी इस दुनिया में पेदा होता है उन सबके अन्दर ज्योति दी गयी है। हृदय ईश्वर का अंश या बीज है जिसमें पूरे शक्ति के पुनर्जीवन देने की शक्ति होती है। अन्तस्थ आत्मा मे पूर्ण निष्ठा रख कर हममे से प्रत्येक जगत के बंधन से मुक्त हो सकता है। कोई अंधता या दुष्टता ईश्वर का उपभोग करने में बाधक नहीं है। जो संत ईश्वरत्व को प्राप्त कर लेता है वह इस तरह आचरण करता है मानो वह ईश्वर का अंग हो। जो लोग ईश्वर के साथ पूर्णेक्य प्राप्त कर लेते हैं वे उसके उनुग्रह से, उसके साथ इतने ही एक रूप हो जाते है जितने ईसा स्वमावतः उसके साथ एक थे। लोहा आग के रूप में बदल जाता है। पर कोई व्यक्ति चाहे कितना ही महान हो, ईश्वर की परिपूर्ण अभिव्यक्त नहीं हो सकता। प्रत्येक व्यक्ति एक विशेष प्रकार की अभिव्यक्ति है और परमात्म सत्ता के एक विशेष गुण को प्रकट करता है। यह कहा जा सकता है कि प्रत्येक मनुष्य अनुपम है और ईश्वर के अंदर एक विशेष, अपरिमित यथार्थता है जो जीवन के अनेक विध मूल्यों में अपने को प्रकट करती रहती है। प्रत्येक व्यक्ति अपना ही प्रमाणिक स्वयं है, आत्मा है, वह अपने पड़ोसी की नकल नहीं है, वह एक वर्ग का उदाहरण मात्र नहीं है। प्रत्येक को अपना मार्ग तय करना है। व्यक्ति जितने ऊँचे होते हैं उनके द्वारा प्रकट होने वाले तत्व भी उतने ही विशेषतापूर्ण होते हैं। हम यह नहीं कह सकते कि ईश्वर में जो है वह सब का सब इस या उस व्यक्ति में प्रकाशित हुआ

है- फिर चाहे वह व्यक्ति ही महान क्यों नहीं हो। सब मानव प्राणी ईश्वर से ही उद्भूत होते हैं और फिर उसी में लौट जाते हैं हम सभी ईश्वर पुत्र हैं। ईसा कहते हैं ''जो भी मेरे स्वर्गस्थ पिता की इच्छा का पालन करता है, वही मेरा बन्धु, बहन, और माता है।'' ईसाई धं्रम एवं इस्लाम दोनों का आरम्भ एक आस्तिक दृष्टिकोण से होता है, किन्तु ईसाई धर्म अपने त्रैन्तपक्ष पर अधिक जोर देता है। ईश्वर अवतार लेता है जगत का उद्धार करता है। जब संतुलन विकृत हो जाता है तब उसे पुनः स्थापित करने के लिए ईश्वरीय तत्व अवतरित होकर अपने को प्रकट करता है। पूर्व एवं पश्चिम दोनों में ईश्वरीय मानवों को ईश्वरावतार मानने के प्रवृत्ति पाई जाती है। राम, बुद्ध एवं ईसा सबको परमात्मा के अवतार रूप में माना जाता है। उदाहरण के लिए राम कथा लें। कवि बाल्मीकि उनके मुख से ही कहलाते हैं कि वे एक मानव, दशरथ के पुत्र हैं।

"आत्मानं मानुष मन्ये रामं दशरथात्मजम्।"

एक मानव जिसने कष्ट एवं वेदना सहन करके ईश्वरीय मर्यादा प्राप्त की किन्तु परम्परा से उन्हें विष्णु का अवतार माना जाता है। रावण का नाना माल्यवान उससे कहता है-

"विष्णुं मन्यामहे रामं मानुषं देहमास्थितम्।"

मेरी समझ में राम विष्णु हैं।

"यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानाम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम।।"

हिन्दू परम्परा मानती है कि जब जब धर्म का ह्रास होता है और अर्धम बढ़ता है तब तब एक महान शिक्षक के रूप में ईश्वरीय दया अपने को व्यक्त करती है। किन्तु आदि-कालिक धर्म सम्प्रदायों में से कितने ही ऐसे थे जिनको इस बात में कोई विश्वास न था कि परमात्मा अथवा प्रथम तत्व का एक अंश, अपवित्र मांस-पुंज में मिश्र होकर (मानव शरीर) अवतीर्ण हो सकता है। इसलीए ईश्वरत्व के जोश में उन्होंने ईसा की मानवता इन्कार किया। दोसेताइपो ने ईसा के

ईश्वरीय मानव की अवधारणा हमें केवल किसी महान व्यक्ति की पूजा करने की प्रेरणा नहीं देती, बल्कि अपने भीतर विद्यमान दिव्य संभावना को पहचानने का संदेश भी देती है। बुद्ध, ईसा, राम अथवा अन्य महान आत्माएँ मानवता से अलग कोई असंभव आदर्श नहीं हैं, बल्कि वे यह दिखाने वाले प्रकाश-स्तंभ हैं

जन्म लेने और उनके आरम्भिक तीस साल के जीवन संबंधी धर्म पुस्तक के अंशों की सत्यता को मानने से इनकार कर दिया। जैसे ईसाई धर्म की शिक्षाओं में ऐतिहासिक क्राइस्ट को दैवी शक्ति सम्पन्न क्राइस्ट में बदल दिया गया वैसे गौतम बुद्ध मानव प्राणि से कुछ अधिक बना दिए और प्रभु एवं उद्धारक के रूप में पूजे जाने लगे। भगवद्गीता की भाँति ही महापान बौद्ध धर्म की भी मान्यता है कि मानव जाति के उद्धार के लिए बुद्ध पृथ्वी पर अवतीर्ण होते हैं। कोई भी अवतार ईश्वरीय हस्तक्षेप से पृथक या एकाकी कार्य के रूप में नहीं माना जा सकता। काल बार्थ का विश्वास है कि ईश्वर एक मनुष्य के बीच कोई प्रत्यक्ष सम्बंध या सातत्य ;ब्वदजपदनमसलद्ध नहीं हैं। संत अथानेसियस की सूक्ति है "ईश्वर ने मानवरूप इसलिए धारण किया कि हम दिव्य बन सकें।" इससे भी ईश्वर और मानव के बीच आलैक्य की ध्वनि निकलती है। अवतार एक ऐसा कार्य है जो सतत जारी है। अथासेसियस कहते हैं "जिन लोगों में पवित्रात्मा का निवास होता है वे केवल इतने से ही देवता-स्वरूप हो जाते हैं।" एक दृष्टि से प्रत्येक अवतार ही अनुपम है। वह अपने संदर्भ में वे जोड़ ही होता है। प्रत्येक अभिव्यक्ति परमात्मा की प्रकृति को प्रतिबिम्बित करती है। माध्यम या मध्यस्थ को जैसे महत्व ईसाई धर्म में प्राप्त है वैसे इस्लाम में नहीं है। एक मुसलमान के लिए सबकुछ अल्लाह में ही केन्द्रित है। ईश्वरी-कृत मानव का विचार ईसाई धर्म का केन्द्रिय तथ्य है। ईसामसीह शक्तिरूप ईश्वर हैं। ईस्लाम में प्रत्येक मनुष्य, केवल मुसलामन होने के कारण, खुद अपना पुरोहित है। वह अल्लाह की तस्वीर है और इस धरती पर उसी का खलीफा है। ईश्वरीय मानवों की अन्तःस्थ एवं ईश्वरीय यथार्थता एक सी होती है। एकहार्ट कहते है ''हमारे पवित्र धर्मग्रन्थ क्राइस्ट के बारे में जो कुछ कहते हैं वह ब समान रूप से प्रत्येक भले एवं ईश्वरीय मानव के बारे में ठीक है।''

अतः ईश्वरीय मानव की अवधारणा हमें केवल किसी महान व्यक्ति की पूजा करने की प्रेरणा नहीं देती, बल्कि अपने भीतर विद्यमान दिव्य संभावना को पहचानने का संदेश भी देती है। बुद्ध, ईसा, राम अथवा अन्य महान आत्माएँ मानवता से अलग कोई असंभव आदर्श नहीं हैं, बल्कि वे यह दिखाने वाले प्रकाश-स्तंभ हैं कि मनुष्य अपनी चेतना, करुणा, सत्य, प्रेम और आत्मानुशासन को विकसित करके किस ऊँचाई तक पहुँच सकता है। उनके जीवन का वास्तविक महत्त्व इसी में है कि वे मनुष्य को उसकी सीमाओं से ऊपर उठने, अपने भीतर के अंधकार को दूर करने और समस्त प्राणियों में एक ही दिव्य सत्ता का अनुभव करने की दिशा दिखाते हैं। इस अर्थ में ईश्वरीय मानव किसी एक धर्म, देश या परंपरा की संपत्ति नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता की साझा आध्यात्मिक विरासत हैंईश्वरीय मानव हमें यह भी सिखाते हैं कि आध्यात्मिकता केवल पूजा-पद्धति नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक उच्चतर दृष्टि है। उनके जीवन में सत्य, करुणा, त्याग और प्रेम केवल विचार नहीं, बल्कि आचरण के रूप में दिखाई देते हैं। वे मनुष्य को बाहरी विभाजनों से ऊपर उठकर अपने भीतर की चेतना को पहचानने का मार्ग दिखाते हैं। उनकी शिक्षाएँ हमें यह विश्वास दिलाती हैं कि प्रत्येक मनुष्य में आत्म-विकास और दिव्यता की अनंत संभावना विद्यमान है।

समय के साथ बदलें पर संस्कार नहीं बदलें

सुषमा त्रिपाठी

इस बदलते हुए समय के साथ चलना और नई सोच को अपनाना बहुत ही जरूरी है, लेकिन अपनी पुरानी जड़ों और संस्कारों को भूल जाना सही नहीं। तरक्की का मतलब अपनी पहचान मिटाना नहीं होता है। आधुनिकता और संस्कारों को भूल जाना सही नहीं होता है। आधुनिकता और संस्कारों का सही संतुलन ही इंसान को बेहतर बनाता है।

आधुनिकीकरण और संस्कार

समय की मांग

दुनिया तेजी से बदल रही है। इसके नई तकनीक और विचारों को अपनाना चाहिए।

संस्कारों का महत्व

हमारे जीवन में संस्कारों का बहुत ही ज्यादा महत्व होता है। हमारे संस्कार ही सही और गलत में फर्क दिखाते हैं।

पहचान का संकट

सिर्फ आधुनिक दिखने के चक्कर में लोग अपनी मूल संस्कृति को ही भूल जाते हैं और भूल जा रहे हैं।

संतुलन

नए दौर में आगे बढ़ना चाहिए, लेकिन अपनी संस्कृति और मूल्यों को मजबूत बनाए रखना चाहिए। अपना तथा अपने रिश्तों को मजबूत रखना बहुत जरूरी है। जब हमारे रिश्ते संतुलित रहेंगे तो हर अंतिम निर्णय लेने में सफल होंगे, क्योंकि यही हमें हर क्षेत्र में सफलता दिलाएगा।

संतुलन कैसे बनाएँ?

सोच आधुनिक होना चाहिए

रूढ़िवादिता को छोड़ देना चाहिए लेकिन बड़ों का आदर करना कभी भी नहीं भूलना चाहिए। अपनी सोच को हमेशा सकारात्मक रखना चाहिए।

खान-पान और पहनावा

अपने खान-पान का विरोध नहीं करना चाहिए। अपनी सुविधा के अनुसार कपड़े भी पहनना चाहिए और सादगी बनाए रखना चाहिए।

नई पीढ़ी को सीख देनी चाहिए

बच्चों को तकनीकी के साथ-साथ अपने मूल्यों और संस्कारों के बारे में भी जानकारी देनी चाहिए।

बदलते समय के साथ चलना और संस्कारों का संरक्षण

परिवर्तन तो संसार का नियम है। समय के साथ बदलाव जो समाज, राष्ट्र या व्यक्ति खुद को नहीं बदलता, वह इतिहास के पन्नों में खो जाता है। आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धि (एआई) और तीव्र विकास का युग है। इस दौर में कदम से कदम मिलाकर चलना हमारी विवशता भी है और आवश्यकता भी। परंतु इस विकास

यात्रा में सबसे बड़ा संकट तब होता है जब हम आधुनिक दिखने की चाह में अपने मूल संस्कारों, नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक पहचान की बलि चढ़ा दिया जाता है।

जबकि हमें अपने-अपने नैतिक संस्कारों का ख्याल रखते हुए बड़ों का पालन करते रहना चाहिए। हमारे बुजुर्ग हमें जो सीख देते हैं हमें उनका अनुकरण करना चाहिए। उनके बताए हुए रास्ते पर हमेशा तत्पर चलते रहना चाहिए। अपने संस्कारों को कभी भी अनसुना या अनदेखा नहीं करना चाहिए।

बदलते समय की आवश्यकता क्यों?

राज्य के साथ चलना रूढ़िवादिता को छोड़ता है।

अंधविश्वास से मुक्ति

आधुनिक शिक्षा हमें तार्किक बनाती है और कुप्रथाओं को खत्म करती है।

वैज्ञानिक बदलाव

नई तकनीक और ज्ञान को सीखकर ही युवा विश्व पटल पर भारत का नाम रोशन कर रहे हैं।

समानता और स्वतंत्रता

बदलते समय में महिलाओं को आगे बढ़कर निर्णय लेने और समाज में बराबरी का हक दिलाने में मदद दी है। आज के युवा में नारी शक्ति के प्रति जागरूकता देखने को मिलती है, जो कि समानता और स्वतंत्रता की पक्षधर है।

संस्कारःमानव जीवन की आधारशिला

संस्कार कोई बंधन नहीं है, बल्कि ये हमारे भीतर की वह सात्विक शक्ति है जो हमें पशु से मनुष्य होने का ज्ञान देती है। संस्कार से इंसान बहुत कुछ हासिल कर सकता है। एक अच्छे संस्कार से वह मनुष्य एक-दूसरे के दिलों पर भी राज करते हैं। क्योंकि संस्कार ही मानव जीवन की आधारशिला है।

चरित्र निर्माण

संस्कार व्यक्ति को ईमानदारी, करुणा और धैर्य सिखाते हैं।

मानसिक संतुलन

आज के तनावपूर्ण जीवन में जब अहंकार बढ़ रहा है तब हमारे आध्यात्मिक और पारिवारिक संस्कार ही हमें रोकने में मदद करते हैं। एक संस्कारी इंसान परिस्थितियों में भी नियंत्रण कर सकता है, जैसे बना रहता है।

बहुसांस्कृतिक कुंदनकथा

'अतिरिक्त देवो भव' और समानता की भावना हमारे संस्कारों की देन है, जो पूरे विश्व को एक परिवार मानती है।

आधुनिकता और अंधानुकरण का अंतर

उपरोक्त लोग आधुनिक होने और पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण में भ्रमित हो जाते हैं।

आधुनिकता विचार से होती है, पहनावे से नहीं

खुले और प्रगतिशील विचारों को अपनाना आधुनिकता है। किसी की जीवनशैली की बिना सोचे-समझे नकल करना केवल दिखावा है।

भाषा का आधार

अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषाएँ सीखना काफी जरूरी है, लेकिन अपनी मातृभाषा हिंदी या क्षेत्रीय भाषाओं को हीन भावना से देखना मानसिक गुलामी का प्रतीक है।

पारिवारिक विघटन

आधुनिक जीवन शैली की आड़ में बुजुर्गों को पिता को अकेला छोड़ देना या "ओल्ड एज होम" भेज देना संस्कारों का पतन है। जब माँ-बाप से बड़ा पतन है, ऐसे पारिवारिक विघटन सही नहीं होता है। जबकि जब माँ-बाप की उम्र हो तो हमें उनका जन्म लेकर पालन-पोषण करने के लिए उनका कर्तव्य है। भले ही हमें नौकरी और पालन-पोषण करना हमारा कर्तव्य है। बेशक हमें उनके आधार और पालन-पोषण करना हमारा कर्तव्य है।

संतान की तरह बनना चाहिए जो आज़ादों की ऊँचाइयों को छूती है, लेकिन अपनी जड़ों को मजबूत रखती है। यदि वृक्ष और संस्कार पर जमीन पर खड़े व्यक्ति के दृष्टिकोण में रहती है। यदि वह और (संस्कार) टूट जाए तो पतन का नष्ट होना तय है।

पारिवारिक भूमिका

परिवार के प्रत्येक सदस्य द्वारा अपने कर्तव्यों, उत्तरदायित्वों और अपने संबंधों को निभाना। इसमें माता-पिता बच्चों और अन्य सदस्यों की भूमिकाएँ भी शामिल हैं जो मिलकर घर को संभालते हैं और बच्चों को अच्छे संस्कार देते हैं, बच्चों का पालन-पोषण करना, आर्थिक सुरक्षा देना और सही मार्गदर्शन करना। परिवार ही बच्चों को समाज में अपनी पहचान और जिम्मेदारियों को समझाता है। परिवार ही बच्चों को अच्छे संस्कार, अनुशासन और समाज में रहने के तौर-तरीके सिखाता है। इसलिए हमें अपने संस्कारों को कभी भी नहीं भूलना चाहिए। इस चीज का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

किसी साल बरसेगा सावन ..

गीत लिखेगा निश्चित कोई अपनी प्रेम कहानी पर।
किसी साल बरसेगा सावन दिल की धरती धानी पर।।

उर की यह सूनी पगडंडी ,
फिर पदचापों से गूँजेगी।
ऋतु बसंत की आएगी फिर,
कोयल उपवन में कूँजेगी।
मौन अधर पर फिर से कोई,
मृदु मुस्कान ठहर जाएगी।
कोई श्यामल घटा झूमकर,
मन के गगन गहर जाएगी।
कोपल फिर जय गान लिखेंगी,
पतझड़ की पेशानी पर।।

जिस आँगन में साँझ उतरकर,
चुपके- चुपके हार रही है।
जिसकी चौखट रात-रात भर,
बेवस बाट निहार रही है।
दीप जलेगा फिर देहरी पर
नवल आस विश्वास लिए।
मन के सूखे तरु सरसेंगे,
प्रणय मिलन की प्यास लिए।
फिर अहसास विजय पाएँगे,
नम आँखों के पानी पर।।

जो सपने सींचे थे हमने
कभी प्रेम के पावन जल से।
मुरझाए हैं तनिक भले वो
आज समय की चाल प्रबल से।
लेकिन कल फिर नई बहारें,
और नया मधुमास मिलेगा।
ऋतु बदलेगी इस वसुधा पर
नभ में ग्रह विन्यास हिलेगा।
फिर लौटेगी कथा प्रेम की,
अपनी उसी रवानी पर।।

- देवेन्द्र सिंह

कर्म भोग

बढ़ चले कदम मेरे आगे,
अब पीछे नहीं हटेंगे हम।
पकड़ राह जो निकल पड़े,
अब कैसे भला रुकेंगे हम।।
कंकड़ पत्थर कांटे होंगे,
नंगे पैर चलेंगे हम।
जंगल पहाड़ सागर पठार,
सब पीछे छोड़ बढ़ेंगे हम।।
जीवन का अंत मौत है सचमुच,
दो-दो हाथ करेंगे हम।
जीवन की दुश्वारी को भी,
हंस कर सदा सहेंगे हम।।
मैं एक सृजन हूं स्त्रष्टा का,
सहज इस सृष्टि में रहेंगे हम।
मेरा गंतव्य पता है मुझको,
जाकर वही मिटेंगे हम।।
अपने कर्मों से बोया है जो,
फसल वही बस काटेंगे हम।
दोनों हाथों से बांटा है जो,
वही पलट कर पाएंगे हम।।
खुद के भाग्य विधाता खुद हैं,
अपना किया भरेंगे हम।
जो भी मेरी इच्छाएं होंगी,
उनका भोग करेंगे हम।।

- कामेश

उत्तर देगा केवल काल

सारे विश्व में मचा है हाहाकार,
चल रहा है जंग खूंखार,
किसकी होगी जीत,
किसकी होगी हार?
सदीओसे जंग जारी है
मानवी और जंतुओंके बीच,
मानवी तो जन्म से ही
होता है कमजोर,
जबकि जंतु जन्म से ही
होते हैं कठोर,
फिर भी
जान हथेली में लेकर
लडते है दोनो,
कब यह रुकेगा?
कौन किसके आगे झूकेगा?
उसका उत्तर दे सकता है
केवल काल।

- पुष्करराय जोषी

यूपीआई : जेब से दुनिया तक

न जेब में सिक्कों की खनक,
न नोटों की कोई कतार,
मोबाइल उठाया, पिन लगाया,
पल में हुआ कारोबार।
दस वर्ष पहले जो सपना था,
आज वही पहचान बना,
छोटे चायवाले तक पहुँचा,
"डिजिटल" हिंदुस्तान बना।

न बैंक की लंबी लाइन रही,
न ही छुट्टे का झंझट भारी,
एक क्लिक में भुगतान हुआ,
आसाँ हुई दुनिया सारी।
कभी पैसे भेजना मुश्किल था,
अब पल में पहुँच जाता,
दूर खड़ा अपना इंसान भी
मोबाइल से पास हो जाता।

बाजारों से लेकर गलियों तक,
इसकी गूँज सुनाई देती,
भारत की डिजिटल ताकत,
दुनिया को "राह" दिखाती।
तकनीक तब ही महान है,
जब जन-जन के काम आए,
यूपीआई की यह छोटी-सी धारा
देश को आगे ले जाए।

नोट से डिजिटल सफर तक,
बदला भुगतान का संसार,
दस साल की यात्रा ने बढ़ाया
भारत का "गौरव" अपार।
कल जो थी कल्पना कभी,
आज हकीकत बनकर आई,
मोबाइल की लघु स्क्रीन ने
भारत की तस्वीर बदलवाई।
(संदर्भ-यूपीआई दस साल का हुआ।)

– संजय एम तराणेकर

ग़ज़ल

(1)

लग रहा था कि घर में तन्हा हूँ!
मैं तो लेकिन नगर में तन्हा हूँ!

साथ मेरे है काफिला फिर भी!
है तअज्जुब सफर में तन्हा हूँ!

चाहने वाले हैं हजार मगर!
हर किसी की नजर में तन्हा हूँ!

बुझ चुका इक चराग हूँ गोया!
कौन सा मैं असर में तन्हा हूँ!

मिल ही जाएगा हाँ मुकाम मुझे!
गर यकीन हुनर में तन्हा हूँ!

(2)

शराफत का जो गाएगा तराना!
उसे ही काट खाएगा जमाना!

जो खुद डूबे हुए हों उनकी खातिर!
बताओ लाज़िमी क्या डूब जाना!

फकत मांगी मोहब्बत कब कहा था!
सितारे आसमान से तोड़ लाना!

कोई जब थामने वाला न आया!
मेरे कदमों ने छोड़ा लड़खड़ाना!

जरूरत सील देती है लबों को!
बहुत मुश्किल है खुल के मुस्कुराना!

– बलजीत सिंह 'बेनाम'

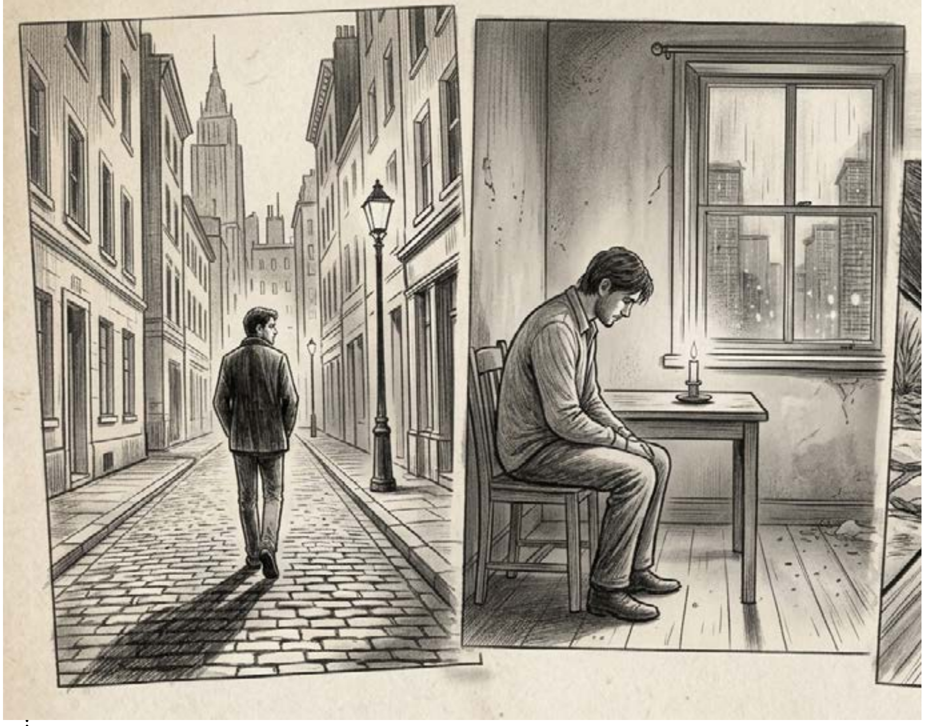

जल कुंभीः स्वास्थ्य का रक्षक

प्रकृतिमेल डेस्क

प्राचीन दुनिया में इसे एक बेहद शक्तिशाली और चमत्कारी औषधि का दर्जा प्राप्त है। जलकुंभी अपने भीतर औषधीय गुणों का एक बहुत बड़ा खजाना समेटे हुए है। हमारे प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों में इस पौधे का बहुत ही विस्तार और गहराई से वर्णन मिलता है। आयुर्वेद के विद्वानों के अनुसार जल कुंभी की तासीर बहुत ठंडी होती है। लेकिन पचने में यह बेहद हल्की मानी गई है। यह वात, पित्त और कफ इन तीनों दोषों को संतुलित करने का अद्भुत काम करती है। इसमें हमारे शरीर के विकास और ऊर्जा के लिए बेहद जरूरी प्रोटीन, वसा और कार्बोहाइड्रेट भी संतुलित मात्रा में पाए जाते हैं। पोटैशियम और फास्फोरस इसमें भरपूर मात्रा में मौजूद होते हैं जो हड्डियों और मांसपेशियों की मजबूती के लिए आवश्यक हैं। विटामिन्स की बात करें तो यह पौधा विटामिन ए और विटामिन सी से पूरी तरह भरपूर होता है। ये दोनों विटामिन हमारी आंखों की रोशनी बढ़ाने और शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करते हैं। वनस्पति विज्ञानियों के गहन शोध के अनुसार इसके पत्तों और तनों में अल्कलॉइड, फ्लेवोनोइड, टैनिन और ग्लाइकोसाइड जैसे बेहद खास रासायनिक तत्व पाए जाते हैं। ये सभी तत्व हमारे शरीर में एक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट की तरह काम करते हैं।

चर्म रोगों या त्वचा से जुड़ी बीमारियों के इलाज में जल कुंभी किसी संजीवनी बूटी से कम नहीं मानी जाती है। इसके ताजे पत्तों में हानिकारक बैक्टीरिया और फंगस को जड़ से खत्म करने की जबरदस्त प्राकृतिक शक्ति होती है। अगर किसी व्यक्ति को त्वचा पर बहुत तेज जलन हो रही हो या लाल चकत्ते उभर आए हों, तो इसके पत्तों का ताजा रस निकालकर उसमें थोड़ा सा शुद्ध नारियल का तेल मिलाकर प्रभावित जगह पर लगाने से तुरंत जादुई ठंडक मिलती है। जल कुंभी में पेट को प्राकृतिक रूप से साफ करने वाले और मल को मुलायम करने वाले हल्के गुण होते हैं। इसके सही सेवन से मल नरम होकर आसानी से बाहर निकल जाता है और आंतों में जमा कई सालों की गंदगी भी साफ हो जाती है। यह पेट के अल्सर या छालों और आंतों की पुरानी सूजन को भी बिना किसी दुष्प्रभाव के ठीक करने में बहुत मददगार साबित होती है।

गंभीर बुखार में भी इस जलीय पौधे का प्रयोग पुराने समय से होता आ रहा है। जब किसी मरीज को बहुत तेज बुखार हो और उसका पूरा शरीर आग की तरह तप रहा हो, तब जल कुंभी का उपयोग शरीर का बढ़ा हुआ तापमान कम करने के लिए किया जाता है। यह पसीने के रास्ते शरीर की सारी फालतू गर्मी को बाहर धकेल देती है। यह हमारी दोनों गुर्दों और मूत्राशय की बहुत अच्छी तरह से अंदरूनी सफाई करता है और पेशाब के प्रवाह को बिल्कुल सही कर देता है, जिससे शरीर के सारे जहरीले और हानिकारक तत्व मूत्र के रास्ते सरलता से बाहर निकल जाते हैं बहुत पुरानी खांसी, दमा और सांस की नली में होने वाली सूजन या सिकुड़न को कम करने में इसके रस का प्रयोग एक बेहतरीन दवा की तरह किया जाता है। गले की बार-बार होने वाली खराश और मुंह के छालों में भी इसका गरारा या उपयोग तुरंत आराम देता है। इसके भीतर मौजूद तत्व दिमागी तनाव को कम करते हैं और नसों को आराम पहुंचाते हैं, जिससे इंसान को एक गहरी मानसिक शांति मिलती है और नींद भी बहुत अच्छी आती है।

जल कुंभी हमें यह महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाती है कि इस पूरी प्रकृति में मौजूद कोई भी चीज कभी बेकार नहीं होती। जरूरत है तो बस उसे सही और वैज्ञानिक नजरिए से देखने की और उसके भीतर छिपे गुणों को पहचानने की। यह हरी-भरी सुंदर जलीय वनस्पति वास्तव में मानव जाति के लिए प्रकृति का एक बेहद अनमोल उपहार है जो हमें आज की कई गंभीर बीमारियों से बचाकर आजीवन सेहतमंद बनाए रखने में एक बहुत ही महत्वपूर्ण और सकारात्मक भूमिका निभा सकती है।

भूमिका और प्रशंसा
क्या बात है! — एक साहित्य की झलक
रचनाकार: सुनील कुमार माथुर, जोधपुर
प्रकृति मेल पत्रिका साहित्य की अद् भूत धरोहर है!
इसकी हर रचना प्रकृति को माध्यम बनाकर लिखी गई है!
प्रकृति मेल
रचनाकार सुनील कुमार माथुर
सरल भाषा और सभी के लिए
सरल भाषा मे लिखी रचनाएं...
मैं भी इसे पढ़ सकती हूँ!
हर वर्ग के पाठकों के लिए पठनीय है!
पर्यावरण और मार्गदर्शक
पर्यावरण , मार्ग दर्शक आलेख...
हमें दिशा दिखाती है, पर्यावरण की ओर!
विविधता और सम्पादकीय
कविताएं , सटीक सम्पादकीय , ध्यान , सूत्र वाक्य...
कविताएं
सटीक सम्पादकीय
ध्यान
सूत्र वाक्य
प्रकृति मेल
कितना कुछ है इसमें!
जीवन और स्वास्थ्य
योग और जीवन , प्राकृतिक सौंदर्य...
योग
प्राकृतिक सौंदर्य
योग
यह हमें स्वास्थ्य और शांति सिखाती है!
गागर में सागर और अशोक मानव
प्रकृति के रंग के साथ गागर में सागर परोसा है ।
प्रकृति मेल
अशोक मानव! सब में, क्या बात है!"
"कॉपीराइट सुरक्षित"

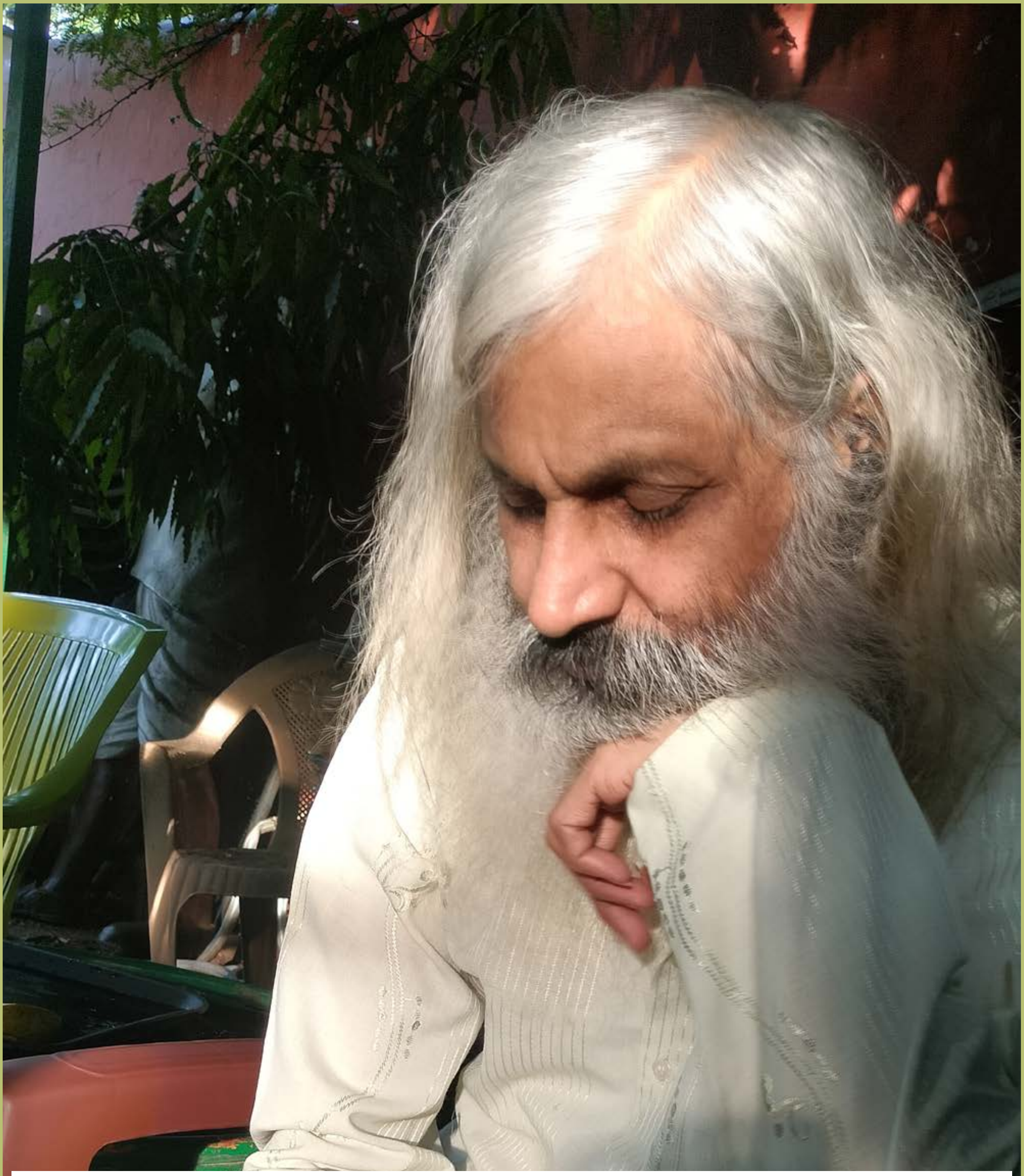

" जीवन को बाह्य ज्ञान से नहीं आन्तरिक मन से पढ़ा जा सकता है जिसका बोध ही स्वज्ञान है। "

- अशोक मानव

स्थापित 1948
77 वर्षों का विश्वास
लाला जुगल किशोर
गोटे वाले
55, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ। संपर्क : 9935329775

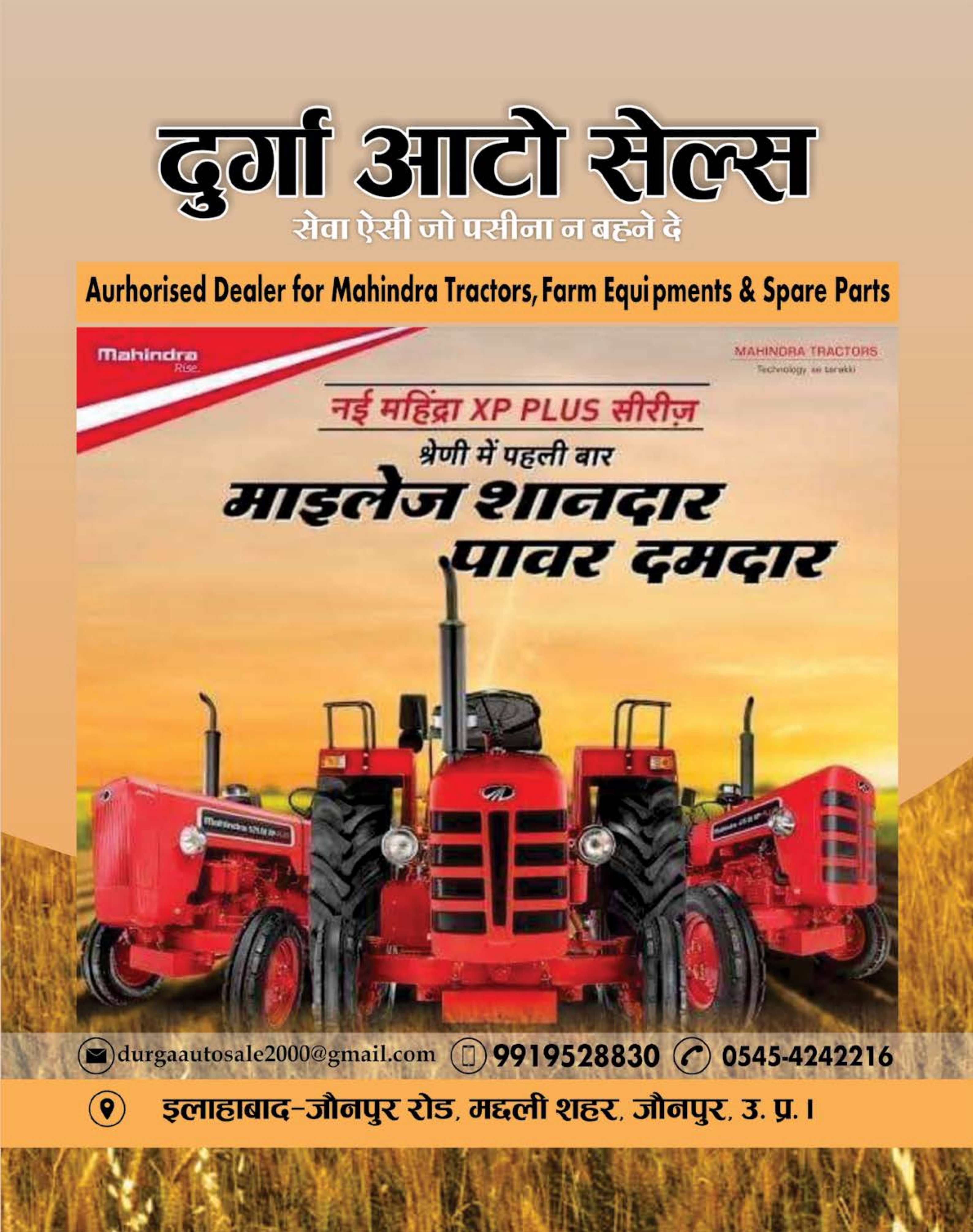

दुर्गा आटो सेल्स
सेवा ऐसी जो पसीना न बहने दे
Aurhorised Dealer for Mahindra Tractors, Farm Equipments & Spare Parts
Mahindra
Rise.
MAHINDRA TRACTORS
Technology se tarakki
नई महिंद्रा XP PLUS सीरीज़
श्रेणी में पहली बार
माइलेज शानदार
पावर दमदार
durgaautosale2000@gmail.com
9919528830
0545-4242216
इलाहाबाद-जौनपुर रोड, मछली शहर, जौनपुर, उ. प्र.।